वित्तीय बाजार का परिचय





एन एस क्यू एफ लेवल-II

विद्यार्थी विवरण पुस्तिका कक्षा-X



केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा केंद्र, 2, कम्युनिटी सेंटर, प्रीत विहार, दिल्ली-110301


BUILDING SKILLS•BUILDING FUTURE•



वित्तीय बाजार का परिचय

एन एस क्यू एफ लेवल-II

विद्यार्थी विवरण पुस्तिका

कक्षा-X

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा केंद्र, 2, कम्युनिटी सेंटर, प्रीत विहार, दिल्ली-110301

वित्तीय बाजार का परिचय

एन एस क्यू एफ लेवल-II

कक्षा-X के लिए विद्यार्थी विवरण पुस्तिका

मूल्य : ₹

प्रथम संस्करण : मई 2016, सी.बी.एस.ई.

प्रतियाँ :

प्रयुक्त कागज : 80 जीएसएम सीबीएसई सफेद मैपलिथो

"प्रस्तुत पुस्तक को या उसके किसी भी भाग को किसी भी व्यक्ति या किसी भी एजेंसी के द्वारा पुन: प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा।"

प्रकाशक : सचिव, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, शिक्षा केंद्र, 2, कम्युनिटी सेंटर, प्रीत विहार, दिल्ली-110301

डिजाइन लेआउट : शील पैकर्स प्रिंटिंग प्रेस, कीर्ति नगर इंडस्ट्रियल एरिया नई दिल्ली-110015

मुद्रक : शील पैकर्स प्रिंटिंग प्रेस, कीर्ति नगर इंडस्ट्रियल एरिया नई दिल्ली-110015

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण [1]प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा
[2]और राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई॰ को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) से "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

भाग 4 क

मूल कर्त्तव्य

51 क. मूल कर्त्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हों, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई उंचाइयों को छू ले;

[1](ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिये शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

---

1. संविधान (छयासीवां संशोधन) अधिनियम, 2002 की धारा 4 द्वारा प्रतिस्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the[2] unity and integrity of the Nation;

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949, do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

---

1. Subs, by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs, by the Constitution (Forty-Second Amendment) Act. 1976, sec. 2, for "unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

THE CONSTITUTION OF INDIA

Chapter IV A

FUNDAMENTAL DUTIES

ARTICLE 51A

Fundamental Duties - It shall be the duty of every citizen of India-

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wild life and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

[1](k) to provide opportunities for education to his/her child or, as the case may be, ward between age of 6 and 14 years.

---

1. Subs. by the Constitution (Eighty - Sixth Amendment) Act, 2002



प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास, भारत सरकार, कौशल एवं सक्षमता विकास पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित कर रहा है। तदनुसार, भविष्य में समस्त रोजगार को नेशनल स्किल क्वॉलिफिकेशन फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) के अनुसार अर्हताएं प्राप्त करने से संबद्ध किया जाएगा। इससे रोजगार पाने हेतु कौशल विकास और सक्षमता में पूरा कायाकल्प हो जाएगा। एनएसक्यूएफ कौशल और सक्षमता विकास में छात्रों को सहायता प्रदान करेगा और यह छात्रों को बहु क्षेत्रों में शिक्षा के लिए प्रवेश पाने तथा अपनी पढ़ाई पूरी करने में उन्हें चौतरफा रूप से सहायता प्रदान करेगा।

बीएफएसआई (बैंकिंग वित्तीय सेवाओं और बीमा) उद्योग में प्रशिक्षित व्यावसायिकों की काफी कमी है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) ने छात्रों में कौशल विकसित करने हेतु जिन 21 क्षेत्रों को विकास के लिए चिन्हित किया है उसमें बीएफएसआई भी शामिल है। एनएससी, जो कि बीएफएसआई क्षेत्र का सह–प्रवर्त्तक भी है और यह बीएफएसआई में सक्षमता एवं कौशल विकसित करने की जिम्मेदारी भी इसी की है।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए शिक्षा बोर्ड ने शिक्षण वर्ष 2015–16 से आगे की अवधि के लिए नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के सहयोग से 9वीं कक्षा से आगे की कक्षाओं के लिए एफएमएम को लागू किया है।

छात्र 10+2 स्तर पर एफएमएम का अध्ययन कर आगे की शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि 16 से भी अधिक विश्वविद्यालय, जिन्होंने एनएससी के साथ सहयोग स्थापित किया है, वित्तीय बाजारों में बीबीए, एमबीए में पहले से ही छात्रों को प्रवेश के लिए आमंत्रित करते आ रहे हैं।

10वीं कक्षा (लेवल 2) के लिए वर्तमान पुस्तक ''वित्तीय बाजारों से परिचय'' में सामान्य रूप से निवेश के मूल सिद्धांतों, प्रतिभूतियों, प्राइमरी बाजार, सेकण्डरी बाजार, डेरिवेटिव (वायदा बाजार उत्पाद), डिपोजिटरी, म्यूचूअल फंड, विश्लेषण के मूल सिद्धांतों और उसकी प्रक्रिया, अनुपात विश्लेषण आदि को शामिल किया गया है।

शिक्षा बोर्ड एनएसक्यूएफ के तहत एफएमएम पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक आरंभ और कार्यान्वित करने हेतु विषय–वस्तु संबंधी सहायता उपलब्ध कराने में एनएससी के उल्लेखनीय कार्य की सराहना करता है। छात्रों के कौशल–विकास में एनएससी लर्न टू ट्रेड (एनएलटी) सॉफ्ट वेयर उन्हें वास्तविक बाजार (रियल लाइफ मार्किट) कौशल विकसित करने में सहायता करेगा। इस पुस्तक के संकलन में सीबीएसई व्यावसायिक शिक्षा प्रकोष्ठ की टीम द्वारा दिया गया योगदान भी प्रशंसा का पात्र है।

पुस्तक में और अधिक सुधार लाने हेतु आपकी टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत है।

अध्यक्ष, के.मा.शि.बो.

आभार

परामर्शदाता

श्री वाइ.एस.के. शेषु कुमार
चेयरमैन, सीबीएसई

श्री के. के. चौधरी
कंट्रोलर ऑफ एक्जामिनेशन्स व डायरेक्टर (वोकेशनल एजुकेशन), सीबीएसई

श्री रवि वाराणसी
चीफ बिजनेस डेवलपमेंट, एनएसई

श्रीमती राणा उस्मान
सीनियर असिस्टेंट वाइस प्रेसिडेंट, एनएसई

कंटेंट विकसित किया गया

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज मुंबई

एडिटिंग और कॉर्डिनेशन

डॉ बिस्वजीत साहा
एडिशनल डायरेक्टर (वोकेशनल एजुकेशन), सीबीएसई

श्री जी. सी. शर्मा
हेड फाइनेंशियल एजुकेशन, स्कूल एंड यूनिवर्सिटीज ऑफ एनएसई

विषय-वस्तु

अध्याय - 1

निवेश की मूल बातें 1

अध्याय - 2

सेक्युरिटी

2.1 रेगुलेटर 6

2.2 भागीदार 7

अध्याय - 3

प्राथमिक बाजार

3.1 शेयर का निर्गमन 8

3.2 विदेशी पूँजी का प्रकाशन 14

अध्याय - 4

सेकेंडरी बाजार

4.1 परिचय 16

4.1.1 स्टॉक एक्सचेंज / शेयर बाजार 16

4.1.2 स्टॉक व्यापार 17

4.2 सेकेंडरी बाजार के प्रोडक्ट 20

4.2.1 इक्विटी निवेश 21

4.2.2. ऋण निवेश 24

अध्याय - 5

डेरिवेटिव 26

अध्याय - 6

न्यासी (डेपोजिटरी) 28

अध्याय - 7

म्यूचुवल फंड 30

अध्याय - 8

विविध

8.1 कॉर्पोरेट ऐक्शंस 35

8.2 इंडेक्स 37

8.3 क्लियरिंग, सेटलमेंट और रिड्रेसल 37

अध्याय - 9

विश्लेषण की अवधारणा एवं प्रकार 40

अध्याय - 10

रेशो एनालिसिस 55

अध्याय – 1

निवेश की मूल बातें



निवेश क्या है?

आप जो धन कमाते हैं उसका कुछ भाग खर्च कर देते हैं और बाँकि भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बचाते हैं। बचत को बेकार पड़े रखने के बदले आप अपने बचत से भविष्य में लाभ पाना पसंद करेंगे। यही निवेश कहलाता है।

हमें निवेश क्यों करना चाहिए?

हमें निवेश इसलिए करना चाहिए :

- अपने बेकार पड़े संसाधन पर प्रतिफल पाने के लिए
- भविष्य के विशिष्ट उद्देश्य के लिए धन का विशिष्ट योग अर्जित करने के लिए
- अनिश्चित भविष्य के लिए प्रावधान बनाने के लिए

किसी व्यक्ति द्वारा सोच समझ कर निवेश करने का सबसे प्रमुख कारण है, इनफ्लेशन की कीमत से जूझना। इनफ्लेशन वह दर है जिस पर जीवन यापन की लागत बढ़ती है। जीवन यापन की लागत वह है जिस पर आप सामान्यतः अपने दिनचर्या के लिए वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदते हैं। इनफ्लेशन धन की कीमत कम करता है, क्योंकि इससे भविष्य में समान मात्रा में वस्तुएँ और सेवाएँ नहीं खरीदी जाएगी, जितना कि इससे अभी खरीदी जा रही है या पहले खरीदी गई थी। उदाहरण के लिए, यदि अगले 20 वर्षों के लिए इनफ्लेशन की दर 6 प्रतिशत था, तो आज का 100 रुपये का खरीद अगले 20 वर्षों में 321 रुपया का हो जाएगा। यही कारण है कि निवेश को किसी लंबी अवधि की योजना के लिए एक मुख्य कारक माना जाता है। किसी निवेश के प्रतिफल के 'वास्तविक' दर की ओर देखना याद रखें, जो इनफ्लेशन के बाद का प्रतिफल है। निवेश का लक्ष्य इनफ्लेशन की दर से ऊपर प्रतिफल उपलब्ध कराना होना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि निवेश का मूल्य कम नहीं हो रहा है। उदाहरण के लिए, यदि वार्षिक इनफ्लेशन की दर 6 प्रतिशत है, तो अपने मूल्य की वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए निवेश को 6 प्रतिशत से अधिक अर्जित करने की आवश्यकता होगी। यदि आपके निवेश पर कर चुकाने के बाद का प्रतिफल इनफ्लेशन दर से कम है, तो आपकी संपत्ति का मूल्य वास्तव में कम हुई है; अर्थात् इससे आप आज उतना खरीददारी नहीं कर सकते हैं जितना कि पिछले वर्ष किये थे।

निवेश कब प्रारंभ करना चाहिए

कोई व्यक्ति जितना जल्द निवेश प्रारंभ करता है उसके लिए उतना ही अच्छा होता है। जल्द निवेश कर आप अपने निवेश की वृद्धि के लिए अधिक समय उपलब्ध कराते हैं, तथा प्रतिवर्ष ब्याज का योग की धारणा (इसे हम बाद में देखेंगे) मूलधन और ब्याज को साथ लाकर या प्रतिवर्ष इस पर अर्जित लाभांश आपकी आय बढ़ायेगी। सभी निवेशकों के लिए तीन महत्त्वपूर्ण नियम हैं -

- शीघ्र निवेश
- नियमित रूप से निवेश
- लंबी अवधि के लिए निवेश न कि अल्पावधि के लिए

निवेश करते समय हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए?

कोई निवेश करने से पहले, हमें सुनिश्चित करना चाहिए कि :

1. ऐसे दस्तावेजों को पढ़ें और समझें
2. निवेश की सही होने की जाँच करें
3. निवेश से संबंधित लागत तथा लाभ का पता लगायें
4. निवेश के जोखिम–प्रतिफल रूपरेखा का मूल्यांकन करें
5. निवेश के लिक्विडिटी और सुरक्षा पहलूओं को जानें
6. सुनिश्चित करें कि क्या यह आपके विशिष्ट उद्देश्य के लिए उपयुक्त है
7. इस विवरण की तुलना अन्य उपलब्ध निवेश अवसरों से करें
8. जाँच करें कि क्या यह आपके द्वारा विचार किये जा रहे या आपके द्वारा विचार किये गये अन्य निवेश योजना से मेल खा रहा है।
9. सिर्फ किसी प्राधिकृत मध्यस्थ के माध्यम से ही वर्ताव करें
10. मध्यस्थ और निवेश के बारे में सभी स्पष्टीकरण की खोज करें
11. यदि कुछ गलत हो गया हो तो अपने उपलब्ध विकल्प से छान बीन करें, और फिर संतुष्ट होने पर ही निवेश करें

इन्हें निवेश के बारह प्रमुख चरणों के नाम से जाना जाता है।

ब्याज से क्या तात्पर्य है ?

जब हम धन उधार लेते हैं, तो हमसे इस धन के उपयोग के बदले में भुगतान की आशा की जाती है – इसे ब्याज कहा जाता है। ब्याज वह राशी है जो कर्जदाता के धन के प्रयोग के बदले में उधार लेने वाले से वसूला जाता है। ब्याज सामान्यतः शेष मूलधन (उधार लिये गये धन राशी) के प्रतिशत के रूप में आकलित की जाती है। कर्ज की अवधि पर प्रतिशत दर निश्चित की जाती है, या यह कर्ज की अवधि के आधार पर परिवर्तनीय हो सकता है।

ब्याज दर निर्धारण के कारक क्या हैं?

जब हम ब्याज दर के बारे में बात करते हैं तो, ब्याज दर भी कई प्रकार के होते हैं – दर जो बैंक अपने जमाकर्त्ताओं को देती है, दर जिस पर वह अपने कर्जदाताओं को कर्ज देती है, दर जिस पर सरकार बॉण्ड या सरकारी सेक्युरिटी बाजार में उधार देती है, अल्प बचत योजना जैसे– एन एस सी, पी पी एफ में निवेशकों को प्रदत्त दर, दर जिस पर कंपनी सावधि जमा जारी करती है, इत्यादि।

इन ब्याज दरों को निर्धारित करने वाले कारक अधिकांशतः अर्थव्यवस्था से संबंधित होते हैं और सामान्यतः मैक्रो अर्थशास्त्र कारक के नाम से जाना जाता है। इनमें से कुछ कारक हैं :

- धन की माँग
- सरकारी उधार का स्तर
- धन की आपूर्ति
- इनफ्लेशन दर
- भारतीय रिजर्व बैंक और सरकारी नीति जो उपर्युक्त वर्णित कुछ चलों का निर्धारण करती है।

निवेश के लिए उपलब्ध विभिन्न विकल्प क्या है?

कोई व्यक्ति इनमें निवेश कर सकता है :

- भौतिक संपत्ति जैसे– रियल इस्टेट, सोना या आभूषण, माल इत्यादि और, या
- वित्तीय संपत्ति जैसे– बैंक में सावधि जमा, डाकघर में अल्प सेवा उपकरण, बीमा, भविष्य फंड, पेंशन इत्यादि या सेक्युरिटी बाजार से संबंधित उपकरण जैसे शेयर, बॉण्ड डिबेंचर इत्यादि।



निवेश के लिए उपलब्ध विभिन्न कम समय वाली वित्तीय विकल्प क्या है?

व्यापक रूप से कहें तो, बचत बैंक खाता, संपत्ति बाजार, लिक्विड फंड और बैंक में सावधि जमा को अल्पावधि वित्तीय निवेश के रूप में माना जा सकता है:

बचत बैंक खाता लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली अक्सर प्रथम बैंकिंग प्रोडक्ट है, जो कम ब्याज देता है (4 प्रतिशत – 5 प्रतिशत प्रतिवर्ष), जो इसे सावधि जमा से थोड़ा अच्छा बनाता है।

संपत्ति बाजार या लिक्विड फंड म्यूचुवल फंड का एक विशिष्ट रूप है जिसे विशेषतः अल्पावधि सावधिक आय उपकरण में निवेश किया जाता है और इस प्रकार आसान लिक्विडिटी प्रदान करता है। अधिकांश म्यूचुवल फंड के विपरीत संपत्ति बाजार फंड प्राथमिक रूप से आपकी संपत्ति की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है, तथा इसके बाद इसका लक्ष्य प्रतिफल को बढ़ाना है। संपत्ति बाजार फंड बचत खाता की तुलना में अपेक्षाकृत बेहतर लेकिन बैंक सावधि जमा से कम प्रतिफल देता है।

बैंक में सावधि जमा को सावधिक जमा के नाम से भी जाना जाता है और बैंक में सावधिक निवेश की न्यूनतम अवधि 30 दिनों की होती है। बैंक में सावधि जमा कम जोखिम उठाने वाले निवेशकों के लिए है, और इसे 6–12 महीने निवेश अवधि का माना जाता है, क्योंकि 6 महीने से कम की अवधि का निवेश सामान्यतः संपत्ति बाजार फंड के प्रतिफल से कम माना जाता है।

निवेश के लिए उपलब्ध विभिन्न अधिक समय के लिए वित्तीय विकल्प क्या है?

डाकघर बचत योजना, जन भविष्य फंड, कंपनी सावधि जमा, बॉण्ड और डिबेंचर, म्यूचुवल फंड इत्यादि।

डाकघर बचत : डाकघर मासिक आय योजना एक अल्प जोखिम बचत उपकरण है, जिसे किसी भी डाकघर के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। यह 8 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज उपलब्ध कराती है, जिसका भुगतान मासिक किया जाता है। निवेश की जाने वाली न्यूनतम राशी 1,000 रुपया है। अधिकतम राशी 3,00,000 रुपया (अकेला) या 6,00,000 रुपया (संयुक्त रूप से) वार्षिक है। इसकी मेच्योरिटी अवधि 6 वर्ष की है। मेच्योरिटी के समय में 10 प्रतिशत बोनस का भुगतान किया जाता है। एक वर्ष से अधिक की जमा की स्थिति में मेच्योरिटी पूर्व निकासी भी स्वीकृत है। मेच्योरिटी पूर्व निकासी की स्थिति में मूलधन से 5 प्रतिशत राशी की कटौती की जाती है; 10 प्रतिशत बोनस का भुगतान भी नहीं किया जाता है।

(PPF) सार्वजनिक भविष्य फंड : यह एक अधिक समय के लिए बचत उपकरण है जिसकी मेच्योरिटी अवधि 15 वर्षों की है तथा ब्याज 8 प्रतिशत की दर से वार्षिक रूप से भुगतान किया जाता है। एक सार्वजनिक भविष्य फंड खाता धन जमा करने के लिए किसी रष्ट्रीयकृत बैंक के माध्यम से वर्ष में किसी भी समय खोला जा सकता है। निवेश की गई राशी पर कर लाभ प्राप्त किया जा सकता है तथा प्राप्त ब्याज कर मुक्त होता है। खाता खोलने की तिथि के सातवें वित्तीय वर्ष से प्रतिवर्ष निकासी स्वीकार्य है तथा निकासी की राशी निकाले गये वर्ष से तत्काल प्रारंभ कर चौथे वर्ष से या पूर्ववर्ती वर्ष के अंत में जिसमें कर्ज की राशी कम हो, जमा शेष का 50: तक सीमित किया गया है ।

कंपनी सावधि जमा : यह कंपनी द्वारा नियत ब्याज दर पर अल्पावधि (छः माह) से मध्यम अवधि (तीन से पाँच साल) तक दी जाने वाली राशी है जिसका भुगतान मासिक, तीन महीने में, अल्प वार्षिक या वार्षिक किया जाता है। यह संचयी सावधिक जमा भी हो सकता है जिसमें कर्ज अवधि के अंत में कुल मूलधन ब्याज के साथ भुगतान की जाती है। कंपनी सावधिक जमा में ब्याज की दर 6 से 9 प्रतिशत तक परिवर्तित होती रहती है। ब्याज की प्राप्ति कर को काटकर की जाती है।

बॉण्ड : संपत्ति बढ़ाने के उद्देश्य के लिए यह एक नियत आमदनी (कर्ज) उपकरण है जिसे एक वर्ष से अधिक की अवधि के लिए निर्गम किया जाता है। केन्द्र या राज्य सरकार, निगम या समान संस्था बॉण्ड बेचता है। बॉण्ड सामान्यतः

मूलधन को नियत ब्याज दर के साथ निर्दिष्ट तिथि, जिसे मेच्योरिटी तिथि कहते हैं, पर फिर से भुगतान के लिए एक बचन पत्र होता है।

म्यूचुवल फंड : यह वह फंड है जो किसी निवेश कंपनी द्वारा चलाया जाता है तथा जो जनता से पैसे इकट्ठा कर, कथित उद्देश्य के अनुसार उसे संपत्ति समूह (शेयर डिबेंचर इत्यादि) में निवेश करती है। यह उसका प्रतिस्थापन है जो सीधे इक्विटी या ऋण में संसाधन, समय या जानकारी के अभाव में निवेश करने में सक्षम नहीं होते हैं। लाभ में व्यवसायिक धन प्रबंधन, कम मात्रा में खरीद और विविधता शामिल होते हैं। म्यूचुवल फंड इकाई फंड प्रबंधन कंपनी द्वारा निर्गम तथा मुक्त की जाती है जो फंड के कुल संपत्ति मूल्य (एन ए वी) पर आधारित होती है तथा जो प्रत्येक व्यापार सत्र के अंत में निर्धारित की जाती है। एन ए वी का आकलन फंड के सभी शेयरों में खर्च को घटाकर तथा निर्गम किये गये इकाई से विभाजित कर किया जाता है। म्यूचुवल फंड सामान्यतः दीर्घ अवधि निवेश प्रणाली है, इसके बावजूद भी संपत्ति बाजार जैसे म्यूचुवल फंड श्रेणी अल्पावधि उपकरण भी है।

स्टॉक एक्सचेंज से क्या तात्पर्य है?

सेक्युरिटी अनुबंध (विनियम) अधिनियम, 1956 (एस सी आर ए) के अनुसार स्टॉक एक्सचेंज किसी व्यक्तिगत, चाहे वह उसमें समाविष्ट किया गया हो या नहीं, बिक्री, खरीददारी या सेक्युरिटी व्यापार को सहायता देने, नियंत्रित करने के गठित किया गया है। स्टॉक एक्सचेंज एक क्षेत्रीय स्टॉक एक्सचेंज भी हो सकता है जिसके संचालन या न्यायाधिकरण का क्षेत्र निर्धारण इसकी स्वीकृति की जाती है । नेशनल एक्सचेंज प्रारंभिक समय से ही पूरे देश में व्यापार करने की अनुमति दी जाती है। एन एस इ को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के रूप में समाविष्ट किया गया था।

इक्विटी या शेयर क्या है?

किसी कंपनी की कुल इक्विटी संपत्ति को छोटे वर्ग के समान इकाई में विभाजित किया गया है, प्रत्येक इकाई को शेयर कहा जाता है। उदाहरण के लिए किसी कंपनी में 20000000 रुपये की कुल इक्विटी संपत्ति को 10 रुपये के 2000000 इकाई में विभाजित किया जाता है।10 रुपये के ऐसी सभी इकाई शेयर कहलाती है। इस प्रकार कंपनी को 10 रुपये के 2000000 इक्विटी शेयर के रूप में जाना जाता है। ऐसे शेयर धारकों को कंपनी का सदस्य माना जाता है और उसे मत देने का अधिकार होता है।

(Debt) ऋण उपकरण क्या है?

ऋण उपकरण किसी अनुबंध का प्रतिनिधित्व करता है जिसके माध्यम से एक पार्टी किसी दूसरे पार्टी को ब्याज दर तथा अवधि, उधार लेने वाले द्वारा कर्ज दाता को मूलधन राशी का फिर से भुगतान के संबंध में पूर्व निर्धारित शर्तों के आधार पर धन उधार देता है।

भारतीय सेक्युरिटी बाजार में, 'बॉण्ड' शब्द का प्रयोग ऋण उपकरण के रूप में किया जाता है जो केन्द्र सरकार, राज्य सरकार तथा सार्वजनिक क्षेत्र संस्था द्वारा निर्गम किया जाता है तथा 'डिबेंचर' शब्द का प्रयोग निजी निगम क्षेत्र के उपकरणों के लिए किया जाता है।

डेरिवेटिव क्या है?

डेरिवेटिव एक प्रोडक्ट है जिसका मूल्य एक या एक से अधिक मूल प्रभावित करने वाली वस्तुऐं से लिया जाता है जिसे (underlying) अंडरलाइंग कहा जाता है। इस प्रकार की संपत्ति इक्विटी, इंडेक्स, विदेशी विनिमय (फोरेक्स), माल या कोई अन्य संपत्ति हो सकती है।



प्रारंभ में लगभग तीन सौ वर्षों तक डेरिवेटिव प्रोडक्ट माल के मूल्य तथा माल से संबंधित चीजों के उतार चढ़ाव के विरुद्ध एक कंट्रोलर उपकरण के रूप में सामने आया था। वित्तीय डेरिवेटिव 1970 के बाद के दशकों में वित्त बाजारों बढ़ती मांग अस्थिरता के कारण समाने आया। फिर भी, इनके उद्धव काल 1990 से, यह प्रोडक्ट बहुत लोकप्रिय हुआ, यह डेरिवेटिव प्रोडक्ट में कुल कार्य–संपादन के लगभग दो तिहाई के रूप में आकलित की जाती है।

म्यूचुवल फंड क्या है?

म्यूचुवल फंड एक सामूहिक इकाई है जो सेबी (भारतीय सेक्युरिटी तथा विनिमय बोर्ड) में पंजीकृत होते हैं जो व्यक्ति विशेष या निगम निवेशकों से धन इकट्ठा करती है और विभिन्न वित्तीय उपकरणों में या सेक्युरिटी जैसे– इक्विटी शेयर, सरकारी सेक्युरिटी, बॉण्ड, डिबेंचर इत्यादि में इसे निवेश करती है। इस प्रकार म्यूचुवल फंड को निवेश व्यापार में वित्तीय मध्यस्थ के रूप में माना जा सकता है जो लोगों से फंड इकट्ठा करती है तथा निवेशकों के लिए इसे निवेश करती है। म्यूचुवल फंड निवेशकों को इकाई निर्गम करती है। विभाग या सेक्युरिटी जिसमें म्यूचुवल फंड के धन का निवेश किया गया है, की प्रशंसा निवेशकों द्वारा निवेश किये गये इकाई के मूल्य पर निर्भर करता है। म्यूचुवल फंड द्वारा अपने विवरण–पत्रिका में निर्धारित निवेश का उद्देश्य म्यूचुवल फंड योजना में संलग्न होता है। निवेश का उद्देश्य सेक्युरिटी के वर्ग को निर्देष्ट करती है जिसमें म्यूचुवल फंड का निवेश किया जा सकता है। म्यूचुवल फंड विभिन्न संपत्ति वर्ग में जैसे– इक्विटी, बॉण्ड, डिबेंचर, व्यावसायिक पेपर, तथा सरकारी सेक्युरिटी में निवेश किया जाता है। म्यूचुवल फंड द्वारा उपलब्ध योजना प्रत्येक फंड में परिवर्तित होते हैं। कुछ शुद्ध इक्विटी योजना होते हैं; बाकि इक्विटी और बॉण्ड का मिश्रित रूप होते हैं। निवेशकों को लाभांश पाने का विकल्प दिया जाता है, जिसकी घोषणा म्यूचुवल फंड द्वारा समय–समय पर की जाती है, या सिर्फ योजना के संपत्ति संवृद्धि में भाग लेने का विकल्प दिया जाता है।

इंडेक्स क्या है?

इंडेक्स बताता है कि बाजार की प्रवृत्ति की सूचना देने के लिए किसी शेयर मूल्य का विशिष्ट विभाग किस प्रकार आगे बढ़ता है। यह सेक्युरिटी की (basket) बास्किट है तथा सेक्युरिटी की (basket) बास्किट की औसत मूल्य गतिविधि इंडेक्स की गति को बताता है कि वह ऊपर की ओर जा रही है या नीचे की ओर।

न्यासी (डेपोजिटरी) क्या है?

न्यासी (डेपोजिटरी) एक बैंक की तरह है जहाँ सेक्युरिटी (जैसे– शेयर, डिबेंचर, बॉण्ड सरकारी सेक्युरिटी , इकाई इत्यादि) इलेक्ट्रानिक रूप में जमा रहती है।

डिमेटरियेलाइजेशन क्या है?

डिमेटरियेलाइजेशन एक विधि है जिसके द्वारा किसी निवेशक के भौतिक प्रमाण–पत्र को इलेक्ट्रोनिक रूप में समान सेक्युरिटी संख्या में बदला जाता है तथा निवेशक के खाते में उसके (Depository Participant) डेपोजिटरी प्रतिभागियों (डी पी) के साथ जमा किया जाता है।

अध्याय – 2

सेक्युरिटी

सेक्युरिटी से क्या तात्पर्य है?

सेक्युरिटी अनुबंध विनियम अधिनियम (एस सी आर ए), 1956 के अनुसार 'सेक्युरिटी' की परिभाषा में शेयर, बॉण्ड, (Scripts) स्क्रिप्ट, स्टॉक या अन्य किसी निगम कंपनी या निगम इकाई, सरकारी सेक्युरिटी , सेक्युरिटी डेरिवेटिव, सामूहिक निवेश योजना की इकाई, सेक्युरिटी में ब्याज तथा अधिकार, सेक्युरिटी पावती या केन्द्र सरकार द्वारा घोषित कोई अन्य उपकरण शामिल है।

सेक्युरिटी बाजार का क्या कार्य है?

सेक्युरिटी बाजार वह स्थान है जहाँ सेक्युरिटी क्रेता और विक्रेता शेयर, बॉण्ड, डिबेंचर इत्यादि खरीद की लेन–देन के लिए प्रवेश कर सकते हैं। आगे यह नागरिक सहयोग से निगम, ठेकेदारों को अपने कंपनी तथा व्यवसाय के संसाधनो को बढ़ाने में सहयोग करती है। सेक्युरिटी बाजार के माध्यम से अचल रिसोर्स (निवेशकों) को इनकी आवश्यकता वाले (निगमों) को प्रभावी तरीके से ट्रांसफर की जाती है। औपचारिक रूप से, सेक्युरिटी बाजार निवेश और निगम को फिर से बचत करने के लिए माध्यम प्रदान करती है। विभिन्न मध्यस्थों के माध्यम से विभिन्न वित्तीय प्रोडक्ट द्वारा जिसे 'सेक्युरिटी ' कहते हैं, बचत को निवेश से जोड़ दिया जाता है।

किन सेक्युरिटी में कोई निवेश कर सकता है?

- शेयर
- सरकारी सेक्युरिटी
- डेरिवेटिव प्रोडक्ट
- म्यूचुवल फंड की इकाई इत्यादि, कुछ सेक्युरिटी है जिसमें सेक्युरिटी बाजार के निवेशक निवेश कर सकते हैं।

2.1 रेगुलेटर

सेक्युरिटी बाजार (Regulator) रेगुलेटर की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

सेक्युरिटी बाजार में समुचित प्रतियोगिता की शर्तों के अभाव ने (Regulator) रेगुलेटर की भूमिका को महत्त्वपूर्ण बनाता हो। (Regulator) रेगुलेटर सुनिश्चित करता है कि बाजार का भागीदार उचित तरीके से पेश आ रहे हैं ताकि सेक्युरिटी बाजार निगम और सरकार के लिए वित्त का मुख्य स्रोत बना रहे और निवेशकों के हितों की रक्षा हो सके।

सेक्युरिटी बाजार को कौन नियंत्रित करता है?

सेक्युरिटी बाजार को नियंत्रित करने का दायित्व आर्थिक मामलों के विभाग (डी इ ए), कंपनी मामलों के विभाग (डी सी ए), भारतीय रिजर्व बैंक (आर बी आइ) और भारतीय सेक्युरिटी तथा विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा साझा किया जाता है।

सेबी क्या है तथा इसकी भूमिका क्या है?

(The Security Exchange Board of India) भारतीय सेक्युरिटी तथा विनिमय बोर्ड (सेबी) , भारत के बोर्ड (सेबी), सेबी अधीनियम 1992 की अनुभाग 3 के अंतर्गत स्थापित है। सेबी अधीनियम १९९२ वैधानिक अधिकारों के साथ Security Exchange Board of India भारतीय सेक्युरिटी तथा विनिमय बोड (सेबी) की स्थापना उपलब्ध कराती है–

(क) सेक्युरिटी में निवेशकों के हितों का रक्षा करना
(ख) सेक्युरिटी बाजार के विकास को प्रोन्नत करना और
(ग) सेक्युरिटी बाजार को नियंत्रित करना।

सेक्युरिटी बाजार से संबंधित सभी मध्यस्थों तथा व्यक्तियों के अतिरिक्त इसके नियंत्रण प्राधिकार को संपत्ति को निर्गम करने तथा सेक्युरिटी के हस्तांतरण में निगमों तक बढ़ाया गया है। सेबी को समुचित रूप से कथित कार्य को संपादित करने के लिए बचनबद्ध किया गया है। विशेष रूप से इसे निम्नलिखित अधिकार है :

- स्टॉक एक्सचेंज तथा अन्य सेक्युरिटी बाजार में व्यापार को नियंत्रित करना।
- स्टॉक ब्रोकरों, उपब्रोकरों इत्यादि के कार्य को पंजीकृत करना तथा नियंत्रित करना।
- स्वयं नियंत्रित संगठन को प्रोन्नत करना तथा उसे नियंत्रित करना।
- धोखाधड़ी तथा अनुचित व्यापार बाजार पर रोक लगाना।
- सपथ जाँच, स्टॉक एक्सचेंज की लेखा तथा जाँच, मध्यस्थों, स्वनियंत्रित संगठनों, म्यूचुवल फंड तथा सेक्युरिटी बाजार से संबंधित अन्य व्यक्तियों को सुचना के लिए बुलाना।

2.2 भागीदार

सेक्युरिटी बाजार के भागीदार कौन होते हैं?

सेक्युरिटी बाजार में आवश्यक रूप से तीन प्रकार के भागीदार होते हैं नामत:, सेक्युरिटियों को जारी करने वाला, सेक्युरिटियों में निवेशक तथा मध्यस्थ, जैसे– व्यापारी बैंकर, ब्रोकर इत्यादि। जहाँ निगम और सरकार अपना दायित्व निभाने के लिए सेक्युरिटी बाजार में रिसोर्स की वृद्धि करती है, वहीं परिवार सेक्युरिटी बाजार में अपने बचत का निवेश करती है।

क्या मध्यस्थ के माध्यम से निवेश करना आवश्यक है?

यह सलाह दी जाती है कि किसी मध्यस्थ के माध्यम से लेन–देन करें। उदहरण के लिए यदि आप स्टॉक एक्सचेंज पर कोई सेक्युरिटी खरीदना या बेचना चाहते हैं तो आपको किसी स्टॉक विनिमय के व्यापार सदस्य के माध्यम से लेन–देन करने की आवश्यकता होगी। यदि आप डिमट के रूप में सेक्युरिटी को बरकरार रखना चाहते हैं तो आपको किसी न्यासी (डेपोजिटरी) के साथ खाता बनाने की आवश्यकता होगी। यदि आप सार्वजनिक निर्गमों में निवेश करते हैं तो आपको इसके लिए बैंकर के साथ धन जमा करने की आवश्यकता होगी। यदि आप किसी मध्यस्थ के माध्यम से लिन–देन करते हैं तो आपको दिशा–निर्देश मिलेंगे। किसी सेबी पंजीकृत मध्यस्थ का चुनाव करें, क्योंकि वह अपने क्रियाकलाप के प्रति उत्तरदायी है। पंजीकृत मध्यस्थों की सूची विनिमय, उद्योग संगठन इत्यादि में उपलब्ध होते हैं।

सेक्युरिटी बाजार के कितने भाग हैं?

सेक्युरिटी बाजार के दो मुख्य भाग हैं : प्राथमिक (नया उपलब्ध) बाजार तथा सेकेंडरी बाजार। प्राथमिक बाजार नये सेक्युरिटी को बेचने का स्रोत उपलब्ध कराता है जबकि सेकेंडरी बाजार पहले से उपलब्ध सेक्युरिटी को देखता है।

अध्याय - 3

प्राथमिक बाजार

'प्राथमिक बाजार' की क्या भूमिका है?

प्राथमिक बाजार नई सेक्युरिटी को बेचने का स्रोत उपलब्ध कराता है। प्राथमिक बाजार सरकार तथा निगमों को उनकी निवेश संबंधी आवश्यकता की पूर्ति के लिए संसाधन बढ़ाने तथा अन्य दायित्व निभाने के लिए सेक्युरिटी प्रदान करने का अवसर प्रदान करता है। ये अंकित मूल्य पर या छूट अथवा प्रिमियम पर सेक्युरिटी निर्गम कर सकते हैं, और ये सेक्युरिटी अनेक रूपों में हो सकते हैं जैसे– इक्विटी, ऋण इत्यादि। ये घरेलू बाजारों तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में सेक्युरिटी निर्गम कर सकते हैं।

किसी शेयर या डिबेंचर के अंकित मूल्य से क्या तात्पर्य है?

किसी जारीकर्ता वाला द्वारा सेक्युरिटी में लगाये जाने वाले सामान्य या कथित राशी (रुपये में)। शेयर के लिए यह प्रमाण–पत्र में दिखाये गये स्टॉक का मूल कीमत है; बॉण्ड के लिए यह मेच्योरिटी पर निवेशक को भुगतान की जाने वाली राशी है। इसे सममूल्य या सम के नाम से भि जाना जाता है। किसी इक्विटी शेयर के लिए अंकित मूल्य सामान्यतः अति अल्प राशी (5 या 10 रुपये) है और शेयर के मूल्य पर अधिक प्रभाव नहीं डालता है, जो बाजार में अधिक बताया जा सकता है, 100 रुपया या 1000 रुपया या इससे भी अधिक। ऋण सेक्युरिटी के लिए, अंकित मूल्य वह राशी है जिसका निवेशक को बॉण्ड परिपक्व हो जाने पर फिर से भुगतान किया जाता है (सामान्यतः सरकारी सेक्युरिटी और निगम के बॉण्ड का अंकित मूल्य 100 रुपया होता है)। अर्थव्यवस्था के ब्याज दर के उतार–चढ़ाव पर वह मूल्य जिसके ऊपर सेक्युरिटी व्यापार निर्भर करता है।

सेक्युरिटी बाजार में प्रिमियम और छूट जैसे शब्दों से आप क्या समझते हैं?

सेक्युरिटी सामान्यतः 5 10 या 100 की मात्रा में निर्गम की जाती है। यह सेक्युरिटी का अंकित मूल्य या सममूल्य कहलाता है जैसा कि पहले बताया गया है। जब किसी सेक्युरिटी को उसके अंकित मूल्य से ऊपर के मूल्य पर बेचा जाता है तो इसे प्रिमियम पर निर्गम माना जाता है और जब इसे अंकित मूल्य से कम पर बेचा जाता है तो इसे छूट पर निर्गम माना जाता है।

3.1 शेयर का निर्गमन

कंपनी द्वारा जनता को शेयर निर्गम करने की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

अधिकांश कंपनियाँ अपने समर्थकों द्वारा निजी तौर पर प्रारंभ किया जाता है। अतः समर्थकों की पूँजी और बैंक तथा वित्तीय संस्था से लिया गया उधार लंबे समय तक व्यवसाय को स्थापित करने तथा उसे चलाने के लिए पर्याप्त नहीं होता है। इसीलिए कंपनियाँ लोगों को इक्विटी में सहयोग देने के लिए आमंत्रित करती है और व्यक्तिगत निवेशकों को शेयर निर्गम करती है। लोगों से 'जन निर्गम' के माध्यम से शेयर पूँजी आमंत्रित की जाती है। सामान्यतः जन निर्गम लोगों के लिए कंपनी के शेयर पूँजी में सहयोग के लिए एक प्रस्ताव है। जब यह पूरा कर लिया जाता है तो सेबी द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार कंपनी आवेदकों को शेयर उपलब्ध कराती है।

विभिन्न प्रकार के निर्गम क्या हैं?

प्रथमतया, निर्गम को जन, अधिकार या निर्गम श्रेष्ठता (निजी स्थानापन्न के नाम से भी जाना जाता है) के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। जहाँ जन तथा अधिकार पहलुओं में कई नियम शामिल है, निजी स्थानापन्य या निर्गम श्रेष्ठता अपेक्षाकृत सरल है। निर्गम का प्रकार नीचे किया गया है:

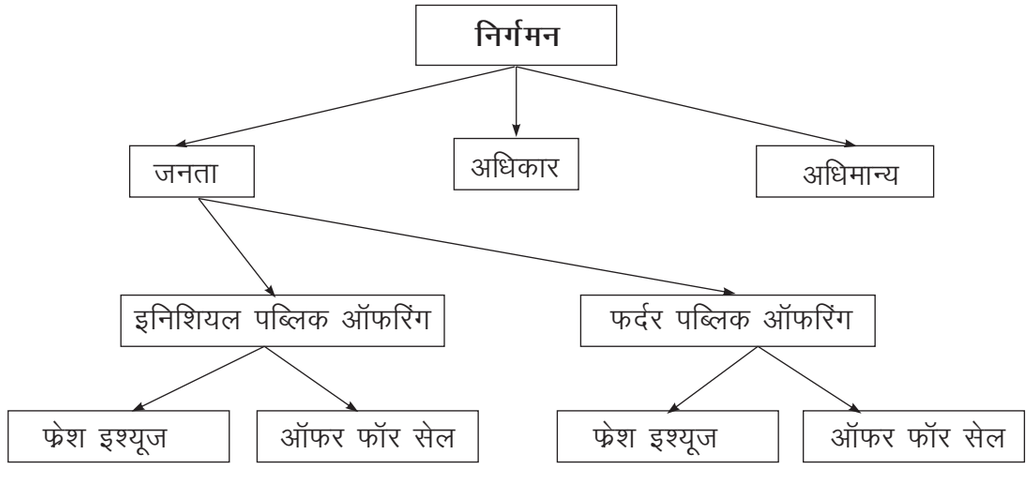
प्रारंभिक जन अर्पण (आइ पी ओ) वह है जब किसी बिना सूची वाली कंपनी ने जनता के लिए या तो नया सेक्युरिटी निर्गम करती है या अपनी वर्तमान सेक्युरिटी बेचने का प्रस्ताव रखती है या एक ही समय पर दोनों कार्य करती है। यह कार्य जारीकर्ता के सेक्युरिटी को सूचीबद्ध करने तथा व्यापार के लिए काम आसान बनाने का कार्य करती है।

जन उपलब्धता का अनुसरण (आगे का निर्गमन) तब होता है जब पहले से सूचीबद्ध कंपनी या तो जनता के लिए नया सेक्युरिटी बनाता है या जनता को निर्गम दस्तावेज के माध्यम से बिक्री का प्रस्ताव देती है।

अधिकार उपलब्धता तब होता है जब पंजीकृत तिथि पर किसी सूचीबद्ध कंपनी ने अपने वर्तमान शेयरधारकों को नई सेक्युरिटी उपलब्ध करती है। अधिकार सामान्यतः निर्गम से पहले के सेक्युरिटी की संख्या के विशेष अनुपात में प्रस्तावित की जाती है। यह निर्गमन उस कंपनी के लिए अधिक उपयुक्त है जो अपने वर्तमान शेयर धारकों को साझेदारी से हटाये बिना अपने पूँजी को बढ़ाना चाहता है।

श्रेष्ठता उपलब्धता कंपनी अधिनियम, 1956 के अनुभाग 81 के अंतर्गत सूचीबद्ध कंपनियों द्वारा व्यक्तियों के समूह के चुनाव के लिए एक शेयर प्रस्ताव या परिवर्तनीय सेक्युरिटी है, जो न तो अधिकार उपलब्धता है और न तो जन निर्गमन है। यह किसी कंपनी द्वारा इक्विटी पूँजी बढ़ाने का शीघ्रतम माध्यम है। निर्गम करने वली कंपनी को सेबी दिशा–निर्देश के अध्याय में वर्णित कंपनी अधीनियम तथा आवश्यकताओं का पालन करना होगा, जिसमें मूल्य, नोटिस द्वारा बताना इत्यादि साथ–साथ शामिल है।

निर्गमन (issues) का भेद



निर्गमन (issues) मूल्य का क्या अर्थ है?

वह मूल्य जिस पर प्रारंभ में कंपनी के शेयर को प्राथमिक बाजार में निर्गम किया जाता है, निर्गम मूल्य कहलाता है। जब यह व्यापार करना प्रारंभ करता है, तो बाजार मूल्य निर्गम मूल्य से ऊपर या नीचे हो सकता है।

बाजार पूँजीकरण से क्या तात्पर्य है?

किसी कथित कंपनी का बाजार मूल्य, जिसका आकलन उसके वर्तमान शेयर मूल्य (बाजार मूल्य) को उपलब्ध शेयर की संख्या से गुणनफल द्वारा किया जाता है, बाजार पूँजीकरण कहलाता है। उदाहरण के लिए कंपनी अ द्वारा जारी शेयरों की संख्या 120 है और वर्तमान बाजार मूल्य 100 रुपये हैं तो कंपनी अ का बाजार पूंजीकरण 12000 मिलियन रुपये हैं।

जन निर्गमन (issues) और निजी ट्रांसफर में क्या अंतर है?

जब कोई निर्गमन (issues) सिर्फ किसी चुने हुए व्यक्तियों पर नहीं करते हुए सामान्य जन के लिए तथा विस्तृत रूप में किसी अन्य निवेशकों के लिए खोल दिया जाता है, तो उसे जन निर्गमन कहा जाता है। लेकिन यदि निर्गमन किसी चुने हुए व्यक्तियों में किया जाता है तो उसे निजी स्थानापन्न कहा जाता है। कंपनी अधिनियम, 1956 के अनुसार कोई निर्गमन सार्वजनिक हो जाता है जब उसे 50 व्यक्तियों या इससे अधिक व्यक्तियों को आवंटित की जाती है। इसका तात्पर्य है कि कोई निर्गमन निजी रूप से स्थानापन्न किया जा सकता है, जब उसका बँटवारा 50 व्यक्तियों से कम के बीच किया जाता है।

प्रारंभिक जन प्रस्ताव (आइ पी ओ) क्या है?

किसी प्राथमिक बाजार में जनता के बीच सेक्युरिटी की बिक्री प्रारंभिक जन प्रस्ताव (आइ पी ओ) है। यह तब होता है जब कोई सूची से अलग कंपनी या तो नया सेक्युरिटी उपलब्ध करती है या अपने वर्तमान सेक्युरिटी की बिक्री का प्रस्ताव रखती है या दोनों कार्य जनता के बीच पहली बार करती है। यह जारीकर्ता के सेक्युरिटी के सूचीकरण तथा उसके व्यापार का मार्ग प्रशस्त करती है। सेक्युरिटी की बिक्री या तो पुस्तक निर्माण के माध्यम से की जाती है या इसे सामान्य जनता में उपलब्ध कर किया जाता है।

किसी निर्गम का मूल्य निर्धारण कौन करता है?

भारतीय प्राथमिक बाजार का प्रादुर्भाव स्वतंत्र मूल्य काल में 1992 में हुआ। इसके बाद, यह दिशा–निर्देश उपलब्ध कराया गया कि मूल्य का निर्धारण व्यापार बैंकर के संपर्क का निर्गमनकर्ता द्वारा किया जाएगा। सेबी द्वारा कोई मूल्य सूत्र का अनुबंध नहीं किया गया है। मूल्य स्थापन में सेबी की कोई भूमिका नहीं है। फिर भी कंपनी और व्यापारी बैंकर को प्राचाल के पूर्ण डिस्क्लोजर की आवश्यकता है, जो उसने निर्गम मूल्य का निर्णय लेते समय निर्धारित की थी। निर्गम के दो प्रकार हैं, पहला जहाँ कंपनी और (Lead) लीड व्यापारी बैंकर मूल्य निर्धारित करता है (जिसे नियत मूल्य कहते हैं) और दूसरा, जहाँ कंपनी और (Lead) लीड मैनेजर (एल एम) निम्न मूल्य या मूल्य बैण्ड का अनुबंध करता है और इसका अंतिम मूल्य (पुस्तक निर्माण विधि के द्वारा मूल्य की खोज) निर्धारण करने के लिए इसे बाजार प्रबलता पर छोड़ दिया जाता है।

'पुस्तक निर्माण विधि द्वारा मूल्य की खोज' से क्या तात्पर्य है?

पुस्तक निर्माण मूल रूप से प्रभावी मूल्य की खोज के लिए आई पी ओ में प्रयोग की जाने वाली एक विधि है। यह एक यंत्र है जहाँ, आइ पी ओ के खुले रहने की अवधि में निवेशकों द्वारा अलग–अलग मूल्यों पर डाक एकत्रित की जाती है, जो प्रारंभिक मूल्य से अधिक या समान होती है। प्रस्ताव मूल्य का निर्धारण डाक के बंद होने की तिथि के बाद की जाती है।

पुस्तक निर्माण के माध्यम से शेयर का प्रस्ताव तथा सामान्य जन निर्गमन द्वारा शेयर का प्रस्ताव में क्या अंतर है?

जिस मूल्य पर सेक्युरिटी का आवंटन किया जाएगा उसे पुस्तक निर्माण द्वारा शेयर प्रस्ताव विधि से नहीं जाना जाता है, जबकि सामान्य जन निर्गमन द्वारा शेयर प्रस्ताव की स्थिति में निवेशकों को अग्रिम रूप से मूल्य का पता होता है। पुस्तक निर्माण के अंतर्गत निवेशक प्रारंभिक मूल्य पर या इससे ऊपर शेयर का डाक लगाता है तथा पुस्तक निर्माण विधि के बंद हो जाने के बाद मूल्य का निर्धारण शेयर आवंटन के लिए किया जाता है।

पुस्तक निर्माण के मामले में, माँग की जानकारी प्रतिदिन हो सकती है क्योंकि पुस्तक का निर्माण किया जाता है। लेकिन जन निर्गमन के मामले में निर्गमन के बंद होने पर माँग की जानकारी मिलती है।

अंतिम मूल्य क्या है?

पुस्तक निर्माण निर्गमन में, जारी करने वाले को सूचित करने की आवश्यकता होती है कि प्रारंभिक मूल्य या मूल्य बैंड विवरण पत्रिका में है। वास्तविक खोजा गया निर्गम मूल्य कीमत बैंड में पाये जाने वाले कोई भी मूल्य या प्रारंभिक मूल्य से ऊपर का कोई भी मूल्य हो सकता है। यह निर्गम मूल्य 'अंतिम मूल्य' कहलाता है। जारी करने वाला और (Lead) लीड मैनेजर पुस्तक के माध्यम से इसका निर्णय लेता है और निवेशक स्टॉक का अभिलाषा रखता है।

पुस्तक निर्माण के मामले में प्रारंभिक मूल्य क्या है?

प्रारंभिक मूल्य वह न्यूनतम मूल्य है जिस पर कि डाक या बोली लगाई जाती है।

किसी पुस्तक निर्मित IPO (आइ पी ओ) में मूल्य बैंड क्या है?

विवरण पुस्तिका में सेक्युरिटी का प्रारंभिक मूल्य या निवेशकों द्वारा डाक की जा सकने वाली मूल्य बैंड पाया जा सकता है। मूल्य बैंड के प्रारंभिक तथा अंतिम बिंदु के बीच का अंतर 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा। अन्य शब्दों में, इसका अर्थ है कि अंतिम बिंदु प्रारंभिक मूल्य के 120 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। मूल्य बैंड का संशोधन हो सकता है और मूल्य बैंड में इस प्रकार के संशोधन को स्टॉक एक्सचेंज को सूचित कर प्रेस द्वारा तथा संबंधित वेब साइट और पुस्तक निर्माण विधि में भाग लेने वाले व्यापार सदस्यों के टर्मिनल में परिवर्तन को सूचित कर विस्तृत रूप से प्रचारित किया जा सकता है। मूल्य बैंड के संशोधन की स्थिति में डाक अवधि को अगले तीन दिनों तक बढ़ाया जा सकता है, बशर्ते कि कुल डाक अवधि दस दिनों से अधिक न हो।

मूल्य बैंड का निर्णय कौन करता है?

यह समझा जा सकता है कि निर्गमन के मूल्य निर्धारण में रेगुलेशनतंत्र की कोई भूमिका नहीं होती है। मूल्य या मूल्य बैंड का निर्धारण व्यापारी बैंकरों के संपर्क से कंपनी तक सीमित रहता है।

पुस्तक निर्माण की अवधि में डाक के खुले रहने के लिए न्यूनतम दिनों की संख्या क्या है?

पुस्तक न्यूनतम तीन दिनों तक खुली रहनी चाहिए।

क्या पुस्तक निर्माण के लिए खुली बोली प्रणाली का प्रयोग किया जा सकता है?

नहीं, सेबी के अनुसार सिर्फ इलेक्ट्रॉनिक से जुड़ा ट्रांसपारेंट फेसिलिटी का प्रयोग पुस्तक निर्माण के मामले में प्रयोग करने के लिए स्वीकृत है।

क्या कोई अकेला इनवेस्टर आवेदन करने के लिए पुस्तक निर्माण सुविधा का प्रयोग कर सकता है?

हाँ।

कोई कैसे जानता है कि शेयर आइ पी ओ या प्रस्ताव में बिक्री के लिए आबंटित है? शेयर आबंटित नहीं किये जाने की स्थिति में वापसी प्राप्त करने का समय सीमा क्या है?

सेबी अधिनियम, 2009 के अनुसार (पूँजी निर्गमन तथा उद्घाटन आवश्यकता) आबंटन का आधार निर्गम की बंद होने की तिथि से आठ दिनों



तक पूरा हो जाना चाहिए। ज्यों ही आबंटन का आधार पूरा हो जाता है, डिमट खाता या आबंटन सलाह और वापसी आदेश का प्रेषण दो कार्य दिवस के अंदर पूरा करने होता है। इस प्रकार निवेशक को निर्गमन बंद होने से लगभग 11 दिनों तक पता हो जाना चाहिए कि उन्हें शेयर का आबंटन हुआ है या नहीं।

शेयर निर्गमन के बाद सुचीबद्ध होने में कितना समय लगता है?

पुस्तक निर्माण निर्गमन के बंद होने के बाद इसमें 12 कार्य दिवस का समय लगता है।

किसी निर्गमन में 'रजिस्ट्रार' की क्या भूमिका होती है?

रजिस्ट्रार अमान्य आवेदनों को हटाकर योग्य आबंटकों की सूची को अंतिम रूप देता है, जो सुनिश्चित करता है कि आवेदकों के डिमट खाते में शेयर को क्रेडिट करने में निगम कार्य करता है तथा अयोग्य आवेदकों को वापसी का आदेश भेजा जाता है। (Lead) लीड मैनेजर अनुसरण को सुनिश्चित करने में रजिस्ट्रार का सहयोग करता है ताकि बैंक शाखा से एकत्रित करने में आवेदनों का आहरण, आवेदनों पर कार्यवाही तथा अन्य तथ्यों को आवंटन के आधार तक अंतिम रूप दिया जा सके, सेक्युरिटी प्रमाण पत्र तथा वापसी आदेश का प्रेषण पूरा हो सके तथा सेक्युरिटी सूचीबद्ध किया जा सके।

क्या एन एस इ आइ पी ओ को कोई सुविधा प्रदान करता है?

हाँ, एन एस इ का इलेक्ट्रॉनिक व्यापार नेटवर्क देश में चारों ओर फैला हुआ है जो सुदूर क्षेत्रों के निवेशकों को जोड़ता है। एन एस इ ने इस सुविधा के प्रस्ताव को पुस्तक निर्माण विधि के माध्यम से ऑन लाइन आइ पी ओ उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। एन एस इ एक पूर्णतः स्वचालित स्क्रीन आधारित डाक प्रणाली का संचालन करता है, जिसे एन इ ए टी आई पी ओ कहते हैं जो व्यापार के सदस्यों को उनके कार्यालय से परिष्कृत टेली सूचना नेटवर्क के माध्यम से सीधे डाक में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करता है।

एन एस इ प्रणाली के माध्यम से पुस्तक निर्माण से कई लाभ हैं :

- एन एस इ प्रणाली सेक्युरिटी में पूरे देश में डाक सुविधा प्रदान करता है। आधुनिकतम इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली के प्रयोग द्वारा यह समुचित, प्रभावी और पारदर्शी डाक उपलब्ध कराता है।
- निर्गमन में शामिल लागत सामान्य आइ पी ओ के लागत से काफी कम होते हैं।
- यह प्रणाली निर्गमन विधि के पूरा होने में लगने वाले समय को कम करता है। आइ पी ओ बाजार का समय 10.00 बजे पूर्वाह्न से 5.00 बजे मध्याह्न तक है।

विवरण सूची क्या है?

बहुत बड़ी संख्या में नई कंपनियाँ सार्वजनिक निर्गम निकालती है। जहाँ इन कंपनियों में अधिकांश असली होते हैं वहीं कुछ निवेशकों का शोषण करना चाहती है। इसीलिए यह आवश्यक हो जाता है कि किसी निवेशक को किसी कंपनी में निवेश करने से पहले उस कंपनी की भविष्य की संभावना को पहचाने। सेबी द्वारा जारी दिशा–निर्देश का एक भाग जनता के लिए सूचना का उद्घाटन है। इस उद्घाटन में धन बढ़ाने का कारण, धन खर्च के प्रावधान के तरीके, धन पर अनुमानित वापसी जैसे सूचना शामिल होते हैं। यह सूचना 'विवरण पुस्तिका' के रूप में होते हैं, जिसमें निर्गमन का आकार, कंपनी की वर्तमान स्थिति, उसका इक्विटी पूँजी, उसका वर्तमान तथा भूत का प्रदर्शन, प्रोन्नति, प्रोजेक्ट, प्रोजेक्ट का लागत, जमा करने का साधन, प्रोडक्ट और क्षमता इत्यादि जैसी सूचना भी शामिल होते हैं। इसमें अधोलिखित तथा वैधानिक बाध्यता से संबंधित आवश्यक सूचना भी पाया जाता है। यह निवेशक को कंपनी के अल्पावधि तथा अधिक समय के लिए संभावना को आकलित करने में मदद करता है।



'ड्राफ्ट प्रस्तावित दस्तावेज' से क्या तात्पर्य है?

'प्रस्ताव दस्तावेज' से तात्पर्य है जन निर्गमन के मामले में विवरण सूची या अधिकार निर्गमन के मामले में बिक्री के लिए प्रस्ताव तथा प्रस्ताव पत्र जो कंपनी के रजिस्ट्रार (आर ओ सी) और स्टॉक एक्सचेंज (एस इ) के साथ फाइल की जाती है। किसी 'प्रस्ताव दस्तावेज' में निवेशक के निवेश करने के निर्णय से संबंधित सभी आवश्यक सूचना मौजूद होते हैं।

'ड्राफ्ट प्रस्ताव दस्तावेज' का अर्थ है ड्राफ्ट स्थिति में प्रस्ताव दस्तावेज। ड्राफ्ट प्रस्ताव दस्तावेज लाल हेरिंग विवरण सूची के पंजीकरण या आर ओ सी के साथ विवरण सूची से कम से कम 30 दिन पहले सेबी के साथ फाइल किया जाता है। ड्राफ्ट प्रस्ताव दस्तावेज में किसी परिवर्तन, यदि कोई हो तो, को सेबी निर्दिष्ट कर सकता है और जारी करने वाला या फॉरवर्ड व्यापार बैंकर ड्राफ्ट प्रस्ताव दस्तावेज में ऐसे परिवर्तन को आर ओ सी के पास ऐसे दस्तावेज ले जाने से पहले निपटाएगा। ड्राफ्ट प्रस्ताव दस्तावेज सेबी वेबसाइट पर जन टिप्पणी के लिए 21 दिनों की अवधि तक सेबी के साथ ड्राफ्ट प्रस्ताव दस्तावेज फाइल करने के लिए उपलब्ध रहेगा।

'संक्षिप्त विवरण सूची' क्या है?

'संक्षिप्त विवरण सूची' विवरण सूची का अल्प रूप है और इसमें विवरण सूची के सभी आवश्यक विशेषता पाई जाती है। इसमें जन निर्गमन के आवेदन फार्म उपलब्ध होते हैं।

'विवरण सूची या प्रस्ताव दस्तावेज' कौन तैयार करता है?

सामान्यतः कंपनी की जन निर्गम 'व्यापार बैंकर द्वारा जारी की जाती है, जो परियोजना के मूल्य–निर्धारण, परियोजना के मूल्य को अंतिम रूप देने, लाभ आकलन और 'विवरण सूची' तैयार करने के लिए उत्तरदायी होता है। 'विवरण सूची' को सेबी के अनुमोदन के लिए रखा जाता है।

लॉक–इन से क्या तात्पर्य है?

'लॉक–इन' शेयर की बिक्री में कुछ अवधि के लिए रूकावट को सूचित करता है। सेबी का दिशा–निर्देश प्रोमोटर द्वारा शेयर के लॉक–इन आवश्यकता को मुख्य रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए अनुबंधित करता है कि कंपनी को नियंत्रण करने वाला प्रोमोटर या मुख्य व्यक्ति जन निर्गमन के बाद कंपनी के लिए कुछ न्यूनतम प्रतिशत रखना जारी रख सके।

'सेक्युरिटी के सूचीकरण' से क्या तात्पर्य है?

सूचीकरण से तात्पर्य किसी औपचारिक करार के माध्यम से स्टॉक एक्सचेंज में व्यापार लाभ के लिए जारी करने वाला के सेक्युरिटी का नामांकन है। विनिमय में नामांकन का मुख्य उद्देश्य सेक्युरिटी को लिक्विडिटी और बाजारीकरण उपलब्ध कराने के साथ–साथ व्यापार को प्रभावी रूप से नियंत्रित करने तथा पर्यवेक्षण के लिए यंत्र–रचना उपलब्ध कराना है।

'सूचीबद्ध करार' क्या है?

स्टॉक एक्सचेंज पर किसी कंपनी की सेक्युरिटी की सूची तैयार करते समय, कंपनी को विनिमय के साथ एक सूचीबद्ध करार में प्रवेश करने की आवश्यकता होती है। सूचीबद्ध करार सूची तथा उद्घाटन के नियमों एवं शर्तों को निर्दिष्ट करती है जो विनिमय के लिए कंपनी द्वारा नियमित रूप से बनाया जाएगा।

'सेक्युरिटी का (Dilisting) डीलिस्टिंग से क्या तात्पर्य है?

'सेक्युरिटी को (Dilisting) डीलिस्टिंग करना' जैसे वाक्य का अर्थ किसी सूचीबद्ध कंपनी की सेक्युरिटी को स्टॉक एक्सचेंज से स्थायी रूप से हटाना है। सूची से हटाने के परिणामस्वरूप, उस कंपनी की सेक्युरिटी उस स्टॉक विनिमय में व्यापार नहीं कर सकेगा।

किसी निर्गमन में सेबी की क्या भूमिका है?

किसी कंपनी द्वारा जन निर्गमन बनाते समय या किसी सुचीबद्ध कंपनी द्वारा 50 लाख रुपये से अधिक मूल्य का अधिकार निर्गमन बनाने के लिए उसे सेबी के साथ उसके अवलोकन हेतु ड्राफ्ट प्रस्ताव दस्तावेज फाइल करने की आवश्यकता होती है। कंपनी सेबी के अवलोकन के बाद ही पहलू पर आगे बढ़ सकती है। सेबी के अवलोकन पत्र का मान्यता अवधि मात्र तीन महीना है, अर्थात् कंपनी को अपना मुद्दा तीन महीने के अंदर ही खोलना है।

सेबी के किसी निर्गमन के अनुमोदन से क्या तात्पर्य है?

सेबी नहीं तो किसी निर्गमन का अनुमोदन करती है और न ही किसी योजना के वित्तीय प्रभाव या किसी परियोजना की जिसके लिए निर्गमन (issues) प्रस्तावित है या दिये गये कथन के सुधार के लिए या प्रस्ताव दस्तावेज में दिये गये विचार के लिए कोई दायित्व लेता है। सेबी मुख्य रूप से यह देखने के लिए निर्गमन (issues) की जाँच करता है कि जारीकर्ता कंपनी द्वारा विवरण सूची या प्रस्ताव दस्तावेज में पर्याप्त उद्घाटन किया गया है।

क्या सेबी का लेबल किसी व्यक्ति की संपत्ति को सुरक्षित करता है?

निवेशक को प्रस्ताव दस्तावेज में उद्घाटित विषय सूची के आधार पर खुद एक सूचित निर्णय लेना चाहिए। सेबी खुद को किसी निर्गमन (issues) या जारी करने वाला के साथ संबंधित नहीं करता है तथा निर्गमन के माध्यम से निवेशक द्वारा प्रस्तावित किसी फंड की गारंटी नहीं देता है। फिर भी निवेशक को सामान्यतः निर्गम से संबंधित सभी तथ्यों के साथ–साथ जोखिम पहलुओं को किसी निवेश के निर्णय लेने से पहले अध्ययन करने की सलाह देती है। किसी गैर सरकारी 'तरीके' या समाचारों पर विश्वास करने के बिरुद्ध उन्हें प्रभावी रूप से सावधान किया जाता है।

3.2 विदेशी पूँजी का प्रकाशन

क्या भारतीय कंपनियाँ विदेशी मुद्रा संसाधन उठा सकती है?

हाँ। भारतीय कंपनियाँ दो मुख्य स्रोतों द्वारा विदेशी मुद्रा रिसोर्स को उठाने के लिए अनुमोदित हैः क) विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय बॉण्ड का निर्गमन जिसे आम रूप से 'यूरो' निर्गमन के नाम से जाना जाता है तथा ख) न्यासी (डेपोजिटरी) पावती के माध्यम से आम शेयर का निर्गमन जिसे 'वैश्विक न्यासी (डेपोजिटरी) पावती (जी डी आर) या अमरीकी न्यासी (डेपोजिटरी) पावती (ए डी आर) के नाम से जाना जाता है, को विदेशी निवेशकों को निर्गम कर अर्थात् सांस्थानिक निवेशकों या वैयक्तिक निवेशकों को जारी कर।

अमरीकी (डेपोजिटरी) / (Receipt) पावती योजना क्या है?

अमरीकी (डेपोजिटरी) / (Receipt) पावती योजना अमरीकी न्यासी (डेपोजिटरी) शेयर (ए डी एस) के स्वामित्व के प्रमाण का एक भौतिक प्रमाण–पत्र है। इस शब्द के प्रयोग के लिए अक्सर ए डी एस का प्रयोग किया जाता है।

ए डी एस क्या है?

अमेरिकन डेपोजिटरी शेयर (ए डी एस) किसी गैर संयुक्त राज्य कंपनी में संयुक्त राज्य द्वारा इक्विटी स्वामित्व का नामित रूप है। यह कंपनी के गृह राष्ट्र में किसी परिरक्षक बैंक द्वारा जमा किये गये कंपनी के विदेशी शेयर का प्रतिनिधित्व करता है और ए डी आर प्रमाण–पत्र के नियमों के अनुसार विदेशी शेयर के निगम तथा आर्थिक अधिकार की रक्षा करता है।किसी एक भौतिक ए डी आर प्रमाण–पत्र के माध्यम से एक या कई ए डी एस का प्रतिनिधित्व किया जा सकता है। ए डी आर और ए डी एस शब्दों का प्रयोग बदल कर भी किया जाता है।

ए डी एस, यू एस निवेशकों को विदेशी सेक्युरिटी में निवेश करने तथा गैर यू एस सेक्युरिटी का यू एस में व्यापार करने का आसान तरीका उपलब्ध कराता है। ए डी एस, जे पी मोर्गन चेज बैंक जैसे डेपोजेटरी बैंक के द्वारा उपलब्ध की जाती है। इसका व्यापार उसी तरीके से किया जाता है जैसे कि यू एस कंपनी में शेयर का किया जाता है, न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेंज में (एन वाई एस इ) अमेरिकन स्टॉक एक्सचेंज में (ए एम इ एक्स) या एन ए एस डी ए क्यू में तथा ओवर–द–काउण्टर बाजार में उद्धृत होता है।

यद्यपि ए डी एस संयुक्त राज्य डॉलर नामित सेक्युरिटी है और लाभांश का भुगतान यू एस डॉलर में करता है, फिर भी ये किसी गैर यू एस कंपनी के निवेश से संबंधित मुद्रा जोखिम को समाप्त नहीं करता है।

वैश्विक न्यासी (डेपोजिटरी) पावती से क्या तात्पर्य है?

वैश्विक न्यासी (डेपोजिटरी) पावती (जी डी आर) को वैश्विक वित्त वाहन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो जारी करने वाला को वैश्विक प्रस्ताव के द्वारा दो या दो से अधिक बाजारों में एक साथ पूँजी बढ़ाने की अनुमति देती है। जी डी आर का उपयोग संयुक्त राज्य के अंतर्गत या बाहर के सार्वजनिक या निजी बाजार में किया जा सकता है। जी डी आर जो एक विनिमेय प्रमाण पत्र है, सामान्यतः कंपनी का व्यापारिक इक्विटी या ऋण का प्रतिनिधित्व करता है। जी डी आर से संबंधित शेयर नियत अनुपात में होता है, अर्थात् 1 जी डी आर = 10 शेयर।

अध्याय - 4

सेकेंडरी बाजार

4.1 परिचय

सेकेंडरी बाजार से क्या तात्पर्य है?

सेकेंडरी बाजार से तात्पर्य उस बाजार से है जहाँ सेक्युरिटी को प्राथमिक बाजार में जनता को प्रस्तावित कर दिये जाने के बाद या स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध कर दिये जाने के बाद उसका व्यापार किया जाता है। अधिकांश व्यापार सेकेंडरी बाजार में ही किया जाता है। सेकेंडरी बाजार बाजार में इक्विटी बाजार तथा ऋण बाजार शामिल होते हैं।

सेकेंडरी बाजार की क्या भूमिका है?

आम निवेशक के लिए, सेकेंडरी बाजार उसके सेक्युरिटी के व्यापार के लिए एक प्रभावी प्लेटफार्म उपलब्ध कराता है। कंपनी के प्रबंधन के लिए, सेकेंडरी इक्विटी बाजार एक संचालक तथा कंट्रोलर की तरह सेवा करता है– मूल्य वृद्धि नियंत्रण क्रिया की सुविधा उपलब्ध कर, प्रोत्साहन आधारित प्रबंधन कॉंट्रेक्ट का कार्यान्वयन कर तथा सूचना एकत्रित कर (मूल्य खोजकर) जो प्रबंधन के निर्णयों को गाइड करता है।

प्राथमिक और सेकेंडरी बाजार में क्या अंतर है?

प्राथमिक बाजार में पूँजी या फंड को बढ़ाने के लिए सेक्युरिटी अंशदान से जनता को जारी किया जाता है। सेकेंडरी बाजार एक इक्विटी बाजार स्थल है जहाँ पहले से पड़े या वर्तमान सेक्युरिटीयों से निवेशकों के बीच व्यापार किया जाता है। सेकेंडरी बाजार कॉंट्रेक्ट या व्यापारी बाजार हो सकता है। जहाँ स्टॉक एक्सचेंज कॉंट्रेक्ट बाजार का एक भाग है, ओवर–द–काउंटर डीलर बाजार का एक भाग है।

4.1.1 स्टॉक एक्सचेंज

शेयर को खरीदने और बेचने में स्टॉक एक्सचेंज की क्या भूमिका है?

भारत का स्टॉक एक्सचेंज रेगुलेशन प्राधिकरण के सम्पूर्ण निरीक्षण में, भारतीय सेक्युरिटी और विनिमय बोर्ड (सेबी) एक व्यापार मंच उपलब्ध कराता है, जहाँ विक्रेता और क्रेता सेक्युरिटी यों के लेन–देन के लिए मिल सकते हैं। एन एस इ द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले व्यापार मंच इलेक्ट्रॉनिक होता है और क्रेता तथा विक्रेता को व्यापार के लिए किसी भौतिक स्थल पर मिलने की आवश्यकता नहीं होती है। वे एन एस इ व्यापार सदस्यों के पास उपलब्ध कंप्यूटरीकृत व्यापार स्क्रीन के माध्यम से या एन एस इ व्यापार सदस्यों द्वारा उपलब्ध कराये गये इंटरनेट आधारित सुविधा के माध्यम से व्यापार कर सकते हैं।

स्टॉक एक्सचेंज का डिम्यूच्वलाइजेशन क्या है?

डिम्यूच्वलाइजेशन किसी विनिमय के कानूनी संरचना को इंगित करता है जहाँ विनिमय का स्वामित्व, प्रबंधन और व्यापार का अधिकार एक दूसरे से अलग रखा जाता है।

एक डिम्यूच्वलाइज्ड विनिमय म्यूच्वलाइज्ड विनिमय से किस प्रकार भिन्न है?

म्यूच्वलाइज्ड विनिमय में, स्वामित्व, प्रबंधन और व्यापार के तीन कार्यों को एकल समूह में मिलाया जाता है। यहाँ विनिमय के ब्रोकर सदस्यों में स्वामी तथा व्यापारी दोनों होते हैं और वे आगे विनिमय का प्रबंधन भी करते हैं। कभी–कभी यह निर्णय लेते समय अधिकार के टकराव का

रूप भी धारण कर लेती है। दूसरी ओर एक डिम्यूच्वलाइज्ड विनिमय में ये सभी तीनों कार्य पूर्ण रूप से अलग होते हैं अर्थात् स्वामित्व, प्रबंधन और व्यापार अलग–अलग हाथों में होते हैं।

4.1.2 स्टॉक व्यापार

स्क्रीन आधारित व्यापार क्या है?

भारत के स्टॉक विनिमय में व्यापार व्यापार के तत्काल मिलान या रिकार्ड के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के बिना खुली नीति के माध्यम से होती थी। यह अधिक समय लेने वाला तथा अप्रभावी था। यह व्यापार परिमाण और दक्षता दोनों को सीमित करता था। दक्षता, लिक्विडिटी और पारदर्शिता उपलब्ध कराने के लिए एन एस इ ने राष्ट्रव्यापी, आन–लाइन पूर्णतः स्वचलित स्क्रीन आधारित व्यापार प्रणाली की शुरुआत की जहाँ कोई सदस्य कंप्यूटर में सेक्युरिटी की मात्राओं तथा लेन–देन संबंधी अपने पसंदीदा मूल्य को पंच कर सकता है, और ज्योंहिं किसी विपरीत पार्टी का मिलान बिक्रय या क्रय आदेश मिलता है, लेन–देन संपन्न हो जाता है।

एन इ ए टी क्या है?

एन एस इ व्यापार के लिए सेटेलाइट सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करने वाला विश्व का पहला विनिमय है। इसका व्यापार प्रणाली जिसे स्वतः व्यापार के लिए नेशनल एक्सचेंज फॉर ओटॉमेटिड ट्रेडिंग (एन इ ए टी) कहा जाता है, एक कलात्मक ग्राहक सेवा पर आधारित उपयोग है। सर्वर के अंत में सभी व्यापार सूचना को इन–मिमोरी डाटाबेस में उपयोगकर्ता के लिए न्यूनतम प्रतिक्रिया समय तथा अधिकतम सिस्टम उपलब्धता प्राप्त करने के लिए स्टोर किया जाता है। इसमें 99.7 प्रतिशत समय का रिकार्ड रहता है। एन इ ए टी प्रणाली में प्रविष्ट किये गये सभी व्यापार के लिए एक सेकंड से कम का एक समान प्रतिक्रिया समय होता है।

ब्रोकर के साथ किस तरह आदेश रखना चाहिए?

आप ब्रोकर के कार्यालय में जा सकते हैं या फोन, इंटरनेट पर आदेश दे सकते हैं, या जैसा कि मॉडल करार में परिभाषित किया गया है कि सभी ग्राहक को अपने ब्रोकर के साथ प्रवेश करने की आवश्यकता होती है।

कोई निवेशक किस प्रकार इंटरनेट आधारित व्यापार सुविधा तक प्रवेश करता है?

एन एस इ में अनेक ब्रोकर हैं जो अपने ग्राहकों को इंटरनेट आधारित व्यापार सुविधा उपलब्ध कराते हैं। इंटरनेट आधारित व्यापार किसी निवेशक को इंटरनेट के माध्यम से सेक्युरिटीयों को खरीदने या बेचने में समर्थ बनाता है जिसे कंप्यूटर से निवेशक के आवास पर या किसी अन्य जगह पर देखा जा सकता है। निवेशक को इंटरनेट आधारित सेवा का लाभ उठाने के लिए एन एस इ ब्रोकर के संपर्क में रहने की आवश्यकता होती है, जो उसे यह सेवा उपलब्ध कराता है।

कॉंट्रेक्ट नोट क्या है?

कॉंट्रेक्ट नोट ग्राहक के लिए किसी व्यापार सदस्य द्वारा विशेष दिन के व्यापार नोट की पुष्टि है। यह बिक्री या खरीद तथा व्यापार के निपटान के संबंध में ग्राहक और व्यापार सदस्य के बीच वैधानिक प्रवर्तनीय संबंध स्थापित करता है। यह निवेशक और व्यापार सदस्यों के बीच के विवाद या शिकायतों के समाधान में भी मदद करता है। विवाद की स्थिति में व्यापार सदस्यों के विरुद्ध शिकायत फाइल करना या मध्यस्थ सुनवाई करना पूर्वावश्यक हो जाता है। मान्य कॉंट्रेक्ट नोट निर्दिष्ट रूप में होना चाहिए, इसमें व्यापार का ब्यौरा पाया जाता है, आवश्यक मूल्य से स्टंपित किया रहता है तथा प्राधिकृत अधोहस्ताक्षरी द्वारा हस्ताक्षरित होता है। कॉंट्रेक्ट नोट को दोहरे रूप में रखा जाता है, व्यापार सदस्य और ग्राहक को एक–एक प्रति रखना चाहिए। उसमें पाये जाने हाले व्यौरे का सत्यापन हो जाने के बाद ग्राहक एक प्रति रख लेता है और पावती के साथ दूसरी प्रति को व्यापार सदस्य को वापस कर देता है।



स्टॉक ब्रोकर द्वारा उपलब्ध कॉंट्रेक्ट नोट में किस प्रकार का ब्यौरा वर्णित करने की आवश्यकता पड़ती है?

किसी ब्रोकर को स्टॉक एक्सचेंज द्वारा निर्दिष्ट फार्म में ग्राहकों को सभी लेन–देन का कॉंट्रेक्ट नोट निर्गम करना होता है। कॉंट्रेक्ट नोट में अन्य बातों के साथ–साथ निम्नलिखित होना चाहिए :

- सदस्य ब्रोकर का नाम, पता और सेबी पंजीकरण संख्या।
- भागीदारी, न्यासी (डेपोजिटरी) या प्राधीकृत अधोहस्ताक्षरी का नाम।
- कार्यकारी कार्यालय का पता, टेलिफोन संख्या, फैक्स संख्या, एक्सचेंज द्वारा दिये गये सदस्य का कोड संख्या।
- संपर्क संख्य, कॉंट्रेक्ट नोट निर्गम की तिथि, निपटान संख्या और निपटान के लिए समय सीमा।
- संघटक (ग्राहक) का नाम, कोड संख्या।
- व्यापार से संबंधित आदेश संक्या तथा आदेश का समय।
- व्यापार संख्या और व्यापार का समय।
- ग्राहक द्वारा खरीदे या बेचे गये सेक्युरिटी की मात्रा तथा प्रकार।
- ब्रोकरी तथा क्रय या विक्रय दर।
- सेवार कर दरें, सेक्युरिटी हस्तांतरण कर तथा ब्रोकर द्वारा लगाया जाने वाला कोई अन्य खर्च।
- कॉंट्रेक्ट नोट पर समुचित डाक टिकट लगाया जाना चाहिए या यह वर्णन करना चाहिए कि समेकित डाक टिकट का भुगतान कर दिया गया है।
- स्टॉक ब्रोकर या प्राधिकृत अधोहस्ताक्षरी का हस्ताक्षर।

किसी ब्रोकर द्वारा लिये जाने वाले शुल्क का अधिकतम ब्रोकरी कितना होता है?

कमीशन के रूप में किसी ब्रोकर द्वारा अपने ग्राहकों से ली जाने वाली शुल्क संबंधित खरीद या बिक्री में वर्णित मूल्य के 2.5 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकता है।

किसी व्यक्ति को शेयर खरीद या बिक्री के लिए सिर्फ मान्य स्टॉक एक्सचेंज से ही व्यापार क्यों करना चाहिए?

यदि कोई निवेशक स्टॉक एक्सचेंज से बाहर व्यापार करता है तो उसे किसी प्रकार की सुरक्षा नहीं मिलती है। विनिमय पर व्यापार करने से निवेशकों को उस समय बाजार में चल रहे बेहतर मूल्य प्रदान किया जाता है, किसी विपरीत पार्टी से जोखिम नहीं होता है जो निगम की (NSCCL) एन एस सी सी एल से किया जाता है, निवेशक के शिकायत तथा स्टॉक बाजार के पुनर्निर्माण तंत्र का निपटान, निवेशक सुरक्षा फंड से निर्दिष्ट सीमा तक सुरक्षा इत्यादि।

यह कैसे पता चलेगा कि ब्रोकर या उप–ब्रोकर पंजीकृत है?

सेबी द्वारा निर्गम पंजीकरण प्रमाण–पत्र की जाँच कर हम इसे सुनिश्चित कर सकते हैं। किसी ब्रोकर का पंजीकरण संख्या की शुरुवात 'आई एन बी' शब्दों से तथा उप–ब्रोकर के पंजीकरण संख्या की शुरुवात का 'आई एन एस' से होता है

स्टॉक बाजार में निवेश करने से पहले हमें क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

बाजार में निवेश करने से पहले कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं के नाम यहाँ दिये गये है :

- सुनिश्चित करें कि आपका ब्रोकर सेबी तथा विनिमय में पंजीकृत है तथा गैर पंजीकृत मध्यस्थ के साथ लेन देन नहीं करें।
- सुनिश्चित करें कि व्यापार के संचालन से एक कार्य दिवस के अंदर अपने सभी लेन देन का कॉंट्रेक्ट नोट आपको मिल रहा है।
- सभी निवेश में किसी प्रकार के जोखिम पाये जाते हैं। इसमें पाये जाने वाले जोखिम से निवेशकों को जागरुक होना चाहिए तथा अपने



- कंपनी की मौलिकता का अध्ययन कर सूचित निर्णय लें। कंपनी जिस व्यापार में है उसका पता करें, उसकी भविष्य की योजना, प्रबंधन गुणवत्ता, पहले का रिकार्ड इत्यादि स्रोत कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट, आर्थिक पत्रिका तथा व्यापारियों के पास उपलब्ध डाटाबेस तथा अपने वित्तीय सलाहकार से प्राप्त कर सकते हैं।
- यदि आपके वित्तीय सलाहकार या ब्रोकर ने आपको उस कंपनी में निवेश करने की सलाह देता है जिसके बारे में आपने कभी सुना भी नहीं हैं तो ऐसी स्थिति में सावधान रहें। निवेश से पहले कंपनी की जाँच करने में कुछ समय व्यतीत करें।
- किसी कंपनी के अच्छे परिणाम या समाचार रिपोर्ट की घोषणा से आकर्षित नहीं होना चाहिए। किसी स्टॉक में निवेश करने से पहले आप अपना अनुसंधान करें।
- कंपनी के बारे में पर्याप्त अध्ययन किये बिना इंटरनेट वेबसाइट के आधार पर स्टॉक में आकर्षित नहीं होना चाहिए।
- अति अल्प कीमत वाले स्टॉक या पेनी स्टॉक में निवेश उच्च वापसी की गारंटी नहीं देती है।
- उस स्टॉक से सावधान रहें जिसमें मूल्य या व्यापार कार्य में अचानक उतार–चढ़ाव होती है।
- कोई सलाह या तरीका जो दावा करता है कि इसमें उच्च वापसी की आशा की जाती है, विशेषकर जल्दीबाजी में कार्य करने के लिए, वह जोखिम भरा हो सकता है तथा इसमें आपके कुछ या अधिकांश धन की हानि हो सकती है।

स्टॉक बाजार में निवेश करने से पहले निवेशकों को किन–किन बातों पर ध्यान देना चाहिए कि क्या करें और क्या नहीं करें?

- मध्यस्थ (ब्रोकर या उप–ब्रोकर) के पास सेबी का मान्य प्रमाण–पत्र को सुनिश्चित करें।
- अपने ब्रोकर या उप–ब्रोकर के साथ नियमों और प्रावधानों के साप–साफ निर्धारण के लिए करार करें।
- सुनिश्चित करें कि 'अपने ग्राहक को जाने' फॉर्म में आप अपना सभी ब्यौरा दे रहे हैं।
- सुनिश्चित करें कि आप 'जोखिम डिस्क्लोजर दस्तावेज को सावधानी पूर्वक पढ़ लिये हैं और समझ लिये हैं, फिर इसकी पावती भेजें।
- प्रति दिन किये गये व्यापार के लिए सिर्फ अपने ब्रोकर द्वारा निर्गम किये गये कॉंट्रेक्ट नोट पर बल दें।
- लेन देन के 24 घंटे के अंदर अपने ब्रोकर से कॉंट्रेक्ट नोट की प्राप्ति सुनिश्चित करें।
- सुनिश्चित करें कि कॉंट्रेक्ट नोट में ब्रोकर का नाम, व्यापार का समय तथा संख्या, लेन देन का मूल्य, ब्रोकरी, सेवा कर, सुरक्षा लेन देन कर इत्यादि व्यौरा उपलब्ध है तथा यह ब्रोकर के प्राधिकृत अधो–हस्ताक्षरी द्वारा हस्ताक्षरित है।
- लेन देन की वास्तविकता का फिर से जाँच करने के लिए, एन एस इ वेबसाइट (www.nseindia.com) पर लॉग–इन करें तथा एन एस इ द्वारा बनाए गए व्यापार जाँच सुविधा पर जाएँ। चेक या माँग–ड्राफ्ट सिर्फ अपने ब्रोकर के नाम से ही जारी करें, जैसा ब्रोकर के कॉंट्रेक्ट नोट या सेबी पंजीकरण प्रमाण–पत्र पर प्रतीत होता है।
- अपनी बाध्यता की पूर्ति के लिए अपने ब्रोकर को शेयर सुपुर्द करते समय, सुनिश्चित करें कि अपने ब्रोकर के सिर्फ प्राधिकृत खाते पर ही सुपुर्दगी निर्देश बनाया गया है।
- अपने ब्रोकर से फंड और सेक्युरिटी के सावधिक खाता विवरण पर बल दें। अपने खाते की अच्छी तरह से जाँच करें तथा उसका मिलान करें तथा किसी कमीं की स्थिति में इसे अपने ब्रोकर के तत्काल बतायें। सुनिश्चित करें कि आप अपने ब्रोकर से भुगतान किये जाने के एक कार्य दिवस के अंदर अपने लेन देन की पावती ले रहे हैं।

सुनिश्चित करें कि आप किसी अन्य के लिए लेन देन नहीं कर रहे हैं या आप अपने नाम पर व्यापार करें तथा फिर अपने परिवार के सदस्य या अपने मित्र के बैंक खाते से चेक जारी करें।

- ठीक इसी तरह, डिमट सुपुर्दगी निर्देश पर्ची आपके अपने डिमट खाते से होना चाहिए, नहीं कि आपके किसी परिवार के सदस्य या मित्र के खाते का।
- सेक्युरिटी भुगतान बाध्यता की पूर्ति के समय खाली सुपुर्दगी निर्देश पर हस्ताक्षर नहीं करें।
- नियत वापसी सुनिश्चित करते हुए बाजार का कोई भी मध्यस्थ जमा स्वीकार नहीं कर सकता है। अतः वापसी की सुनिश्चितता के बदले अपना धन जमा नहीं करायें।
- पी एम एस के लिए सेबी द्वारा विशिष्ट अनुमोदन प्राप्त मध्यस्थ ही 'पोर्टफोलियो प्रबंधन सेवा' प्रदान कर सकता है। अतः पोर्टफोलियो प्रबंधन के लिए अपने फंड को किसी अनधिकृत व्यक्ति को नहीं दें।
- सुपुर्दगी निर्देश पर्ची बहुत ही बहुमूल्य दस्तावेज है। कभी भी खाली सुपुर्दगी निर्देश पर हस्ताक्षर नहीं करें। बाध्यता के लिए भुगतान के समय सुनिश्चित करें कि सुपुर्दगी निर्देश फॉर्म पर प्राधिकृत मध्यस्थ का सही आइ डी भरा गया है।

- किसी प्राधिकृत मध्यस्थ से फंड लेते समय सावधान रहें क्योंकि ऐसा लेन देन विनिमय के निपटान गारंटी तंत्र के अंतर्गत नहीं आता है।
- आपको आवंटित किये गये विशिष्ट ग्राहक कोड के अंतर्गत सभी आदेश के निष्पादन पर बल दें।

अपने डी पी खाते के संचालन के लिए जब आप किसी को 'प्रतिफंड' बनाते हैं तो सुनिश्चित करें कि :

- आपका प्राधिकरण सिर्फ पंजीकृत मध्यस्थ के लिए ही है।
- यह प्राधिकरण डेबिट तथा क्रेडिट के सिर्फ सीमित लेन देन के लिए ही है जो सिर्फ उसी मध्यस्थ के मान्य लेन देन के लिए है।
- आप डी पी विवरण को समय–समय पर अर्थात् प्रति माह या पंद्रह दिनों में यह जानने के लिए सत्यापित करें कि आपके खाते से कोई अनधिकृत लेन देन नहीं की गई है।
- आपके द्वारा दिया गया प्राधिकार का उचित रूप से प्रयोग किया गया है जिसके लिए कि आपने प्राधिकृत किया था।
- गलत प्रविष्टि की स्थिति में आप इसे प्राधिकृत मध्यस्थ को लिखित में रिपोर्ट करें।
- बिना हस्ताक्षर किया गया या नकली कॉंट्रेक्ट नोट स्वीकार नहीं करें।
- किसी अनधिकृत व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षरित कॉंट्रेक्ट नोट स्वीकार नहीं करें।
- ब्रोकर को भुगतान करने या सुपुर्दगी में देरी नहीं करें।
- किसी आशंका या विवाद की स्थिति में, इसे तत्काल लिखित रूप में ब्रोकर को दें (ब्रोकर द्वारा पावती) और उसके उचित निपटन को सुनिश्चित करें।
- उप–ब्रोकर से विवाद की स्थिति में, जितना जल्द हो सके मुख्य ब्रोकर को लिखित रूप में सूचित करें। यदि आपका दलाय या उप–ब्रोकर विशिष्ट अवधि में शिकायत का हल नहीं निकालता है तो इसे एन एस इ के 'निवेशक सेवा विभाग' को बतायें।
- एन एस इ के 'निवेशक शिकायत विभाग' में शिकायत दर्ज कराते समय, यह अति आवश्यक है कि आप कॉंट्रेक्टनोट, शेयर के भुगतान या सुपुर्दगी का प्रमाण इत्यादि जैसे सभी आवश्यक दस्तावेज शिकायत के साथ जमा करें। याद रखें कि पर्याप्त दस्तावेज के अभाव में, शिकायत का समाधान कठिन हो जाता है।
- कोई लेन देन करने से पहले अपने आप को स्टॉक एक्सचेंज या सेबी द्वारा जारी नियमों, विनियमों और कार्यवृत्तों से अवगत करायें।

4.2 सेकेंडरी बाजार के प्रोडक्ट

सेकेंडरी बाजार में उपयोग किये जाने वाले प्रोडक्ट कौन–कौन से हैं?

सेकेंडरी बाजार में उपयोग की जाने वाली मुख्य वित्तीय प्रोडक्ट या उपकरण निम्नलिखित हैं जिसे विस्तृत रूप से शेयर और बॉण्ड में विभाजित किया जा सकता है:

शेयर

इक्विटी शेयर : किसी इक्विटी शेयर को आम तौर पर सामान्य शेयर के नाम से जाना जाता है, यह व्यापार जोखिम में वित्तीय स्वामित्व का प्रतिनिधित्व करता है।

अधिकार प्रस्ताव या अधिकार शेयर : वर्तमान शेयरधारकों को पहले से पाये जाने वाले शेयर के अनुपात में नई सेक्युरिटी का निर्गमन। उदाहरण के लिए 125 रुपये पर 2:3 का अधिकार निर्गमन किसी शेयरधारक को 125 रुपये प्रति शेयर की दर से प्रत्येक 3 शेयर में 2 शेयर प्राप्त करने का हक देता है।

बोनस शेयर : शेयरधारक द्वारा रखे गये शेयर के आधार पर कंपनी द्वारा उपलब्ध मूल्य रहित शेयर।

प्रिफरेंस शेयर : इस प्रकार के शेयर का मालिक नियमित रूप से इक्विटी शेयर पर लाभांश के भुगतान से पहले नियत लाभांश या नियत दर पर आकलित लाभांश का हकदार होता है। ये इक्विटी शेयरधारकों पर अधिभार पर प्राथमिकता का लाभ भी उठाता है। लेकिन लिक्विडिटी की स्थिति में, इनका दावा कंपनी के जमाधारकों, बॉण्डधारकों तथा डिबेंचर धारकों से कम रैंक पाता है।



समेकित प्रिफरेंस शेयर : प्रिफरेंस शेयर वह है जिसपर भुगतान नहीं किये जाने की स्थिति में लाभांश बढ़ता जाता है। प्रिफरेंस लाभांश का सभी बकाया इक्विटी शेयर पर लाभांश का भुगतान करने से पहले भुगतान कर देना होता है।

समेकित परिवर्तनीय प्रिफरेंस शेयर : प्रिफरेंस शेयर का एक प्रकार जहाँ भुगतान नहीं किये जाने की स्थिति में समान संग्रह पर लाभांश का भुगतान किया जाता है। किसी विशिष्ट दिवस के बाद, ये शेयर कंपनी के इक्विटी पूँजी में परिवर्तित हो जाएगा।

बॉण्ड : बॉण्ड ऋण को सूचित करने वाला एक विनिमेय प्रमाण–पत्र है। यह सामान्यतः असुरक्षित होता है। ऋण सुरक्षा सामान्यतः किसी कंपनी, नगरपालिका या सरकारी एजेंसी द्वारा निर्गम किया जाता है। बॉण्ड निवेशक जारी करने वाला को धन कर्ज देता है, और जारी करने वाला बदले में विशिष्ट मेच्योरिटी तिथि पर ऋण चुकाने का वचन देता है। जारी करने वाला सामान्यतः ऋण की पूरी अवधि के लिए सावधिक ब्याज का भुगतान करता है। बॉण्ड के विभिन्न प्रकार निम्नलिखित हैः

शून्य कूपन बॉण्ड : यह बॉण्ड छूट पर निर्गम की जाती है और अंकित मूल्य पर इसका फिर से भुगतान किया जाता है। निर्गम मूल्य और विमोचन मूल्य का अंतर प्राप्तिकर्ता के वापसी को सूचित करता है। इस बॉण्ड के क्रेता बॉण्ड की मेच्योरिटी पर सिर्फ एक बार भुगतान पाता है।

परिवर्तनीय बॉण्ड : यह बॉण्ड किसी नियत परिवर्तन मूल्य पर निवेशक को बॉण्ड को इक्विटी में बदलने का विकल्प देता है

खजाना बिल : अल्प समय (एक वर्ष तक)के लिए अपने नकद आवश्यकता को लगाने के लिए सरकार द्वारा उपलब्ध जारीकर्ता के छूट का सुरक्षा।

4.2.1 इक्विटी निवेश

किसी व्यक्ति को विशेष रूप से इक्विटी में निवेश क्यों करना चाहिए?

जब आप किसी कंपनी के शेयर खरीदते हैं, आप उस कंपनी का शेयरधारक बन जाते हैं। शेयर को इक्विटी भी कहा जाया है। इक्विटी में समय के अनुसार मूल्य बृद्धि की क्षमता होती है। अनुसंधान साबित करता है कि निवेश वापसी के अन्य अधिकांश प्रकारों में इक्विटी की वापसी बेहतर होता है। निवेशक इक्विटी शेयर या इक्विटी पर आधारित म्यूचुवल फण्ड खरीदता है, क्योंकिः–

- लंबी अवधि के निवेश के लिए अन्य निवेश विकल्प की तुलना में इक्विटी को अधिक फायदेमंद माना जाता है।
- अनुसंधान से यह साबित हुआ है कि लंबी अवधि के निवेश वाले किसी शेयर में निवेश किसी अन्य निवेश की तुलना में अधिक वापसी देता है। अंतिम पंद्रह वर्ष की अवधि में स्टॉक बाजार का औसत वार्षिक वापसी यदि कोई निफ्टी को वापसी आकलन के बेंचमार्क के रूप में लेता है तो यह लगभग 16 के आसपास है।

फिर भी इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सभी इक्विटी निवेश समान रूप से उच्च वापसी का गारंटी देता है। इक्विटी उच्च जोखिम निवेश है। जितना उच्च जोखिम होता है उतनी ही अधीक वापसी होती है, उच्च जोखिम यह भी सूचित करता है कि मूल्य के विपरीत दिशा में जाने के कारण निवेशक अपने कुछ या सभी निवेश को खो देने के लिए अचल है। किसी व्यक्ति को निवेश किये जाने वाले इक्विटी बाजार और स्टॉक का निवेश करने से पहले सावधानीपूर्वक अध्ययन करने की आवश्यकता होती है।

भारत में इक्विटी पर औसत वापसी क्या रहा है?

यदि हम पिछले पंद्रह वर्षों तक के निफ्टी सूचकांक वापसी को लें तो भारतीय स्टॉक बाजार निवेशकों को शेयर मूल्य के वृद्धि पर या वार्षिक रूप से पूँजी वृद्धि पर औसतन 16 प्रतिशत के आस–पास वापसी की है। इसके अतिरिक्त औसत स्टॉक पर वार्षिक रूप से 1.5 प्रतिशत लाभांश का भुगतान किया है। लाभांश किसी शेयर के अंकित मूल्य का प्रतिशत है जो कोई कंपनी अपने शेयरधारकों को अपने वार्षिक लाभ से वापस करती है। निवेश के अधिकांश दूसरे भाग के निवेश की तुलना में यदि लंबी अवधि तक निवेश करें तो इक्विटी शेयर में निवेश उच्च वापसी दर प्रदान करता है।



किसी स्टॉक के मूल्य को प्रभावित करने वाले कौन से कारक हैं?

विस्तृत रूप से दो कारक है : (1) स्टॉक आधारित और (2) बाजार आधारित।
स्टॉक आधारित कारक कंपनी के बारे में लोगों की अपेक्षा, इसके भविष्य में अर्जन क्षमता, वित्तीय स्वास्थ्य प्रबंधन, प्रौद्योगिकी स्तर और बाजार कौशल से संबंधित है।

बाजार आधारित कारक पूरी तरह से स्टॉक बाजार की ओर निवेशक के मनोभाव से प्रभावित होता है। यह कारक किसी विशेष कंपनी के प्रदर्शन से अधिक वहाँ के वातावरण पर निर्भर करती है। किसी अर्थव्यवस्था, राजनीतिक या रेगुलेशन वातावरण के पक्ष की घटना, जैसे उच्च आर्थिक विकास, मनचाहा बजट, स्थिर सरकार इत्यादि निवेशकों में सुख–बोध जैसी ईंधन भर सकती है, परिणामस्वरूप बाजार में उछाल आती है। दूसरी ओर अनुपयुक्त घटना जैसे युद्ध, आर्थिक संकट, साम्प्रदायिक दंगे, अल्प सरकार इत्यादि कुछ कंपनी के अच्छे प्रदर्शन के बावजूद बाजार को ह्रास करती है। फिर भी बाजार के सापेक्षिक कारक का प्रभाव सामान्यतः अल्प कालिक होते हैं। उतार और चढ़ाव के बावजूद, स्टॉक सापेक्षिक कारक पर आधारित लंबे अवधि तक चलने वाले स्टॉक का मूल्य स्थिर हो जाते हैं।

वृद्धि स्टॉक या मूल्य स्टॉक जैसे शब्दों से क्या समझते हैं ?

वृद्धि स्टॉक : निवेश के संसार में हम वृद्धि स्टॉक, मूल्य स्टॉक इत्यादि जैसे शब्दों से गुजरते हैं। जिस कंपनी का बिक्री तथा अर्जन की क्षमता में वृद्धि उत्कृष्ट होती है, वह बाजार के या उसी उद्योग के अन्य स्टॉक के अन्य कंपनियों से अधिक तीव्र गति से विकास करती है तथा इसे वृद्धि स्टॉक कहते हैं। ये कंपनियाँ सामान्यतः अल्प लाभांश का भुगतान करती है या लाभांश का भुगतान नहीं भी करती है तथा इसके बदले आगे की वृद्धि के लिए अपने व्यवसाय में इसे पुनर्निवेश करना पसंद करती है।

मूल्य स्टॉक : यहाँ अन्य निवेशकों द्वारा छोड़े गये स्टॉक को देखना होता है, जिसका 'गुप्त मूल्य' हो सकता है। ये कंपनियाँ किसी बुरी घटना के कारण मूल्यों का मारा हो सकती है, या ऐसे उद्योग में हो सकते हैं जहाँ अधिकांश निवेशकों को आकर्षित नहीं कर सकती हो। फिर भी, यदि कोई कंपनी अपने स्टॉक को घटते देख रही हो, उसके नाम पर संपत्ति होती है, जैसे– मकान, चल संपत्ति, माल–सूची, सहायक संपत्ति इत्यादि। इन संपत्ति में यद्यपि कईयों के अब भी मूल्य होते हैं, तथापि ये मूल्य स्टॉक के मूल्य में रिफ्लेक्ट नहीं किये जाते हैं। मूल्य निवेशक उस स्टॉक को खरीदना चाहता है जो कम कीमत के होते हैं, और उस स्टॉक को तब तक बनाये रखता है जब तक कि अधिकांश बाँकि बाजार कंपनी की संपत्ति का वास्तविक मूल्य महसूस नहीं कर लेते हैं। मूल्य निवेशक किसी कंपनी के उस स्टॉक को खरीदने का इरादा रखता है, जो सामान्यतः कंपनी की वर्तमान बाजार मूल्य और कुछ व्यवसाय सिद्धांतों पर आधारित होती है। वे पी और इ के अनुपात को किसी निश्चित सीमा से नीचे पसंद करते हैं; किसी निश्चित आधार पर कुल बिक्री कंपनी के बाजार पूँजीकरण से सापेक्षिक, या बाजार मूल्य इत्यादि।

किसी व्यक्ति को इक्विटी शेयर कैसे मिल सकता है?

आप निगमों द्वारा प्राथमिक बाजार में शामिल प्रस्तावों में अंशदान कर सकते हैं। प्राथमिक बाजार में, निगमों द्वारा नये जन निर्गमन के माध्यम से या निजी स्थापन्न द्वारा रिसोर्स को फैलाया जाता है (आइ पी ओ)। वैकल्पिक रूप से आप सेकेंडरी बाजार से शेयर खरीद सकते हैं। सेक्युरिटीयों को खरीदने और बेचने के लिए वैकल्पिक रूप में आपको किसी मान्य स्टॉक एक्सचेंज के सेबी पंजीकृत व्यापार सदस्य (ब्रोकर) के पास जाना चाहिए।

बिड और माँग मूल्य क्या है?

'बिड' क्रेता का मूल्य होता है। यह ऐसा मूल्य होता है जिसे आपको जानने कि आवश्यकता होती है कि आपको स्टॉक की बिक्री कब करना है। बिड स्टॉक के किसी तैयार क्रेता के लिए दर या मूल्य होता है, जिसे आप बेचना चाहते हैं।

'माँग' (या प्रस्ताव) वह है जिसे आपको जानने की जरुरत होती है कि आप कब खरीद रहे हैं, अर्थात् यह दर या मूल्य है जिस पर कोई बिक्रेता अपना स्टॉक बेचने के लिए तैयार होता है। बिक्रेता अपना स्टॉक तभी बेचेगा जब उसे उद्धृत (Ask) 'माँग' मूल्य मिलेगा।

यदि कोई निवेशक क,ख,ग लिमिटेड के स्टॉक पर उद्धरण के लिए कंप्यूटर स्क्रीन देखता है, तो उसे कुछ–कुछ इस प्रकार दिखाई देगाः

बिड (क्रेता की ओर)		माँग (बिक्रेता की ओर)	
मात्रा	मूल्य (रुपया)	मात्रा	मूल्य (रुपया)
1000	50.25	50.35	2000
500	50.10	50.40	1000
550	50.05	50.50	1500
2500	50.00	50.55	3000
1300	49.85	50.65	1450
कुल **5850**			**8950**

यहाँ, बायीं ओर बिड मात्रा और मूल्य के बाद, जहाँ दायीं ओर हम माँगी गई मात्रा और मूल्य पाते हैं। सबसे अच्छा खरीद (बिड) आदेश उच्चतम मूल्य के आदेश में है और इसलिए यह बिड की ओर से पहली लाइन में रखा गया है (1000 शेयर 50.25 रुपया प्रति शेयर की दर से)। सबसे अच्छा बिक्री (माँग) आदेश निम्नतम बिक्री मूल्य का आदेश है (2000 शेयर 50.35 रुपया प्रति शेयर की दर से)। सबसे अच्छे बिड के मूल्य और माँग के मूल्य में अंतर को बिड–माँग फैलाव कहते हैं और यह किसी स्टॉक के लिक्विडिटी का सूचक होता है। यह अंतर जितना कम होता है, स्टॉक उतना ही अधिक लिक्विड या व्यापारिक होता है।

पोर्टफोलियो क्या है?

पोर्टफोलियो विभिन्न निवेश संपत्तियों का सम्मिलित रूप होता है तथा किसी निवेशक के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिया मिलाया जाता है। आपके पोर्टफोलियो के भाग के रूप में माने जाने वाले चीजों में आपके द्वारा शेयर, डिबेंचर, बॉण्ड, म्यूचुवल फंड यूनिट से स्वामित्व का कोई संपत्ति शामिल है जैसे– सोना, कला या वास्तविक राजस्व इत्यादि। फिर भी अधिकांश निवेशकों के लिए एक पोर्टफोलियो शेयर, डिबेंचर, सावधिक जमा, म्यूचुवल फंड यूनिट जैसे वित्तीय उपकरण में निवेश को सार्थक बनाता है।

डाइवर्सीफिकेशन क्या है?

यह एक जोखिम प्रबंधन तकनीक है जो किसी एक पोर्टफोलियो के अंतर्गत निवेश के विस्तृत रूप को मिश्रित करता है। इसे संपूर्ण पोर्टफोलियो प्रदर्शन पर किसी एक सेक्युरिटी के प्रभाव को कम करने के लिए डिजाइन किया गया है। डाइवर्सीफिकेशन किसी पोर्टफोलियो में जोखिम को कम करने का संभवतः सबसे अच्छा तरीका है।

डाइवर्सीफाइड पोर्टफोलियो के होने का क्या लाभ है?

एक अच्छा निवेश पोर्टफोलियो संपत्ति वर्ग के विस्तृत परिसर का मिश्रण है। समय के किसी बिंदु पर अलग–अलग सेक्युरिटी विभिन्न प्रकार से प्रदर्शन करती है, इसलिए संपत्ति के मिश्रित प्रकार से किसी एक सेक्युरिटी के पतन के प्रभाव से आपका संपूर्ण पोर्टफोलियो प्रभावित नहीं होती है। जन आपका स्टॉक नीचे जाता है, तो फिर भी आपके पोर्टफोलियो में बॉण्ड का स्थायित्व पाया जा सकता है। सभी प्रकार के अकादमी अध्ययन और सूत्र है जो बताता है कि डाइवर्सीफिकेशन आवश्यक क्यों है, लेकिन यह वास्तविक रूप में 'सभी अंडे एक टोकरी में नहीं रखने' जैसा अभ्यास है। यदि आप अपने निवेश को विभिन्न प्रकार के बाजार तथा संपत्तियों में फैलाते हैं, तो आप किसी एक संपत्ति वर्ग के प्रतिकूल वापसी के प्रभाव से अपने संपूर्ण पोर्टफोलियो को जोखिम के प्रभाव से बचा सकते हैं।

4.2.2. ऋण निवेश

'ऋण उपकरण' क्या है?

ऋण उपकरण किसी कॉंट्रेक्ट का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ लेनदार द्वारा देनदार को ब्याज की अवधि, मूलधन राशी का फिर से भुगतान जैसे पूर्व निर्धारित शर्तों पर एक पार्टी दूसरे पार्टी को धन उधार देती है।

भारतीय सेक्युरिटी बाजार में, 'बॉण्ड' शब्द केन्द्र, राज्य सरकार तथा सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन द्वारा उपलब्ध ऋण उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है और 'डिबेंचर' शब्द का उपयोग निजी निगम क्षेत्र द्वारा उपयोग की जाने वाले उपकरणों के रूप में किया जाता है।

कर्ज उपकरणों की विशेषताएँ क्या हैं?

सभी ऋण उपकरण के तीन विशेषताएँ होते है : मेच्योरिटी , कूपन और मूलधन।

मेच्योरिटी : किसी बॉण्ड की मेच्योरिटी उस तिथि को बताता है जब वह परिपक्व होता है, यह वह तिथि होती है जब कोई लेनदार मूलधन के फिर से भुगतान के लिए राजी होता है। मेच्योरिटी की अवधि किसी बॉण्ड के परिपक्व होने में बचे वर्षों की संख्या बताता है। मेच्योरिटी की शर्त बॉण्ड के निर्गमन की तिथि से प्रति दिन परिवर्तित होती है। किसी बॉण्ड के मेच्योरिटी की अवधि ऐसी तिथि तथा मेच्योरिटी की तिथि के बीच के अंतर के रूप में किसी भी तिथि को आकलित की जा सकती है। यह बॉण्ड की अवधि तथा कार्यकाल के रूप में भी जाना जाता है।

कूपन : लेनदार (यह बॉण्ड का जारी करने वाला भी होता है) द्वारा देनदार (बॉण्ड का ग्राहक) को सावधिक ब्याज का भुगतान कूपन कहलाता है। कूपन दर वह दर होता है जिस पर कि ब्याज का भुगतान किया जाता है तथा यह सामान्यतः बॉण्ड के सममूल्य के प्रतिशत के रूप में जाना जाता है।

मूलधन : मूलधन वह राशी है जो कर्ज लिया जाता है, और इसे बॉण्ड का सममूल्य या अंकित मूल्य भी कहा जाता है। कूपन मूलधन तथा कूपन दर का गुणनफल है।

बॉण्ड का नाम स्वतः किसी बॉण्ड के मुख्य गुणों को बताता है। उदाहरण के लिए एक (GSCG 2008) जी एस सी जी 2008 11.40 प्रतिशत बॉण्ड केन्द्र सरकार के बॉण्ड को बताता है जो 2008 में परिपक्व हो रहा है तथा 11.40 प्रतिशत कूपन का भुगतान कर रहा है। चूँकि केन्द्र सरकार के बॉण्ड का सममूल्य 100 रुपया होता है और कूपन का भुगतान सामान्यतः अर्द्ध वार्षिक होती है, यह बॉण्ड मेच्योरिटी तक 5.70 रुपये अर्द्ध वार्षिक कूपन के रूप में भुगतान करेगा।

डिबेंचर या बॉण्ड के माध्यम से भुगतान किये जाने वाले डिबेंचर से क्या तात्पर्य है?

किसी विशिष्ट अवधि के लिए राशी उधार लेने हेतु लेनदार (कंपनी) द्वारा देनदार (डिबेंचरधारी) को भुगतान की जाने वाली राशी ब्याज कहलाती है। ब्याज का भुगतान वार्षिक, अर्ध वार्षिक, तिमाही या मासिक किया जा सकता है तथा यह सामान्यतः बॉण्ड के अंकित मूल्य (बॉण्ड प्रमाण–पत्र पर लिखे मूल्य) पर भुगतान किया जाता है।

भारत के ऋण बाजार के विभिन्न भाग कौन–कौन हैं?

भारत के ऋण बाजार के तीन मुख्य भाग हैं, यथा,

(1) सरकारी सेक्युरिटी ,
(2) सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई (पी एस यू) बॉण्ड, और
(3) कॉपेरिट सेक्युरिटी।



सरकारी सेक्युरिटी बाजार में केन्द्र, राज्य तथा राज्य–प्रायोजित सेक्युरिटी शामिल हैं। हाल ही में कुछ दिन पहले नगरपालिका जैसे स्थानीय इकाई ने भी फंड के लिए ऋण बाजार में प्रवेश करना प्रारंभ कर दिया है। कुछ पी एस यू बॉण्ड कर रहित होते हैं, जबकि अधिकांश बॉण्ड जिसमें सरकारी सेक्युरिटी भी शामिल हैं, कर रहित नहीं होते हैं। निगम बॉण्ड बाजार में व्यावसायिक पेपर और बॉण्ड शामिल होते हैं। इन बॉण्ड की संरचना निवेशकों तथा जारी करने वाला निगम के आवश्यकता की उपयुक्तता के लिए बनाया गया है तथा इसमें ब्याज भुगतान तथा विमोचन से संबंधित विभिन्न टेलर–निर्मित विशेषता शामिल किया गया है।

ऋण बाजार के भागीदार कौन–कौन होते हैं?

व्यापार के दिये गये विस्तृत आकार में, ऋण बाजार प्रबल रूप से एक थोक बाजार होता है जिसमें प्रबल रूप से निवेशकों की भागीदारी होती है। ऋण बाजार के निवेशकों में मुख्य रूप से बैंक, भविष्य फंड, वित्तीय संस्थान, म्युचुवल फंड, बीमा कंपनियाँ तथा निगम शामिल होते हैं।

क्या बॉण्ड अपने क्रेडिट गुण से संबंधित होते हैं?

अधिकांश बॉण्ड या डिबेंचर निर्गम विशिष्ट क्रेडिट रेटिंग एजेंसी द्वारा श्रेणीकृत किया जाता है। भारत के क्रेडिट रेटिंग एजेंसी हैं– (CRISIL, CARE, ICRA, Fitch) सी आर आई एस आई एल, सी ए आर ई, आई सी आर ए तथा फिच। किसी बॉण्ड का प्रोडक्ट क्रेडिड (सुरक्षा) रेटिंग के विपरीत परिवर्तित होते हैं। जितना सुरक्षित उपकरण होता है उतना ही कम ब्याज दर उपलब्ध की जाती है।

हम ऋण बाजार में सेक्युरिटी कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

आप प्राथमिक बाजार में सरकार या निगमों द्वारा किये गये निर्गमन में अंशदान कर सकते हैं। वैकल्पिक रूप से आप स्टॉक एक्सचेंज के माध्यम से सेकेंडरी बाजार से इसे खरीद सकते हैं।

अध्याय - 5

डेरिवेटिव

डेरिवेटिव के भेद कौन–कौन से हैं?

फॉरवर्ड : फॉरवर्ड कॉंट्रेक्ट (अग्रिम अनुबंध) दो हस्तियों के बीच का व्यापारिक कॉंट्रेक्ट होता है, जहाँ भविष्य में विशिष्ट तिथि पर आज के पूर्व–निर्धारित मूल्य के अनुसार समझौता होता है।

फ्यूचर : फ्यूचर कॉंट्रेक्ट (भविष्य अनुबंध) भविष्य में निश्चित समय में निश्चित मूल्य पर धन को खरीदने या बेचने के लिए दो पार्टी के बीच का करार है। भविष्य कॉंट्रेक्ट एक विशेष फॉरवर्ड कॉंट्रेक्ट इसलिए है कि भविष्य कॉंट्रेक्ट मानकीकृत विनिमय–व्यापार कॉंट्रेक्ट है, अर्थात् यह निफ्टी सूचकांक का भविष्य है।

विकल्प : विकल्प एक समविदा है जो कथित तिथि पर दिये गये मूल्य पर खरीदने या बेचने के लिए अधिकार देता है, बाध्यता नहीं। जहाँ विकल्प का कोई क्रेता प्रिमियम का भुगतान कर अपने विकल्प को खरीदता है, वहीं किसी विकल्प का लेखक वह होता है जो वैकल्पिक प्रिमियम प्राप्त करता है और इस प्रकार यदि क्रेता इसे उसके ऊपर प्रयोग करता है तो वह धन को खरीदने या बेचने के लिए बाध्य होता है। विकल्प दो प्रकार के होते हैं– कॉल और पुट विकल्प :

'काल' क्रेता को दिये गये संपत्ति की मात्रा को उस मूल्य पर भविष्य में दिये गये तिथि पर या उससे पहले खरीदने का अधिकार देता है, उसे इसके लिए बाध्य नहीं करता है।

'पुट' क्रेता को दिये गये संपत्ति की मात्रा को उस मूल्य पर भविष्य में दिये गये तिथि पर या उससे पहले बेचने का अधिकार देता है, उसे इसके लिए बाध्य नहीं करता है।

वर्तमान में, एन एस इ पर भविष्य तथा विकल्प निफ्टी, सीएन एक्स आइ टी, बैंक निफ्टी तथा 116 एकल स्टॉक पर व्यापार किया जाता है।

वारंट : विकल्प का जीवन सामान्यतः एक वर्ष का होता है। विनिमय पर व्यापार किये जाने वाले अधिकांश विकल्पों की मेच्योरिटी नौ महीने की होती है। लंबी तिथि वाले विकल्प को वारंट कहा जाता है और इसे सामान्यतः काउण्टर से परे बेचा जाता है।

'विकल्प प्रिमियम' क्या है?

किसी विकल्प कॉंट्रेक्ट को खरीदते समय, क्रेता को प्रिमियम का भुगतान करना होता है। प्रिमियम खरीदने या बेचने का अधिकार प्राप्त करने का मूल्य होता है। यह वह मूल्य होता है जिसका भुगतान विकल्प क्रेता द्वारा विकल्प विक्रेता को खरीदने या बेचने का अधिकार प्राप्त करने के लिए करना होता है। विकल्प प्रिमियम का भुगतान हमेशा पहले किया जाता है।

'वस्तु विनिमय' क्या है?

वस्तु विनिमय वस्तु के भविष्य व्यापार को संगठित करने वाले किसी अन्य निगम इकाई का एक संगठन या एक कंपनी है। विस्तृत रूप में यह किसी यंत्र द्वारा चलाये जाने वाले संगठित बाजार स्थल को शामिल करने के लिए लिया जाता है, जो क्रेता तथा विक्रेता के बीच प्रभावी प्रतियोगिता को बढ़ाता है। इसके अंतर्गत निविदा विनिमय आता है, थोक बाजार नहीं, जहाँ व्यापार स्थानीकृत होता है, लेकिन कई असंबंधित वैयक्तिक लेन–देन में क्रेता और विक्रेता के संचय के बीच प्रभावी रूप से कार्य करता है।



'वस्तु' से क्या तात्पर्य है?

फॉरवर्ड कॉंट्रेक्ट अधिनियम (एफ सी आर ए), 1952 'माल' को 'क्रियान्वित दावा, धन तथा सेक्युरिटी के अतिरिक्त चल संपत्ति का सभी प्रकार माना है'। ऐसे वस्तुओं तथा मालों में भविष्य का व्यापार संगठित की जाती है, जैसा कि केन्द्र सरकार द्वरा अनुमोदित किया गया है। एफ सी आर ए के माल विनिमय मान्यता के तत्त्वावधान के अंतर्गत वर्तमान में खेती (इसमें पौधे लगाना बी शामिल है), धातु तथा जीवाश्म उद्‌भव के सभी वस्तुओं तथा प्रोडक्टों को भविष्य के व्यापार के लिए अनुमोदित कर दिया गया है।

वस्तु (कमोडिटी) डेरिवेटिव बाजार क्या है?

माल सम्पत्ति को धन मानकर माल विचलित बाजार कॉंट्रेक्ट का व्यापार करता है। ये गेहूँ, सोयाबिन, रेपसिड, सूती इत्यादि खेती का माल या सोना, चाँदी जैसे कीमती पदार्थ हो सकते हैं।

माल और वित्तीय डेरिवेटिव में क्या अंतर है?

जब किसी माल या वित्तीय संपत्ति में गिरावट आती है तो किसी विचलन संविदा का मूल धारणा एक जैसा रहता है। फिर भी कुछ पहलू है जो माल विचलन बाजार में काफी अलग रहते हैं। वित्तीय विचलन के मामले में, इन कॉंट्रेक्ट में अधिकांश नकद रूप से तय होता है। भौतिक रूप से भुगतान के मामले में भी, वित्तीय संपत्ति भारी नहीं होते हैं और इसे स्टोर करने के लिए किसी विशेष सुविधा की आवश्यकता नहीं पड़ती है। नीचे पड़े संपत्ति के काफी मात्रा में होने के कारण, माल विचलन के भौतिक व्यवस्था के लिए गोदाम की जरुरत पड़ती है। ठीक इसी प्रकार, जहाँ तक वित्तीय गिरावट का संबंध है, इसमें संपत्ति के विभिन्न प्रकार की धारणा वास्तव में विद्यमान नहीं रहते हैं। फिर भी माल के मामले में, किसी कॉंट्रेक्ट में लगे संपत्ति का प्रकार समय–समय पर परिवर्तित हो सकते हैं।

अध्याय - 6

न्यासी (डेपोजिटरी)

न्यासी (डेपोजिटरी) बैंक से किस प्रकार समानता रखता है?

किसी न्यासी (डेपोजिटरी) की तुलना बैंक से की जा सकती है, जो जमाकर्ता के फंड को जमा करता है। बैंक तथा न्यसी के बीच का समानता निम्नलिखित प्रकार से लगाया जा सकता है :

बैंक	न्यासी
खाता में फंड रखता है	खाता में सेक्युरिटीयों को रखता है
खाताधारक के अनुदेश पर खातों के बीच में फंड ट्रांसफर करता है।	खाताधारक के अनुदेश पर खातों के बीच में सेक्युरिटीयों को ट्रांसफर करता है।
धन को हाथ लगाये विना हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करता है।	सेक्युरिटीयों को हाथ लगाये विना स्वामित्व के हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करता है।
धन को सुरक्षित रखने की सुविधा उपलब्ध कराता है।	शेयर को सुरक्षित रखने की सुविधा उपलब्ध कराता है।

भारत में न्यासी (डेपोजिटरी) कौन–कौन हैं?

भारत में दो न्यासी (डेपोजिटरी) हैं जो सेक्युरिटीयों के हस्तांतरण की सुविधा उपलब्ध कराते हैं :
नेशनल सेक्युरिटी डेपोजिटरी लिमिटेड (एन एस डी एल) और सेन्ट्रल डेपोजिटरी सर्वीसेज़ इंडिया (India) लिमिटेड (सी एस डी एल)।

किसी न्यासी (डेपोजिटरी) में भागीदारी से क्या लाभ है?

किसी न्यासी (डेपोजिटरी) में भागीदारी का निम्नलिखित लाभ है :

- सेक्युरिटीयों का तत्काल हस्तांतरण
- सेक्युरिटीयों के हस्तांतरण में किसी डाक खर्च की आवश्यकता नहीं।
- असमय सुपुर्दगी, नकली सेक्युरिटी इत्यादि भौतिक प्रमाण–पत्र से संबंधित जोखिमों की समाप्ति।
- सेक्युरिटीयों के हस्तांतरण में शामिल पेपर कार्य में कमी।
- हस्तांतरण मूल्य में कमी।
- नामिती सुविधा में आसानी।
- डी पी में रिकोर्ड किये गये पते में परिवर्तन निवेशकों द्वारा रखे गये सेक्युरिटी वाले कंपनी में इलेक्ट्रोनिक रूप से पंजीकृत हो जाते हैं जो सभी के साथ अलग–अलग पत्राचार कि आवश्यकता को समाप्त करता है।
- डी पी द्वारा सीधे सेक्युरिटीयों के हस्तांतरण से कंपनी के साथ पत्राचार को समाप्त करता है।
- फोलियो या खाते को समेकित करने के आसान तरीका।
- इक्विटी, ऋण उपकरण और सरकारी सेक्युरिटी यों में निवेश एक ही खाते से करता है; शेयर, समेकित राशी इत्यादि का डिमट खाते में स्वतः क्रेडिट होना।

न्यासी (डेपोजिटरी) भागीदार (डी पी) कौन हैं?

न्यासी (डेपोजिटरी) निवेशकों को अपनी सेवा एक एजेंट के माध्यम से उपलब्ध कराता है, जिसे न्यासी (डेपोजिटरी) भागीदार कहते हैं। इन एजेंटों की नियुक्ति सेबी के अनुमोदन से न्यासी (डेपोजिटरी) द्वारा की जाती है। (सेबी के विनियमों के अनुसार अन्य के साथ–साथ तीन श्रेणियों की हस्तियाँ यथा बैंक, वित्तीय संस्थान और सेबी में (Trading Members) ट्रेडिंग सदस्य डी पी बन सकते हैं।)



क्या किसी व्यक्ति को अपने डी पी के साथ किसी न्यूनतम सेक्युरिटी शेष को रखने की आवश्यकता पड़ती है?

नहीं। न्यासी (डेपोजिटरी) किसी न्यूनतम शेष को निर्धारित नहीं किया है। आप अपने खाते में शून्य शेष रख सकते हैं।

ISIN (आइ एस आइ एन) क्या है?

आइ एस आइ एन (अंतर्राष्ट्रीय सेक्युरिटी पहचान संख्या) किसी सेक्युरिटी का एक अद्वितीय पहचान संख्या है।

कस्टडियन क्या है?

कस्टडियन मूल रूप से एक संगठन है, जो अपने ग्राहकों की सेक्युरिटीयों को पंजीकृत करने तथा उसकी सुरक्षा करने में मदद करती है।

सेक्युरिटीयों की रक्षा करने के अतिरिक्त, कस्टडियन अपने ग्राहकों के लिए निगम के क्रियाकलाप पर ध्यान भी रखता है :

- ग्राहक के सुरक्षा खाता का रख रखाव
- सेक्युरिटी के समबंध में ग्राहक के संभूति का लाभ या अधिकार इकट्ठा करना
- सेक्युरिटी के निर्गमन में किये गये या किये जाने वाले कार्य के बारे में ग्राहक को सूचित करना, ग्राहक के संभूति के लाभ या अधिकार का भार लेना।

हम (Physical Holding) फिजिकल होल्डिंग को (Electronic Holding) इलेक्ट्रॉनिक होल्डिंग में कैसे बदल सकते हैं अर्थात् कोई अपने सेक्युरिटी को डिमेटेरिएलाइज कैसे कर सकता है?

(Physical) फिजिकल सेक्युरिटीयों को डिमेटेरिएलाइज करने के लिए आपको एक डिमट अनुरोध (डी आर एफ) फॉर्म भरना होगा जो डीपी में उपलब्ध रहता है और इसे डिमेटेरिएलाइज किये जाने वाले भौतिक प्रमाण–पत्र के साथ जमा करना होगा। सभी आइ एस आइ एन संख्या के लिए अलग–अलग डी आर एफ भरना होगा।

क्या बहुत से विषम शेयर को डिमेटेरिएलाइज किया जा सकता है?

हाँ, विषम शेयर प्रमाण–पत्र को भी डिमेटेरिएलाइज किया जा सकता है।

क्या डिमेटेरिएलाइज शेयर के विशिष्ट संख्या होती हैं?

डिमेटेरिएलाइज शेयर के कोई विशिष्ट संख्या नहीं होती हैं। ये शेयर विनिमय-योग्य होते हैं, जिसका अर्थ है कि किसी विशेष सेक्युरिटी के सभी नियंत्रण एक समान और लेन देन करने योग्य हों।

क्या इलेक्ट्रोनिक नियंत्रण को भौतिक प्रमाण–पत्र में बदला जा सकता है?

हाँ। यह विधि रिमेटेरिएलाइज कहलाता है। यदि कोई सेक्युरिटी को भौतिक रूप में वापस पाना चाहता है तो उसे डिमट अनुरोध फार्म (डी आर एफ) भरना होगा और अपने डी पी से शेष को अपने सेक्युरिटी खाते में रिमेटेरिएलाइज करने का आग्रह करना होगा।

क्या कोई अपने ऋण उपकरणों, म्यूचुवल फंड यूनिट, सरकारी सेक्युरिटीयों को अपने डिमट खाता में डिमेटेरिएलाइज कर सकता है?

हाँ। आप डिमेटेरिएलाइज कर सकते हैं तथा इससे सभी निवेशों को एक ही डिमट खाते में रख सकते हैं।

अध्याय - 7

म्यूचुवल फंड

म्यूचुवल फंड की रेगुलेशन इकाई क्या है?

सभी म्यूचुवल फंड की रेगुलेशन इकाई भारत का सेक्युरिटी और विनिमय बोर्ड (सेबी) है। सभी म्यूचुवल फंड को सेबी में पंजीकृत होना आवश्यक है।

म्यूचुवल फंड में निवेश करने से क्या लाभ है?

म्यूचुवल फंड में निवेश करने से अनेक लाभ हैं :

छोटा निवेश : म्यूचुवल फंड आपको छोटे निवेश द्वारा कंपनीयों के एक व्यापक स्पेक्ट्रम में फैले पोर्टफोलियो द्वारा रिटर्नस के लाभ के फल को भोगने में मदद करता है।

व्यावसायी फंड प्रबंधन : वह व्यवसायी जिसे विचारणीय दक्षता, अनुभव तथा संसधन प्राप्त होता है, म्यूचुवल फंड के माध्यम से एकत्रित किये गये धन का प्रबंधन करता है। अच्छे निवेश अवसर को चुनने के लिए वह बाजार तथा अर्थव्यवस्था का पूर्ण रूप से विश्लेषण करता है।

प्रसार के जोखिम : सीमित फंड वाला कोई निवेशक सिर्फ एक या दो बॉण्ड में निवेश करने के योग्य होता है, इस प्रकार वह अपने जोखिम को बढ़ाता या बढ़ाती है। फिर भी, म्यूचुवल फंड कई अच्छे स्टॉक या बॉण्ड में निवेश के माध्यम से अपने जोखिम में विविध है।

पारदर्शिता : म्यूचुवल फंड निवेशकों को नियमित रूप से उनके निवेश की कीमत उपलब्ध कराता है। म्यूचुवल फंड विभिन्न योजना द्वारा निवेश के संपूर्ण पोर्टफोलियो तथा सभी संपत्ति वर्ग में निवेश किये गये भाग को भी उदघाटित करता है।

पसंद : म्यूचुवल फंड की बड़ी संख्या निवेशक को फॉर्म का विस्तृत प्रकार चुनने के लिए उपलब्ध कराता है। कोई निवेशक जोखिम या वापसी पर आधारित किसी भी योजना को चुन सकता है।

विनियम : सभी म्यूचुवल फंड सेबी में पंजीकृत होते हैं और ये निवेशक के हितों की रक्षा करने के लिए कड़े विनियम के प्रावधानों के अंतर्गत कार्य करते हैं।

एन ए वी क्या है?

एन ए वी या फंड का कुल संपत्ति मूल्य संपूर्ण देयराशी संपत्ति फंड का समेकित बाजार मूल्य है। प्रति इकाई एन ए वी संपत्ति का कुल मूल्य है जो बकाया इकाई की संख्या से विभाजित की जाती है। फंड में क्रय या विक्रय एन ए वी संबंधी मूल्य के आधार पर किया जाता है।
किसी म्यूचुवल फंड के एन ए वी को समाचार पत्र में प्रकाशित करने की आवश्यकता होती है। किसी खुले छोर योजना के एन ए वी को प्रतिदिन के आधार पर अनावृत्त करना चाहिए तथा बंद छोर योजना के एन ए वी को साप्ताहिक आधार पर अनावृत्त करना चाहिए।

क्या म्यूचुवल फंड में निवेश करने में कोई जोखिम शामिल है?

म्यूचुवल फंड सुनिश्चित वापसी उपलब्ध नहीं कराता है। इसकी वापसी इसके प्रदर्शन से जुड़ी हुई है। ये शेयर, डिबेंचर, बॉण्ड इत्यादि में निवेश करता है। इन सभी निवेशों में जोखिम के तत्त्व शामिल रहते हैं। इकाई की कीमत में परिवर्तन हो सकता है जो कंपनी के प्रदर्शन पर निर्भर करती है और यदि कोई कंपनी अपने डिबेंचर या बॉण्ड के ब्याज या मूलधन भुगतान में त्रुटि करती है तो इससे फंड का प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है। इसके अतिरिक्त किसी उद्योग के अचानक गिरावट की स्थिति में या सरकार के नये विनियम लाने की स्थिति में जो किसी उद्योग या कंपनी को प्रभावित करती है, फंड पर फिर से विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। ये सभी कारक म्यूचुवल फंड के प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं।



कुछ जोखिम जिसे म्यूचुवल फंड को प्रकट करना चाहिए, नीचे दिये गये हैं :

बाजार जोखिम : यदि संपूर्ण आर्थिक कारकों के कारण कुल स्टॉक या बॉण्ड बाजार का पतन होता है तो फंड के पोर्टफोलियो में बॉण्ड नियंत्रण का मूल्य गिर सकता है, जो फंड के प्रदर्शन को प्रभावित करता है।

गैर–बाजार जोखिम : किसी व्यक्तिगत कंपनी के बारे में खराब समाचार उसके स्टॉक मूल्य को कम कर सकता है, जो फंड के नियंत्रण पर गलत प्रभाव डालता है। यह जोखिम विविध पोर्टफोलियो जिसमें अलग–अलग उद्योग के स्टॉक शामिल हों, को प्राप्त कर कम किया जा सकता है।

ब्याज दर जोखिम : बॉण्ड कीमत तथा ब्याज की दर विपरीत दिशा में चलते हैं। जब ब्याज दर अधिक होती है तो बॉण्ड की कीमत घटती है और नीचे की सेक्युरिटी में यह पतन फंड को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

क्रेडिट जोखिम : बॉण्ड एक ऋण बाध्यता है। अतः जब फंड को कॉपेरिट के बॉण्ड में निवेश किया जाता है, यह निगम के ब्याज और मूलधन भुगतान बाध्यता के जोखिम जैसी त्रुटि पर चलता है तथा जब यह जोखिम पारदर्शी होता है, यह बॉण्ड के मूल्य में पतन की ओर अग्रसर होता है, जिसका परिणाम फंड के एन ए वी का ह्रास होता है।

विभिन्न प्रकार के म्यूचुवल फंड कौन–कौन हैं?

म्यूचुवल फंड को निम्नलिखित तरीके से वर्गीकृत किया जाता है :

(क) उद्देश्य के आधार पर

इक्विटी फंड या वृद्धि फंड : फंड जिसे इक्विटी शेयर में निवेश किया जाता है इक्विटी फंड कहलाता है। इसमें मध्यम अवधि से लंबे समय तक निवेश के पूँजीकरण का मुख्य उद्देश्य शामिल होता है। यह पूँजी नवीकरण चाहने वाले निवेशकों के लिए अधिक उपयुक्त है। इक्विटि फंड के कई प्रकार हैं जैसे– डाइवर्सीफाइड फंड, भाग विशिष्ट फंड और सूची पर आधारित फंड।

डाइवर्सीफाइड फंड : यह फंड विविध भागों में फैले कंपनियों में निवेश किया जाता है। यह फंड सामान्यतः उस जोखिम–प्रतिकूल निवेशकों के लिए जाना जाता है जो विभिन्न भागों में पोर्टफोलियो का डाइवर्सीफाइ करना चाहते हैं।

क्षेत्र फंड : ये फंड प्राथमतः किसी कंपनी की विशेष व्यवसाय क्षेत्रों या उद्योगों के इक्विटी शेयर में निवेश किये जाते हैं। ये फंड उन निवेशकों को लक्ष्य करता है जो किसी विशेष क्षेत्र के लक्षण से प्रभावित होते हैं।

सूची (Index) फंड : यह फंड लोकप्रिय बाजार की सूचिकाओं की तरह ही निवेश की जाती है जैसे निफ्टी 50 या निफ्टी 500। निवेशकों से एकत्रित किया गया धन का सिर्फ उसी स्टॉक में निवेश किया जाता है, जो सूची का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए, निफ्टी सूची फंड को सिर्फ निफ्टी 50 स्टॉक में निवेश किया जाएगा। ऐसे फंड का उद्देश्य बाजार से प्रतिस्पर्धा करना नहीं है बल्कि बाजार वापसी की तरह वापसी देना है।

कर बचत फंड : ये फंड निवेशकों को आयकर अधिनियम के अंतर्गत कर लाभ निर्गम करता है। इस योजना के अंतर्गत उपलब्ध अवसर आयकर अधिनियम के तहत् कर छूट के अंतर्गत आता है।

ऋण या आय फंड : ये फंड मुख्य रूप से उच्च–दर के चल–आय–वाले उपकरणों जैसे बॉण्ड, डिबेंचर, सरकारी सेक्युरिटीयों, व्यावसायिक पेपर और धन बाजार उपकरणों में निवेश किया जाता है। यह मध्यम से दीर्घ अवधि के निवेशकों के लिए अधिक उपयुक्त है जो जोखिम के विपरीत होते हैं तथा पूँजी की रक्षा करना चाहता है। ये निवेशकों को नियमित आय उपलब्ध कराता है।

लिक्विड फंड या धन बाजार फंड : ये फंड उच्च लिक्विड धन बाजार उपकरण में निवेश किया जाता है। निवेश की अवधि एक दिन से भी कम हो सकता है। ये आसान लिक्विडिटी प्रदान करता है। ये बचत तथा अल्पावधि सावधिक जमा खाते के विकल्प के रूप में सामने आया है जिसमें अपेक्षाकृत उच्च वापसी होता है। ये फंड कार्पोरेट, संस्थानिक निवेशकों, और व्यापार घरों के लिए अच्छा माना जाता है जो कि अपना फंड अल्पावधि के लिए निवेश करता है।

गिल्ट फंड : ये फंड केन्द्र तथा राज्य सरकार के सेक्युरिटीयों में निवेश किये जाते हैं। चूँकि ये सरकार समर्थित बॉण्ड है, ये सुरक्षित वापसी देता है तथा मूलधन राशी की सुरक्षा सुनिश्चित करता है। ये रिस्क के विपरीत जाने वाले मध्यम और अधिक समय के लिए के निवेशकों के लिए अधिक उपयुक्त है।

संतुलित फंड : ये फंड इक्विटी शेयर और चल आय वाले उपकरणों (ऋण) में कुछ अनुपात में निवेश किये जाते हैं। ये स्थिर वापसी उपलब्ध कराते हैं तथा फंड की अस्थिरता को कम करता है तथा पूँजी स्थिरीकरण के लिए कुछ लाभ प्रदान करता है। ये सामान्य रिस्क उठाने वाले वाले मध्यम और अधिक समय के लिए के निवेशकों के लिए अधिक उपयुक्त है।

(ख) लचीलेपन के आधार पर

ओपन इंडेड फंड : इस फंड में वापसी की नियत तिथि नहीं होती है। सामान्यतः ये पूरे साल तक अंशदान तथा वापसी के लिए खोले जाते हैं। इनकी कीमत नित्य कुल संपत्ति के मूल्य (एन ए वी) से जुड़ी होती है। निवेशक की दृष्टि से ये बंद–छोर फंड से अधिक लचीला है।

क्लोज इंडेड फंड : ये फंड प्रारंभ में प्रारंभिक जन प्रस्ताव (आइ पी ओ) में प्रविष्टि के लिए खोला जाता है और इसके बाद इसकी प्रविष्टि और निकास को बंद कर दिया जाता है। इस फंड में वापसी की नियत तिथि होती है। क्लोज इंडेड योजना की एक विशेषता है कि इसका सामान्यतः एन ए वी पर छूट द्वारा व्यापार किया जाता है; लेकिन जैसे ही मेच्योरिटी तिथि नजदीक आती है यह छूट कम होती जाती है। ये फंड अंशदान के लिए सिर्फ एक बार खोला जाता है और इसकी वापसी सिर्फ नियत तिथि पर ही होती है। इस फंड की इकाई स्टॉक एक्सचेंज पर सूचीबद्ध है (कुछ अपवादों के साथ), यह फंड व्यापार करने योग्य है और इस फंड के अंशदाता किसी भी समय सेकेंडरी बाजार के माध्यम से फंड से निकल सकता है।

म्यूचुवल फंड द्वारा प्रस्तावित विभिन्न निवेश योजना कौन–कौन सी है?

शब्द 'निवेश योजना' सामान्यतः उस सेवा को बताता है जो फंड द्वारा निवेशकों को उपलब्ध कराया जाता है तथा निवेश एवं पुनर्निवेश के विभिन्न तरीके प्रस्तावित करते हैं। विभिन्न निवेश योजना निवेश–निर्णय में प्रमुख विचार है, क्योंकि ये निवेशक के पास उपलब्ध लचीलेपन का निर्धारण करते हैं। भारत में म्यूचुवल फंड द्वारा प्रस्तावित कुछ निवेश योजना निम्नलिखित है :

वृद्धि योजना तथा लाभांश योजना : वृद्धि योजना किसी योजना के अंतर्गत एक योजना है जहाँ निवेश से प्रतिफल का पुनर्निवेश किया जाता है तथा यदि कोई हो तो बहुत ही कम लाभ को बाँटा जाता है। इस प्रकार निवेशक इस निवेश में सिर्फ पूँजी वृद्धि ही महसूस कर पाता है। लाभांश योजना के अंतर्गत, आय समय–समय पर बाँटा जाता है। ये योजना उन निवेशकों के लिए उपयुक्त है जिसे नियमित रूप से आय की आवश्यकता है।

लाभांश पुनर्निवेश योजना : लाभांश योजना वितरण फिर से पुनर्निवेश के लिए अतिरिक्त विकल्प पर किया जाता है। इसे लाभांश के फिर से निवेश योजना के नाम से जाना जाता है। इस योजना के अंतर्गत, किसी फंड द्वारा घोषित लाभांश को योजना में निवेशक के नाम से फिर से निवेश किया जाता है, इस प्रकार निवेशक के इकाई में वृद्धि की जाती है।

भारत में म्यूचुवल फंड धारकों के अधिकार क्या हैं?

म्यूचुवल फंड पर सेबी के विनियमों के अनुसार निवेशक निम्नलिखित अधिकारों का हकदार है :



1. म्यूचुवल फंड द्वारा प्राप्त आपके यूनिट प्रमाण–पत्र का अनुरोध की तिथि से छः सप्ताह के अंदर आप अपने टाइटिल सुनिश्चित करने के लिए यूनिट प्रमाण–पत्र या खाता का विवरण प्राप्त करने का हकदार है।
2. निवेश नीति, निवेश उद्देश्य, वित्तीय स्थिति तथा योजना के सामान्य संबंध के बारे में प्राप्ति सूचना।
3. घोषणा के तीस दिन के अंदर प्राप्ति लाभांश, तथा पुनर्निवेश तथा पुनः खरीद के दस दिनों के अंदर पुनर्निवेश तथा पुनः खरीद की प्राप्ति।
4. न्यासी (डेपोजिटरी) इस प्रकार की सूचना इकाई प्राप्तकर्ता को प्रदान करने का आवश्यक रूप से उत्तरदायी होगा, ताकि उन्हें सूचना से अवगत रखा जा सके, इसका अभाव उनके निवेश के विपरीत भी हो सकते हैं।
5. सेबी के पूर्व सूचना से यूनिट कंट्रोलर के 75 प्रतिशत ने फंड के ए एम सी को समाप्त कर सकता है।
6. 75 प्रतिशत यूनिट होल्डर ने योजना समाप्त करने के लिए प्रस्ताव पारित कर सकता है।
7. निवेशक सेबी को शिकायत भेज सकता है, जो संबंधित म्यूचुवल फंड से बातचीत करेगा और इसके समाधान होने तक उसके साथ बातचीत करता रहेगा।

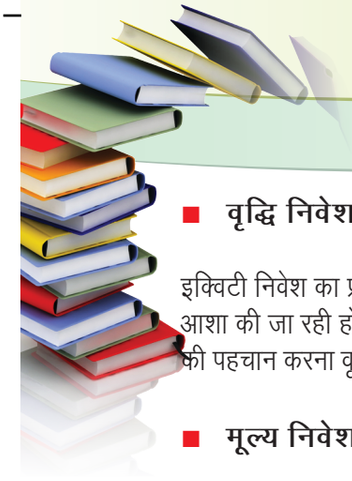
फंड प्रस्ताव दस्तावेज क्या है?

फंड प्रस्ताव दस्तावेज वह दस्तावेज है जो आपको योजना की शुरुवात करने वाले किसी व्यक्तिगत योजना या फंड के बारे में सभी संभावित आवश्यक सूचना प्रदान करती है। इस प्रकार आपको अपना धन लगाने से पहले आपको इसमें शमिल जोखिम इत्यादि के बारे में अच्छी तरह से जानकारी मिल जाती है। यह सेबी द्वारा डिजाइन किये गये दिशा–निर्देश के अनुसार बनाया जाना है और विवरण सूची में निम्नलिखित के बारे में ब्यौरा अवश्य होना चाहिए :

- निवेश का उद्देश्य
- जोखिम तथ्य तथा विशेष विचार
- खर्च का सारांश
- फंड का गठन
- निवेश करने का दिशा–निर्देश
- संगठन तथा पूँजी संरचना
- लेन देन से संबंधित कर प्रावधान
- वित्तीय सूचना

क्रियात्मक फंड प्रबंधन क्या है?

जहाँ फंड के निवेश का निर्णय फंड मैनेजर के विवेक पर निर्भर करता है और वह निर्णय लेता या लेती है कि कौन सी कंपनी, उपकरण या संपत्ति का वर्ग में फंड का निवेश करना चाहिए। यह अनुसंधान, विश्लेषण बाजार समाचार इत्यादि पर निर्भर करता है। ऐसा फंड क्रियात्मक प्रबंधित फंड के नाम से जाना जाता है। फंड सेक्युरिटीयों को क्रियात्मक रूप से खरीदता और बेचता है जो समय–समय पर निवेश के परिवर्तित बोध पर निर्भर करता है। विभिन्न विशेषताओं वाले शेयर के प्रकार के आधार पर, 'क्रियात्मक' निवेश मैनेजर विभिन्न पोर्टफोलियो का गठन करता है। म्यूचुवल फंड के बीच प्रचलित दो मौलिक निवेश स्टाइल है– वृद्धि निवेश और मूल्य निवेश।



■ वृद्धि निवेश स्टाइल

इक्विटी निवेश का प्राथमिक उद्देश्य पूँजी में वृद्धि पाना है। कोई वृद्धि मैनेजर उस कंपनी की ओर देखता है जिसमें औसत से ऊपर वृद्धि की आशा की जा रही हो, जहाँ मैनेजर अनुभव करता है कि उपार्जन की संभावना और भविष्य में स्टॉक की कीमत उच्चतर होगा। ऐसे वृद्धि क्षेत्र की पहचान करना वृद्धि निवेश मैनेजर के सामने एक चुनौती होता है।

■ मूल्य निवेश स्टाइल

कोई मूल्य प्रबंधक वैसी कंपनी को खरीदना चाहता है जो वह विश्वास करता है कि वर्तमान में बाजार में इसका मूल्य ह्रास हो रहा है लेकिन उसके आकलन के अनुसार जिसका मूल्य बाजार की संभवना के अनुसार पहचाना जाएगा।

निष्क्रिय फंड प्रबंधन क्या है?

जब कोई निवेशक किसी सक्रिय प्रबंधित म्यूचुवल फंड में निवेश करता है तो वे निवेश का निर्णय फंड मैनेजर पर छोड़ देते हैं। फंड मैनेजर इस बात का निर्णायक होता है कि किस कंपनी या उपकरण में निवेश किया जाए। कभी–कभी ऐसा निर्णय सही भी हो सकता है, तथा सही तरीके से निवेशक को पुरस्कृत कर सकता है। कभी–कभी यह भी संभावना होती है कि यह निर्णय गलत हो सकता है या सभी समय सही नहीं हो सकता है, जो निवेशक को लगातार हानी की ओर ले जा सकती है। म्यूचुवल फंड सूचक फंड को सूचित करता है, जिसका उद्देश्य उस प्रतिफल के बराबर होता है जो कि चयनित बाजार सूचकांक द्वारा दिया जाता है। ऐसा फंड एक निष्क्रिय निवेश स्टाइल का अनुसरन करता है। ये कंपनियों, बाजारों, आर्थिक तथ्यों का विश्लेषण नहीं करते हैं और इसीलिए स्टॉक में निवेश कम होता जाता है। इसके बदले में वे किसी स्टॉक के पोर्टफोलियो में निवेश करना पसंद करते हैं, जो एक बाजार सूचकांक को सूचित करता है, जैसे कि निफ्टी सूचकांक। सूचकांक द्वारा सृजित प्रतिफल ही फंड द्वारा दिया गया प्रतिफल है। सूचकांक को पीछे करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया जाता है। अनुसंधान यह बताता है कि अधिकांश फंड मैनेजर वर्ष दर वर्ष बाजार सूचकांक को पीछा करने में असमर्थ रहा है। यह भी पहचानना संभव नहीं है कि बाजार सूचकांक को पीछा कौन सा फंड करेगा। इसलिए, किसी फंड के निवेश चुनाव में कोई तत्त्व गलत किया जा रहा है। यह निष्क्रिय प्रबंधित फंड में काफी ब्याज की ओर ले जाता है, जैसे सूचकांक फंड जहाँ फंड मैनेजर के विवेक के लिए निवेश का विकल्प नहीं है। सूचकांक फंड में विविध प्रकार की सेक्युरिटीयों को नियंत्रित किया जाता है जो सूचकांक का प्रतिनिधित्व करता है जबकि उसी समय चूँकि पोर्टफोलियो का कोई क्रियात्मक लेन–देन नहीं होता है, फंड के प्रबंधन का मूल्य भी निम्न रहता है। यह विविध पोर्टफोलियो वाले निवेशक को दोहरा लाभ पहुँचाता है जबकि उस समय फंड में कम खर्च होता है।

इ टी एफ क्या है?

विनिमय व्यापार फंड को किसी म्यूचुवल फंड के रूप में समझना जो कि किसी स्टॉक की तरह व्यापार करता है। ठीक किसी सूचकांक फंड की तरह, इ टी एफ बहुत सारे स्टॉक का प्रतिनिधित्व करता है, जो निफ्टी जैसे सूचकांक को रिफ्लेक्ट करता है। फिर भी इ टी एफ एक म्यूचुवल फंड नहीं है; यह स्टॉक एक्सचेंज पर अन्य सभी कंपनी की तरह व्यापार करता है। किसी म्यूचुवल फंड की तरह, जिसका कुल संपत्ति मूल्य (एन ए वी) प्रत्येक व्यापार के दिन आकलित की जाती है, इ टी एफ का मूल्य पूर्ति और माँग के उतार चढ़ाव के साथ पूरे दिन परिवर्तित होता रहता है। यह याद रखना आवश्यक है कि जहाँ इ टी एफ सूचकांक पर प्रतिफल को दोहराना चाहता है वहीं यह गारंटी नहीं रहती है कि वे वास्तव में ऐसा करेगा।

किसी इ टी एफ का स्वामित्व कर आप किसी सूचकांक फंड का डायवर्सीफिकेशन के साथ–साथ स्टॉक के लचीलेपन को प्राप्त करते हैं। क्योंकि, इ टी एफ का व्यापार स्टॉक पसंद करता है, आप उसे कम समय में बेच सकते हैं, कम मूल्य में खरीद सकते हैं तथा एक शेयर की तरह थोड़े में भी खरीद सकते हैं। दूसरा लाभ यह है कि अधिकांश इ टी एफ का खर्च अनुपात औसत म्यूचुवल फंड से कम होता है। इ टी एफ को खरीदते या बेचते समय आप अपने ब्रोकर को उतना ही कमीशन का भुगतान करते हैं जितना कि आप किसी नियमित व्यापार में भुगतान करते हैं।

अध्याय - 8

विविध

8.1 कॉर्पोरेट ऐक्शंस

कॉर्पोरेट ऐक्शंस क्या हैं?

कॉर्पोरेट ऐक्शंस की प्रतिभूति की कीमत से संबंध की प्रवृत्ति होती है। जब कोई कंपनी कॉर्पोरेट ऐक्शन की घोषणा करती है, तो उसके द्वारा एक प्रक्रिया की शुरूआत की जाती है जो अपनी प्रतिभूतियों में वास्तविक बदलाव लेकर आयेंगे। फिर यह बदलाव शेयरधारकों के हाथों में शेयरों की संख्या बढ़ाने के लिहाज से भी हो सकता है या प्रतिभूति के सममूल्य में बदलाव या शेयरधारकों द्वारा नई कंपनी के शेयरों को प्राप्त करना भी हो सकता है जैसे विलय या अधिग्रहण आदि के मामले में होता है। इन अलग–अलग प्रक्रियाओं के विभिन्न प्रकारों और उनके प्रभावों को समझने के बाद, निवेशक के दिमाग में एक स्पष्ट तस्वीर उभरकर आती है कि कॉर्पोरेट ऐक्शन कंपनी के वित्तीय मामलों के बारे में क्या संकेत करता है और किस तरह इस ऐक्शन से कंपनी के शेयर की कीमत और प्रदर्शन पर असर पड़ेगा।

कॉर्पोरेट ऐक्शंस पर कंपनी के निदेशक मंडल द्वारा सहमति दी जाती है और इसे शेयरधारकों द्वारा अधिकृत किया जाता है। इसके कुछ उदाहरण लाभांश, स्टॉक स्प्लिट, राइट्स इश्यू, बोनस इश्यू आदि हैं।

कंपनियों द्वारा घोषित 'लाभांश' का क्या अर्थ है?

इक्विटी में निवेश करने पर निवेशकों को दो तरह से लाभ प्राप्त होता है : 1) शेयर की कीमत (बाजार भाव) में वृद्धि और 2) लाभांश। कंपनी की कमाई के कुछ हिस्से को शेयरधारकों में वितरित करना ही लाभांश है, अमूमन इसे साल में दो बार अंतिम लाभांश और अंतरिम लाभांश के रूप में दिया जाता है। इस तरह, लाभांश शेयरधारक के लिए आय का स्रोत है। सामान्य तौर पर, लाभांश को 'प्रति शेयर' आधार पर व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, 3 रूपये प्रति शेयर। इससे यह देखना आसान हो जाता है कि कंपनी अपने कितने मुनाफे का भुगतान कर रही है और बिजनेस को आगे बढ़ाने के लिए कितना मुनाफा उसके पास रखा जा रहा है। इसलिए, एक कंपनी जिसकी साल में प्रति शेयर कमाई 6 रूपये है और वह लाभांश के तौर पर 3 रूपये प्रति शेयर दे रही है तो उसके द्वारा अपने लाभ का आधा हिस्सा शेयरधारकों को प्रदान किया जा रहा है और शेष हिस्सा अपने पास रखा जा रहा है। कंपनी के निदेशकों को यह समझ होती है कि कितने लाभांश की घोषणा करनी चाहिये या फिर उन्हें कोई लाभांश देना चाहिये।

लाभांश प्रतिफल (डिविडेंट यील्ड) का क्या अर्थ है?

लाभांश प्रतिफल पिछले 12 महीनों के दौरान शेयर की मौजूदा कीमत और इसे जारी करने वाली कंपनी द्वारा चुकाये गये लाभांश के बीच संबंधों को दर्शाता है। इसकी गणना गत वर्ष के लाभांश को समेकित कर उसे शेयर की मौजूदा कीमत से घटाकर की जाती है।

उदाहरण :
एबीसी कंपनी
शेयर कीमत : 360 रूपये
वार्षिक लाभांश : 10 रूपये
लाभांश प्रतिफल : 2.77 प्रतिशत (10 / 360)

ऐतिहासिक रूप से, उच्चतम लाभांश प्रतिफल को निवेशकों के बीच वांछनीय माना जाता है। उच्च लाभांश प्रतिफल इस बात का सबूत है कि शेयर अंडरप्राइस्ड है, जबकि न्यून लाभांश प्रतिफल इस बात का प्रमाण है कि शेयर ओवरप्राइस्ड

है। इसलिए यहां सावधानी बरती जाती है। बीते समय में ऐसी कंपनियां देखने को मिली हैं जिनका उच्च लाभांश प्रतिफल का रिकॉर्ड रहा है, और वे बाद के वर्षों में गिरावट का शिकार हो गईं। लाभांश प्रतिफल कंपनी के प्रदर्शन को निर्धारित करने में एक प्रमुख घटक है।

स्टॉक स्प्लिट क्या है?

स्टॉक स्प्लिट एक कॉर्पोरेट ऐक्शन है जोकि खास सममूल्य के मौजूदा शेयरों को छोटे मूल्यवर्ग में विभाजित करता है ताकि शेयरों की संख्या बढ़ाई जा सके। हालांकि, स्प्लिट के बाद निवेशकों के पास मौजूद शेयरों का मूल्य अथवा बाजार पूंजीकरण पहले की ही तरह समान रहता है। उदाहरण के लिए, यदि एक कंपनी 10 रूपये सममूल्य के 1,00,00,000 शेयरों को जारी करती है और बाजार की वर्तमान कीमत 100 रूपये है तो 1 शेयर को 2 शेयरों में विभाजित करने से शेयरों का सममूल्य घटकर 5 रूपये रह जायेगा और कंपनी के आउटस्टैंडिंग शेयरों की संख्या बढ़कर 2,00,00,000 (1,00,00,000* (10 / 5)) पहुंच जायेगी। परिणामस्वरूप, शेयर की कीमत भी घटकर 50 रूपये पर आ जायेगी और इस तरह निवेशक के पास मौजूद शेयरों के बाजार पूंजीकरण अथवा मूल्य में कोई बदलाव नहीं होगा। यह बिल्कुल उसी तरह है जैसे आप 100 रूपये के नोट को दो 50–50 रूपये के नोट से बदलते हैं; जिससे मूल्य समान ही रहता है।

आईये, शेयरधारकों पर पड़ने वाले इसके प्रभाव पर एक नजर डालते हैं – कंपनी एबीसी 40 रूपये पर कारोबार कर रही है और उसके द्वारा 100 मिलियन शेयर जारी किये गये हैं जिसने कंपनी को 4000 मिलियन रूपये (40 X 100 मिलियन शेयर) का बाजार पूंजीकरण प्रदान किया है। एक निवेशक के पास कंपनी के 400 शेयर हैं जिनकी कीमत 16,000 रूपये है। कंपनी उसके बाद एक शेयर को 4 में विभाजित (स्टॉक स्प्लिट) करने का फैसला करती है (यानी जिस शेयरधारक के पास 1 शेयर है, उसके पास अब 4 शेयर हो जायेंगे)। शेयरधारक के पास जितने शेयर हैं, उन्हें हर शेयर पर तीन अतिरिक्त शेयर मिलेंगे। निवेशक के पास इस तरह 1600 शेयर हो जायेंगे और उसे प्रत्येक शेयर पर 3 अतिरिक्त शेयरों का लाभ मिलेगा। लेकिन इनसे निवेशक के पास मौजूद शेयरों के मूल्य पर कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि स्प्लिट के बाद शेयर की कीमत भी 25 प्रतिशत (एक चौथाई) द्वारा विभाजित हो जायेगी और यह 40 रूपये से 10 रूपये पर आ जायेगी। इस तरह, निवेशक के पास 16,000 रूपये मूल्य के शेयर बने रहेंगे। यह भी गौर करें कि बाजार पूंजीकरण भी समान बना रहेगा– इससे स्टॉक्स आउटस्टैंडिंग की राशि बढ़कर 400 मिलियन हो जायेगी जबकि साथ ही शेयर की कीमत 4000 रूपये मिलियन के पूंजीकरण के लिए 25 प्रतिशत गिरकर 10 रूपये आ जायेगी। इस तरह, कंपनी का वास्तविक मूल्य नहीं बदलता है।

शेयर की नई कीमत का निर्धारण करने का एक आसान तरीका है – उसे स्प्लिट रेशो द्वारा शेयर की पुरानी कीमत से विभाजित कर दिया जाये। हमारे उदाहरण में, 40 रूपये को 4 से विभाजित करें और हमें 10 रूपये का नया ट्रेडिंग प्राइस मिल जायेगा। यदि 2 शेयरों को 3 में विभाजित करना है तो हमें समान फॉर्मूला अपनाना होगा : 40 / (3 / 2) = 40 / 1.5 = 26.60 रूपये।

2–फॉर–1 स्प्लिट	प्रि–स्प्लिट	पोस्ट–स्प्लिट
शेयरों की संख्या	100 मिलियन	200 मिलियन
शेयर की कीमत	40 रूपये	20 रूपये
बाजार पूंजीकरण	4000 मिलियन रूपये	4000 मिलियन रूपये
4–फॉर–1 स्प्लिट		
शेयरों की संख्या	100 मिलियन	400 मिलियन
शेयर की कीमत	40 रूपये	10 रूपये
बाजार पूंजीकरण	4000 मिलियन रूपये	4000 मिलियन रूपये



कंपनियां स्टॉक स्प्लिट की घोषणा क्यों करती हैं?

यदि शेयर के मूल्य में कोई बदलाव नहीं होता है, तो कंपनी अपने शेयरों को विभाजित करने के लिए आखिर किस बात से प्रेरित होती है? हालांकि, वित्तीय साहित्य में इसके कोई सैद्धांतिक कारण नहीं है जिससे स्टॉक स्प्लिट की जरूरत पड़ने के संकेत मिल सकें। अमूमन, इसके दो महत्वपूर्ण कारण हैं। प्रतिभूति की कीमतों में जब लगातार बढ़ोतरी होती जाती है, तो कुछ निवेशकों को महसूस होता है कि लेवाली के लिए यह कीमत बहुत अधिक है, अथवा छोटे निवेशकों को यह कीमत उनके लिए वहनीय नहीं लगती। शेयरों को विभाजित करने से, उसकी कीमत घटकर अधिक 'आकर्शक' स्तर पर आ जाती है। ऊपर दिये गये हमारे उदाहरण में, स्प्लिट से पूर्व कंपनी एबीसी का एक शेयर खरीदने के लिए 40 रूपये की जरूरत पड़ती, लेकिन स्टॉक स्प्लिट के बाद 10 रूपये में ही शेयर खरीदे जा सकते हैं। इस तरह अधिक से अधिक निवेशक इस शेयर को खरीदने के लिए आकर्षित होंगे। इससे हमें दूसरा कारण भी मिलता है। शेयर को विभाजित करने से शेयर की तरलता में वृद्धि को बढ़ावा मिलता है, और अधिक निवेशक शेयर खरीदने में सक्षम होंगे और बाजार में कंपनी के कुल आउटस्टैंडिंग शेयर्स भी बढ़ जायेंगे।

शेयरों की पुनर्खरीद क्या है?

पुनर्खरीद (बायबैक) एक ऐसी पद्धति है जिसमें कंपनी बाजार में दूसरे निवेशकों से शेयरों की खरीदारी कर खुद से निवेश करती है। पुनर्खरीद से बाजार में बकाया शेयरों की संख्या घटती है। बायबैक कंपनी द्वारा किया जाता है, जिसका उद्देश्य अपने शेयरों की तरलता में सुधार करना और शेयरधारकों की निधि में बढ़ोतरी करना होता है। सेबी (बाय बैक ऑफ सिक्युरिटीज) के रेगुलेशन, 1998 के तहत, कंपनी को निम्न से अपने शेयरों की पुनर्खरीद करने की मंजूरी दी जाती है :

1) ऑफर डॉक्यूमेंट के माध्यम से अनुपातिक आधार पर मौजूदा शेयरधारकों से
2) बुक बिल्डिंग प्रोसेस का इस्तेमाल कर स्टॉक एक्सचेंजों के माध्यम से
3) विषम लॉट शेयर रखने वाले शेयरधारकों से

कंपनी को पुनर्खरीद के बाद प्रवर्तकों की हिस्सेदारी का खुलासा करना जरूरी है। बायबैक प्रक्रिया को तेजी से समाप्त करने के लिए, नियमों द्वारा प्रत्येक चरण हेतु समय सीमा को बदल दिया जाता है। उदाहरण के लिए, स्टॉक एक्सचेंजों के जरिये खरीदारी करने के मामले में, पुनर्खरीद के लिए ऑफर 30 दिनों से अधिक समय के लिए खुला नहीं रहता। पुनर्खरीद के लिए शेयरों का प्रमाणन, ऑफर बंद होने के 15 दिनों के भीतर पूरा किया जाना चाहिये। स्वीकृत प्रतिभूतियों के लिए भुगतान प्रमाणन पूरा होने के 7 दिनों के अंदर किया जाना चाहिये और दोबारा खरीदे गये शेयरों को भुगतान की तिथि के 7 दिनों के भीतर बंद किया जाना चाहिये।

8.2 इंडेक्स

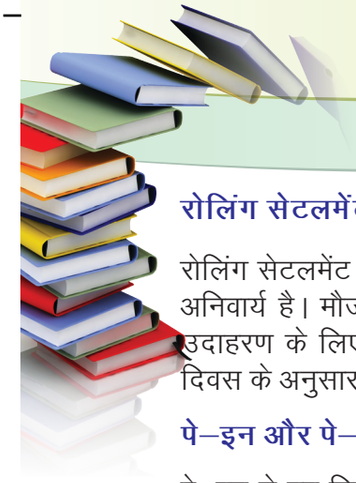
निफ्टी इंडेक्स क्या है?

सीएनएक्स निफ्टी (निफ्टी) वैज्ञानिक रूप से विकसित 50 स्टॉक इंडेक्स है, जो भारतीय बाजारों की बाजार गतिविधियों को एकदम सही ढंग से परिलक्षित करता है। इसमें एनएसई पर कारोबारी करने वाले कुछ सबसे बड़े और सबसे तरल शेयर शामिल हैं। इसका रख–रखाव इंडिया इंडेक्स सर्विसेज एंड प्रोडक्ट्स लिमिटेड (आइआइएसएल) द्वारा किया जाता है जोकि एनएसई और क्रिसिल के बीच एक संयुक्त उपक्रम है। निफ्टी भारतीय बाजारों का बैरोमीटर है।

8.3 क्लियरिंग एवं सेटलमेंट एवं रिड्रेसल

क्लियरिंग कॉर्पोरेशन क्या है?

क्लियरिंग कॉर्पोरेशन एक्सचेंज का एक हिस्सा अथवा पृथक एनटाइटी है जिसके द्वारा तीन कार्यों को अंजाम दिया जाता है। यह सभी लेन–देन को क्लियर एवं सेटल करता है यानी बाजार में लेवालों और बिकवालों के लिए शेयरों/पूंजी की प्राप्ति और डिलीवरी की प्रक्रिया को पूरा करता है; एक्सचेंज पर कार्यान्वित सभी लेनदेन के लिए आर्थिक गारंटी मुहैया कराता है और जोखिम प्रबंधन फंक्शन उपलब्ध कराता है। नेशनल सिक्युरिटीज क्लियरिंग कॉर्पोरेशन (एनएससीसीएल), एनएसई की पूर्ण स्वामित्व वाली अनुशंगी, एनएसई पर कार्यान्वित लेन–देन के लिए क्लियरिंग कॉर्पोरेशन की भूमिका निभाती है।



रोलिंग सेटलमेंट क्या है?

रोलिंग सेटलमेंट के तहत दिन की समाप्ति पर सभी ओपन पोजीशन 'एन' दिन बाद पेमेंट/डिलीवरी में परिणित होना अनिवार्य है। मौजूदा समय में रोलिंग सेटलमेंट में ट्रेड्स टी+2 आधार पर सेटल होते हैं जहां टी ट्रेड का दिन है। उदाहरण के लिए, सोमवार को कार्यान्वित ट्रेड बुधवार तक सेटल होना अनिवार्य है (ट्रेड के दिन से दो कामकाजी दिवस के अनुसार)। फंड एवं सिक्युरिटीज पे–इन और पे–आउट टी+2 दिनों में किये जाते हैं।

पे–इन और पे–आउट क्या है?

पे–इन डे वह दिन है जब बेची गई प्रतिभूतियों को विक्रेताओं द्वारा एक्सचेंज पर डिलीवर किया जाता है और खरीदी गई प्रतिभूतियों के लिए फंड्स को एक्सचेंज पर लेवालों के लिए उपलब्ध कराया जाता है।

पे–आउट दिन वह दिन है जब खरीदी गई प्रतिभूतियों को लेवालों को डिलीवर किया जाता है और एक्सचेंज द्वारा बेची गई प्रतिभूतियों के लिए फंड्स को विक्रेताओं को दिया जाता है।

वर्तमान समय में स्टॉक एक्सचेंज पर कार्यान्वित ट्रेड के बाद दूसरे कामकाजी दिवस पर पे–इन और पे–आउट होता है।

ऑक्शन (नीलामी) क्या है?

पे–इन डे पर ट्रेडिंग सदस्य द्वारा प्रतिभूतियों की नॉन–डिलीवरी पर, प्रतिभूतियों को एक्सचेंज द्वारा ऑक्शन यानी नीलामी के लिए रखा जाता है। इससे सुनिश्चित होता है कि एक्सचेंज खरीदारी करने वाले ट्रेडिंग सदस्य को प्रतिभूतियां प्राप्त होती हैं। एक्सचेंज नीलामी बाजार में आवश्यक मात्रा खरीदता है और उन्हें लेवाली करने वाले ट्रेडिंग सदस्य को प्रदान करता है।

बुक–क्लोजर/रिकॉर्ड डेट क्या है?

बुक क्लोजर और रिकॉर्ड डेट कंपनी को वास्तव में तय तिथि पर कंपनी के शेयरधारकों का निर्धारण करने में मदद करती है। बुक क्लोजर का तात्पर्य कंपनी के रिकॉर्ड्स में निवेशकों के नाम का रजिस्टर बंद करने से है। कंपनियां समय–समय पर बुक क्लोजर की घोषणा करती रहती हैं। लाभांश, बोनस इश्यू, राइट्स इश्यू उपार्जन के लाभ उन निवेशकों को दिये जाते हैं, जिनके नाम प्रदत्त तारीख पर कंपनी के रिकॉर्ड पर दिखते हैं और इन्हें रिकॉर्ड डेट के नाम से जाना जाता है और कंपनी द्वारा एडवांस में ही इनकी घोषणा की जाती है ताकि लेवालों को शेयर खरीदने, कंपनी के बुक्स में खुद को दर्ज कराने और बोनस, राइट्स, लाभांश आदि जैसे लाभों का हक पाने के लिए पर्याप्त समय मिल सके। वर्तमान में डिपॉजटरी मौजूद हैं, लेवालों को पंजीकरण के लिए कंपनियों को हाजिर रूप से शेयर भेजने की जरूरत नहीं है। इसकी देखभाल डिपॉजटरी द्वारा की जाती है क्योंकि उनके पास उस तय तिथि के अनुसार इलेक्ट्रॉनिक रूप में निवेशकों की हिस्सेदारी के रिकॉर्ड्स होते हैं।

नो–डिलीवरी अवधि क्या है?

जब भी कंपनी बुक क्लोजर या रिकॉर्ड डेट की घोषणा करती है, एक्सचेंज द्वारा उस प्रतिभूति के लिए नो–डिलीवरी अवधि स्थापित की जाती है। इस अवधि के दौरान प्रतिभूति में सिर्फ ट्रेडिंग की स्वीकृति दी जाती है। हालांकि, इन ट्रेड्स को नो–डिलीवरी अवधि पूरी होने के बाद ही निपटाया जाता है। ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि कॉर्पोरेट लाभ के लिए निवेशकों का अधिकार स्पष्ट रूप से निर्धारित किया जा सके।

एक्स–डिविडेंड तारीख क्या है?

वह तारीख जिस दिन या उसके बाद कोई प्रतिभूति कीमत में लाभांश जोड़े बगैर कारोबार शुरू करती है, यानी यदि निवेशक एक्स–डिविडेंड डेट पर या उसके बाद शेयर खरीदते हैं तो शेयरों के लेवालों को लाभांश पाने का कोई हक नहीं होगा जिसे हाल में कंपनी द्वारा घोषित किया गया है।



एक्स–डेट क्या है?

नो–डिलीवरी अवधि का पहला दिन एक्स–डेट कहलाता है। यदि राइट्स, बोनस, लाभांश जैसे किसी कॉर्पोरेट लाभ की घोषणा की गई है जिसके लिए बुक क्लोजर/रिकॉर्ड डेट तय है, शेयरों के लेवाल एक्स–डेट पर या बाद में इन लाभों को पाने के हकदार नहीं होंगे।

निवेशक/ग्राहक के लिए अपनी शिकायतों के समाधान हेतु क्या साधन उपलब्ध हैं?

आप किसी निश्चित ट्रेड विवाद अथवा भुगतान/प्रतिभूतियों की रसीद प्राप्त न होने पर ब्रोकर के खिलाफ इन्वेस्टर ग्रीविएंस सेल (आइजीसी) में शिकायत दर्ज करा सकते हैं। आइजीसी एनएसई ट्रेडिंग सदस्य अथवा सेबी में पंजीकृत एनएसई ट्रेडिंग सदस्य के उप–ब्रोकर के माध्यम से एनएसई पर कार्यान्वित ट्रेड्स के संबंध में शिकायतें लेता है। साथ ही एनएसई पर कारोबार करने वाली कंपनियों के ट्रेड्स से संबंधी शिकायतें भी स्वीकार करता है।

आर्बिट्रेशन क्या है?

आर्बिट्रेशन एक वैकल्पिक विवाद समाधान प्रणाली है जिसे स्टॉक एक्सचेंज द्वारा एक्सचेंज पर किये गये कारोबार के संदर्भ में ट्रेडिंग सदस्यों और उनके क्लाइंट के बीच जारी विवादों को समाधान करने के लिए उपलब्ध कराया गया है। यदि स्टॉक एक्सचेंज के सामान्य शिकायत समाधान प्रणाली के जरिये कोई हल नहीं निकलता है, तब आप संबंधित स्टॉक एक्सचेंज के बाइ–लॉज के तहत आर्बिट्रेशन का हवाला देकर आवेदन कर सकते हैं।

इन्वेस्टर प्रोटेक्शन फंड क्या है?

इन्वेस्टर प्रोटेक्शन फंड (आइपीएफ) का रख–रखाव एनएसई द्वारा किया जाता है ताकि निवेशकों के बेहतर क्लेम किये जा सकें जोकि ट्रेडिंग सदस्य द्वारा उत्तरदायित्वों के नॉन–सेटलमेंट से उठते हैं। इन्हें एक्सचेंज पर कार्यान्वित ट्रेड्स के संबंध में डिफॉल्टर घोषित किया जाता है। आइपीएफ का इस्तेमाल इन निवेशकों के दावों का निपटान करने में किया जाता है, जहां ट्रेडिंग सदस्य जिसके जरिये निवेशक ने सौदा किया है, को डिफॉल्टर घोषित किया जाता है। आइपीएफ के बाहर भुगतान में डिफॉल्टर घोषित किये गये ट्रेडिंग सदस्य से निवेशकों द्वारा प्रतिभूतियों के गैर भुगतान/गैर रसीद के कारण दावों को शामिल किया जाता है। आइपीएफ से निवेशक (जहां ट्रेडिंग सदस्य जिसके जरिये निवेशक ने सौदा किया है, को घोषित किया गया है) को देय दावों की अधिकतम राशि 10 लाख रूपये है।

अध्याय - 9

विश्लेषण की अवधारणा और प्रकार

साधारण ब्याज क्या है?

साधारण ब्याज : साधारण ब्याज वह ब्याज है जिसे सिर्फ उधार ली गई मूल रकम पर अदा किया जाता है। ऋण की अवधि के दौरान उपार्जित ब्याज पर कोई ब्याज अदा नहीं किया जाता है।
साधारण ब्याज की गणना के लिए तीन घटक हैं : मूल, ब्याज दर और समय।
साधारण ब्याज की गणना के लिए फॉर्मूला :

$$I = PRT$$

जहाँ,

आइ = ब्याज
पी = मूल
आर = ब्याज दर (प्रति वर्ष)
टी = समय (वर्षों में या वर्ष के भाग में)

उदाहरण : मि. एक्स ने घर के सामान खरीदने के लिए बैंक से 10 हजार रूपये उधार लिये। उन्होंने 8 महीने में 10 प्रतिशत प्रति वर्ष की ब्याज दर पर साधारण ब्याज सहित पूरी राशि अदा करने की सहमति जताई।

यदि वे 8 महीनों में पूरी 10 हजार रूपये राशि चुका देते हैं, तो ब्याज होगा :

पी =10,000 रूपये आर = 0.10 (10 प्रतिशत प्रति वर्ष) टी = 8 / 12 (यह वर्ष के भाग को निर्दिष्ट करता है)

10,000 रूपये* (0.10)* (8 / 12) = 667 रूपये

यह मि. एक्स द्वारा 8 महीनों के लिए लिए गये 10,000 रूपये के ऋण पर साधारण ब्याज है।

यदि वह 15 महीनों में 10,000 रूपये की राशि चुकाता है, तो सिर्फ समय में बदलाव हो रहा है।

इसलिए उसका ब्याज होगा :

आइ = 10,000 रूपये*(0.10)*(15 / 12) = 1,250 रूपये

चक्रवृद्धि ब्याज क्या है?

चक्रवृद्धि ब्याज : चक्रवृद्धि ब्याज का अर्थ है कि ब्याज पर की गई गणना का ब्याज भी शामिल होगा। मूल राशि पर उपार्जित ब्याज को दोबारा मूल राशि में जोड़ दिया जाता है, और फिर अगली अवधि के लिए ब्याज की गणना हेतु पूरी राशि को नये मूल के रूप में माना जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि दो वर्षों के लिए 5,000 रूपये की राशि निवेश की गई और ब्याज दर 10 प्रतिशत है, यह वार्षिक आधार पर किस तरह चक्रवृद्धि में बदलेगी :

- पहले वर्ष की समाप्ति पर ब्याज (5,000* 0.10) अथवा 500 रूपये होगा।
- दूसरे वर्ष 10 प्रतिशत की ब्याज दर सिर्फ 5,000 रूपये पर लागू नहीं होगी बल्कि पहले वर्ष के 500 रूपये के ब्याज पर भी लागू की जायेगी। इस तरह, दूसरे वर्ष में ब्याज (5,500*0.10) अथवा 550 रूपये होगा।

किसी भी ऋण अथवा उधारी के लिए यदि साधारण ब्याज का उल्लेख नहीं किया गया है तो व्यक्ति को हमेशा यह कल्पना करनी चाहिये कि ब्याज चक्रवृद्धि होगा। जब चक्रवृद्धि ब्याज का इस्तेमाल किया जाता है, तो हमें यह अवश्य पता होना चाहिये कि प्रति वर्ष कितनी बार ब्याज दर की गणना की जाती है। अमूमन ब्याज दर को सालाना कोट किया जाता है। उदाहरण के लिए 10 प्रतिशत सालाना।

चक्रवृद्धि ब्याज में एक साल से ज्यादा के लिए गणना शामिल हो सकती हैं, प्रत्येक में नये मूल का इस्तेमाल किया जाता है यानी (ब्याज+मूल)। चक्रवृद्धि ब्याज में हमें एक शब्द से जरूर अवगत होना चाहिये वह है कन्वर्जन पीरियड। कन्वर्जन पीरियड में पता चलता है कि ऋण अथवा निवेश की अवधि के दौरान ब्याज की गणना कितनी बार की जाती है। इसे प्रत्येक वर्ष अथवा वर्ष में कई बार निर्धारित किया जाना चाहिये।

उदाहरण : यदि ब्याज को वर्ष में दो बार कंपाउंडेड किया जाता है, तो प्रतिवर्ष कन्वर्जन पीरियड की संख्या 2 होगी। यदि ऋण अथवा जमा पांच वर्षों के लिए है तो कन्वर्जन पीरियड की संख्या 10 होगी।

चक्रवृद्धि ब्याज की गणना के लिए फॉर्मूला :

$$C = P(1+i)^n$$

जहां

सी = राशि

पी = मूल

आइ = ब्याज दर प्रति कन्वर्जन पीरियड

एन = कन्वर्जन पीरियड की कुल संख्या

उदाहरण : मि. एक्स ने पांच वर्षों के लिए 10,000 रूपये की राशि 7.5 प्रतिशत के तिमाही चक्रवृद्धि ब्याज दर पर निवेश की :

पी = 10,000 रूपये

आइ = 0.075 / 4, अथवा 0.01875

एन = 4*5 अथवा 20, कन्वर्जन पीरियड 5 वर्षों के लिए

इस तरह, राशि सी, है :

सी = 10,000 रूपये $(1+0.01875)$ ₹ 20

= 10,000 रूपये x 1.449948

= 14,499.48 रूपये

पांच वर्षों की समाप्ति पर, मि. एक्स ब्याज के रूप में 4,499.48 रूपये (14,499–10,000 रूपये) कमायेंगे। इसे कंपाउंडिंग के तौर पर भी जाना जाता है।

कंपाउंडिंग निवेश में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि साधारण ब्याज कमाने और ब्याज पर ब्याज कमाने के इन दो मामलों में अवधि समाप्त होने पर प्राप्त राशि उल्लेखनीय रूप से अलग–अलग होती है।

यदि मि. एक्स ने पांच वर्षों के लिए साधारण ब्याज विकल्प की पेशकश करने वाली समान ब्याज दर पर यह राशि निवेश की है, तो वे निम्नलिखित फॉर्मूला लागू करके अपनी कमाई की गणना कर सकते हें :

$$S = P(1+rt),$$

पी = 10,000

आर = 0.075

टी = 5

इस तरह, एस = 10,000 रूपये $[1+0.075(5)]$ = 13,750 रूपये

और कमाया गया साधारण ब्याज 3,750 रूपये है।

दोनों विधियों के तहत प्राप्त ब्याज राशि की तुलना करने पर यह पता चलता है कि मि. एक्स ने 749.48 रूपये (4,498–3,750 रूपये) कमाये अथवा साधारण ब्याज विधि की तुलना में चक्रवृद्धि ब्याज विधि के तहत लगभग 20 प्रतिशत ज्यादा अर्जित किया।

साधारण शब्दों में कहें तो कंपाउंडिंग का अर्थ रिटर्न की समान दर पर आय को दोबारा निवेश करना है ताकि मूल राशि में निरंतर साल दर साल विकास जारी रखा जा सके। क्या व्यक्ति को इस बात का बेहद ध्यान रखना चाहिये कि रिटर्न की दर 5 प्रतिशत है या 15 प्रतिशत? सच्चाई है कि कंपाउंडिंग के साथ रिटर्न की दर जितनी अधिक होगी, आय उतनी ही ज्यादा होगी जिसे मूल में दोबारा जोड़ा जाता रहेगा, और आपको साल दर साल रिटर्न की उच्च दर मिलेगी।

नीचे दी गई तालिका बताती है कि 10,000 रूपये का सिंगल निवेश कंपाउंडिंग के साथ रिटर्न की विभिन्न दरों पर बढ़ेगा। सेविंग्स बैंक अकाउंट में अपना पैसा डालने पर आपको संभवतः 5 प्रतिशत का रिटर्न मिलेगा, वहीं एक वर्ष के कंपनी फिक्स्ड डिपॉजिट से आप 10 प्रतिशत की रिटर्न की उम्मीद कर सकते हैं, यदि आप म्यूचुअल फंडों अथवा इक्विटी शेयरों में निवेश करते हैं तो आपको 15–20 प्रतिशत या इससे अधिक रिटर्न मिल सकता है।

कंपाउंडिंग की ताकत का प्रभाव :

रिटर्न की विभिन्न दरों और अलग–अलग समयावधि में कंपाउंडिंग की ताकत का प्रभाव :

वर्ष की समाप्ति पर	5 प्रतिशत	10 प्रतिशत	15 प्रतिशत	20 प्रतिशत
1	10500 रूपये	11000 रूपये	11500 रूपये	12000 रूपये
5	12800 रूपये	16100 रूपये	20100 रूपये	24900 रूपये
10	16300 रूपये	25900 रूपये	40500 रूपये	61900 रूपये
15	20800 रूपये	41800 रूपये	81400 रूपये	154100 रूपये
25	33900 रूपये	1,08300 रूपये	3,29200 रूपये	9,54,000 रूपये

टाइम वैल्यू ऑफ मनी का क्या अर्थ है?

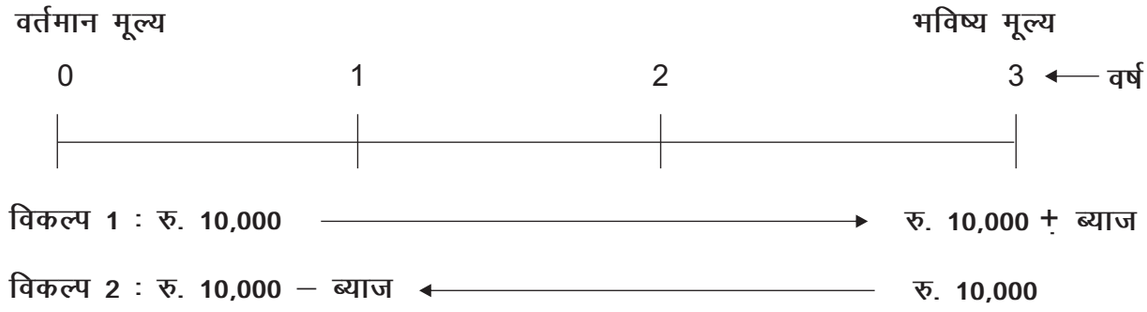
धन की टाइम वैल्यू होती है। टाइम वैल्यू ऑफ मनी के पीछे आइडिया यह है कि आज एक रूपया भविष्य में एक रूपये से ज्यादा मूल्य का है। आज रूपये के मूल्य और भविष्य में रूपये के मूल्य के बीच संबंध को 'टाइम वैल्यू ऑफ मनी' के रूप में जाना जाता है। आज प्राप्त रूपया भविष्य में ब्याज कमा सकता है। आज निवेश की गई राशि बाद की तारीख में निवेश की गई समान राशि की तुलना में अधिक मूल्य की होगी क्योंकि इसके द्वारा कंपाउंडिंग की ताकत का इस्तेमाल किया जायेगा। जब मूल राशि निवेश की जाती है, तो मूल पर पहले वर्श के दौरान ब्याज कमाया जाता है। दूसरे वर्ष या अवधि में ब्याज वास्तविक मूल और पहले वर्ष में कमाये गये ब्याज पर मिलता है। समय के साथ, पुनः निवेश की यह प्रक्रिया राशि को उल्लेखनीय ढंग से बढ़ाने में मदद कर सकती है।

आईये एक उदाहरण लें :

कल्पना कीजिये कि आपको दो विकल्प दिये गये हैं :
1) आज 10,000 रूपये प्राप्त करें अथवा
2) तीन वर्ष बाद 10,000 रूपये प्राप्त करें।

आप कौन सा विकल्प चुनेंगे।
अमूमन आप समान राशि पाने के लिए तीन वर्ष के इंतजार की तुलना में आज 10,000 रूपये प्राप्त करने का विकल्प अपनायेंगे। इसलिए, टाइम वैल्यू ऑफ मनी यह बताती है कि यदि सभी चीजें समान हैं तो बाद की तुलना में अभी पूंजी लेना बेहतर है।

हमारे उदाहरण को देखें : आज 10,000 रूपये प्राप्त करके आप अपने पैसे के भविष्य मूल्य को बढ़ायेंगे क्योंकि इस पूंजी को आप निवेश कर समय के साथ ब्याज कमा सकते हैं। विकल्प बी के लिए, आपके पास समय नहीं है, तीन वर्षों में प्राप्त राशि आपके भविष्य का मूल्य होगा। इसे समझाने के लिए हमने एक समयसीमा मुहैया कराई है –



यदि आप विकल्प 1 चुनते हैं तो भविष्य का मूल्य 10,000 रूपये प्लस तीन वर्षों के दौरान प्राप्त कोई भी ब्याज होगा। वहीं दूसरी ओर, विकल्प 2 के लिए भविष्य मूल्य सिर्फ 10,000 रूपये होगा। इससे स्पष्ट पता चलता है कि आज प्राप्त धन का मूल्य भविष्य में प्राप्त समान राशि से अधिक होगा। क्योंकि आज प्राप्त रकम को निवेश कर लाभ कमाया जा सकता है।

एक और उदाहरण लेते हैं।

यदि आपने विकल्प 1 चुना और कुल रकम को 5 प्रतिशत की साधारण वार्षिक ब्याज दर पर निवेश किया जो पहले वर्ष की समाप्ति पर आपके निवेश का भविष्य मूल्य 10,500 रूपये होगा जिसकी गणना 10,000 रूपये की मूल राशि में 5 प्रतिशत की ब्याज दर का गुणा करके और फिर उसके बाद ब्याज को मूल राशि में जोड़ कर की जा सकती है।

इस तरह पहले की समाप्ति पर निवेश का भविष्य मूल्य है :

$$= (10{,}000 \text{ रूपये} \times 5/100) + 10{,}000 \text{ रूपये}$$
$$= (10{,}000 \text{ रूपये} \times 0.050) + 10{,}000 \text{ रूपये}$$
$$= 10{,}500 \text{ रूपये}$$

आप एक वर्षीय निवेश की कुल राशि की गणना ऊपर दिये गये समीकरण में सामान्य या संशोधन करके भी कर सकते हैं :

वास्तविक समीकरण : $(10{,}000 \text{ रूपये} \times 0.050) + \text{Rs.}10{,}000 = 10{,}500$ रूपये
संशोधित फॉर्मूला : $(10{,}000 \text{ रूपये} \times (0.050 + 1) = 10{,}500$ रूपये
अंतिम समीकरण : $10{,}000 \text{ रूपये} \times [(1 \times 0.050) + 1] = 10{,}500$ रूपये

इसे निम्न तरीके से भी लिखा जा सकता है

$$S = P(r + 1)$$

जहाँ,

एस = अवधि के अंत में प्राप्त राशि
पी = मूल राशि
आर = ब्याज दर प्रति वर्ष

यह फॉर्मूला 1 वर्ष की अवधि के लिए साधारण ब्याज (आर) पर निवेश की गई राशि (पी) के भविष्य के मूल्य (एस) को प्रदर्शित करता है।

टाइम वैल्यू ऑफ मनी का परिकलन किस तरह किया जाता है?

टाइम वैल्यू ऑफ मनी निम्नलिखित परिस्थितियों में परिकलित किया जा सकता है :

1. एकल नगद प्रवाह का भविष्य मूल्य
2. एन्युटी का भविष्य मूल्य
3. एकल नगद प्रवाह का मौजूदा मूल्य
4. एन्युटी का मौजूदा मूल्य

1. एकल नगद प्रवाह का भविष्य मूल्य

धन के दिये गये मौजूदा मूल्य (प्रजेंट वैल्यू/पीवी) के लिए एम अवधि बाद जिसके लिए कंपाउंडिंग वी ब्याज दर पर की गई है, उसका भविष्य का मूल्य (फ्यूचर वैल्यू/एफवी) निम्न समीकरण द्वारा बताया जायेगा

$$FV = PV\,(1+r)^t$$

इससे पता चलता है कि कंपाउंडिंग विभिन्न अंतराल पर की जाती है। हालांकि, निरंतर कंपाउंडिंग के मामले में, भविष्य मूल्य नीचे दिये गये फॉर्मूला का इस्तेमाल कर निर्धारित किया जाता है :

$$FV = PV * e^{rt}$$

जहां e एक गणितीय फंक्शन है जिसे 'एक्सपोनेंशियल' कहा जाता है। एक्सपोनेंशियल का मूल्य (e) = 2.7183 है। कंपाउंडिंग फैक्टर की गणना स्वाभाविक लॉगरिद्म से की जाती है (लॉग टु द बेस ऑफ 2.7183).

उदाहरण 1 : आज जमा किये गये 2,000 रूपये के डिपॉजिट के मूल्य की 3 वर्ष के बाद की गणना करें, यदि ब्याज दर 10 प्रतिशत है।

पृथक कंपांउडिंग द्वारा :

भविष्य का मूल्य $FV = 2,000 * (1+0.10)^3 = 2,000 * (1.1)^3 = 2,000 * 1.331 = 2,662$ रूपये

निरंतर कंपाउंडिंग द्वारा :

भविष्य का मूल्य $FV = 2,000 * e\,(0.10*3) = 2,000 * 1.349862 = 2699.72$ रूपये

2. एन्युटी का भविष्य मूल्य

एन्युटी समान वार्षिक नगद प्रवाह की धारा है। परिपक्वता 'टी' के समय तक प्रत्येक अवधि की समाप्ति पर एकसमान नगद प्रवाह (सीएफ) का भविष्य मूल्य (एफवीए) जिसके लिए कंपाउंडिंग वी रेट से की जाती है, की गणना निम्न प्रकार से की जाती है :

$$FVA = CF*(1+r)^{t-1} + CF*(1+r)^{t-2} + \ldots + CF*(1+r)^1 + CF$$

$$= CF\left(\frac{(1+r)^t - 1}{r}\right)$$

$\left(\frac{(1+r)^t - 1}{r}\right)$ को फ्यूचर वैल्यू इंटरेस्ट फैक्टर फॉर एन एन्युटी (एफपीआइएफए) के रूप में संदर्भित किया जाता है। इसका इस्तेमाल विभिन्न संदर्भों में किया जा सकता है। जैसे कि निश्चित अवधि के बाद संचयी राशि जानने के लिए, लक्षित राशि तक पहुंचने के लिए सालाना कितना बचत करने की आवश्यकता होगी, यह जानना तथा ब्याज दर आदि जानना।



उदाहरण 1 : कल्पना कीजिये, आपने एक बैंक में 5 वर्षों के लिए 3,000 रूपये सालाना जमा किये और आपके जमा ने 10 प्रतिशत की चक्रवृद्धि ब्याज दर कमाई तो 5 वर्ष के अंत में आपके जमा (एन्युटी) की इस सीरीज का मूल्य क्या होगा? कल्पना करें कि प्रत्येक डिपॉजिटी वर्ष की समाप्ति पर होता है।

इस एन्युटी का भविष्य मूल्य है :

$=3000$ रूपये $*(1.10)^4 + 3000$ रूपये $*(1.10)^3 + 3000$ रूपये $*(1.10)^2 + 3000$ रूपये $*(1.10) + 3000$ रूपये

$=$ रूपये $3000*(1.4641)+3000$रूपये $*(1.3310)+3000$ रूपये $*(1.2100)+3000$ रूपये $*(1.10) + 3000$ रूपये

$= 18315.30$ रूपये

3. एकल नगद प्रवाह का मौजूदा मूल्य

फ्यूचर सम (एफवी) का मौजूदा मूल्य टी समय के बाद प्राप्त होता है जिसके लिए डिस्काउंटिंग वी ब्याज दर पर की गई हैं, इसे निम्न समीकरण द्वारा प्राप्त किया जा सकता है ।

पृथक डिस्काउंटिंग के मामले में : $PV = FV / (1+r)^t$

उदाहरण 1 : 3 वर्ष तक अदा किये जाने वाले 5,000 रूपये का मौजूदा मूल्य क्या है, यदि ब्याज दर 10 प्रतिशत है ?

$PV = 5000/ (1.10)^3$ यानी $= 3756.57$ रूपये

निरंतर डिस्काउंटिंग के मामले में : $PV = FV * e^{-rt}$

उदाहरण 2 : निरंतर डिस्काउंटिंग के तहत 10 प्रतिशत की डिस्काउंट दर पर 2 वर्ष बाद प्राप्त 10,000 रूपये का मौजूदा मूल्य क्या है ?

प्रजेंट वैल्यू $= 10,000/ (\exp ₹(0.1*2)) =$ रूपये 8187.297

4. एन्युटी का मौजूदा मूल्य

एन्युटी का मौजूदा मूल्य इस एन्युटी के सभी नगद प्रवाह के मौजूदा मूल्यों का जोड़ है।
एन्युटी का मौजूदा मूल्य (पृथक डिस्काउंटिंग के मामले में)

$$PVA = FV[\{(1+r)^t - 1\}/\{R*(1+r)^t\}]$$

$[(1+r)^t - 1/R*(1+r)^t]$ को प्रजेंट वैल्यू इंटरेस्ट फैक्टर फॉर एन एन्युटी (पीवीआइएफए) के रूप में संदर्भित किया गया है।

एन्युटी के मौजूदा मूल्य (निरंतर डिस्काउंटिंग के मामले में) की गणना इस प्रकार की जायेगी :

$$PVa = FVa*(1-e)^{-rt})/r$$

उदाहरण 1 : 3 निरंतर वर्षों के लिए प्रत्येक वर्ष की समाप्ति पर प्राप्त 2000 रूपये का मौजूदा मूल्य क्या है?

= 2000*[1/1.10]+2000*[1/1.10] ₹2+2000*[1/1.10] ₹3

= 2000*0.9091+2000*0.8264+2000*0.7513

= 1818.181818+1652.892562+1502.629602

= 4973.704 रूपये

इफेटिक्व एनुअल रिटर्न (प्रभावी वार्षिक लाभ) क्या है?

अमूमन सावधि जमा या बॉन्ड के लिए आवेदन करते समय आवेदन फॉर्म में यह उल्लेखित होता है कि निवेश का वार्षिक लाभ (ब्याज) 10 प्रतिशत है लेकिन इफेक्टिव एनुअल रिटर्न इससे कुछ ज्यादा 10.38 प्रतिशत है। इसमें अंतर क्यों? इफेक्टिव एनुअल रिटर्न अंतर–वर्ष कंपाउंडिंग के लिए होता है जबकि वार्षिक एनुअल रिटर्न इसलिए नहीं होता। इन दोनों के बीच के अंतर को एक उदाहरण से समझा जा सकता है। कल्पना कीजिये कि जमा खाता पर उल्लेखित वार्षिक ब्याज दर 10 प्रतिशत है और आपने इस बचत खाता में 1,000 रूपये जमा किये। एक साल के बाद, आपका धन बढ़कर 1,100 रूपये हो जायेगा। लेकिन यदि खाते में त्रैमासिक कंपाउंडिंग की खूबी है तो, आपकी इफेक्टिव रेट ऑफ रिटर्न 10 प्रतिशत से अधिक होगी। पहली तिमाही अथवा पहले तीन महीनों के बाद, आपकी बचत 1,025 रूपये पहुंच जायेगी। फिर दूसरी तिमाही में कंपाउंडिंग का असर स्पष्ट हो जायेगा : आपको वास्तविक 1,000 रूपये पर ब्याज में और 25 रूपये मिलेंगे लेकिन आपको पहली तिमाही के बाद चुकाये गये 25 रूपये से 0.63 अतिरिक्त रूपये भी प्राप्त होंगे। दूसरे शब्दों में कहें तो प्रत्येक तिमाही में कमाया गया ब्याज आने वाली तिमाहियों में कमाये गये ब्याज में बढ़ोतरी करेगा। साल के अंत तक, त्रैमासिक कंपाउंडिंग की ताकत आपको कुल 1,103.80 रूपये का ब्याज देगी। इसलिए, उल्लेखित वार्षिक ब्याज दर 10 प्रतिशत है, लेकिन त्रैमासिक कंपाउंडिंग के कारण आपकी इफेक्टिव रेट ऑफ रिटर्न 10.38 प्रतिशत है। 0.38 प्रतिशत का अंतर भले ही छोटा लगता है लेकिन यदि आप बड़ी संख्याओं में डील कर रहे हैं तो यह अंतर काफी बड़ा नजर आयेगा। 100,000 रूपये का 0.38 प्रतिशत 380 रूपये है। एक और चीज गौर करने लायक है कि यह आवश्यक नहीं है कि कंपाउंडिंग हर तिमाही में की जाये अथवा साल में चार बार। जैसा कि ऊपर दिये गये उदाहरण में किया गया है। ऐसे भी अकाउंट्स हैं जो हर महीने और कुछ रोजाना कंपाउंडेड होते हैं। हमारे उदाहरण में जैसा दिखाया गया है कि जिस बारंबारता से ब्याज चुकाया जाता है उसका इफेक्टिव रेट ऑफ रिटर्न पर असर पड़ेगा।

किसी कंपनी का व्यवस्थित ढंग से विश्लेषण किस तरह करना चाहिये?

सही विश्लेषण करने के लिए आपको निम्न पर अवश्य ध्यान देना चाहिये :

उद्योग विश्लेषण : समान उत्पाद बनाने वाली कंपनियां उद्योग / सेक्टर के एक हिस्सा के निर्माण करती हैं। उदाहरण के लिए, नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कंपनी (एनएचपीसी) लिमिटेड, नेशनल थर्मल पावर कंपनी (एनटीपीसी) लिमिटेड, टाटा पावर कंपनी लिमिटेड, आदि भारत के विद्युत क्षेत्र से संबंधित हैं। यह देखना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि जिस उद्योग से कंपनी का संबंध है, वह कितना दूर तक जा सकता है। सरकारी नीति के प्रभाव, अपने उत्पादों की भविष्य मांग आदि, जैसी बातों की जांच करना जरूरी है। कई बार उद्योग का परिदृश्य कारोबारी परिवेश में बदलाव आने के कारण नाटकीय ढंग से बदल सकता है। उदाहरण के लिए, रूपये में अवमूल्यन सभी निर्यात उन्मुख कंपनियों के परिदृश्य को सुनहरा बना सकता है। निवेश विश्लेषक इसे उद्योग विश्लषण के नाम से पुकारते हैं।

कॉर्पोरेट विश्लेषण : कंपनी पिछले कुछ वर्षों से कैसे आगे बढ़ रही है? इसके मौजूदा परिचालनों, प्रबंधकीय सामर्थ्य, विकास योजनाओं, पिछले प्रदर्शन और इसके प्रतिस्पर्धियों आदि पर पूरी जानकारी प्राप्त करें। इसे कॉर्पोरेट विश्लेषण के नाम से जाना जाता है।

वित्तीय विश्लेषण : यदि उद्योग के साथ–साथ कंपनी का प्रदर्शन अच्छा नजर आता है तो इसके मौजूदा भाव की जांच करें कि क्या शेयर को खरीदना सही फैसला होगा। इसके लिए कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन और कुछ प्रमुख

मानदंडों जैसे अर्निंग प्रति शेयर (ईपीएस), पी/ई रेशो, इक्विटी का वर्तमान आकार आदि पर नजर डालें ताकि भविष्य की अनुमानित कीमत पर पहुंचा जा सके। इसे वित्तीय विश्लेषण कहा जाता है। इसके लिए आपको कंपनी के वित्तीय स्टेटमेंट को समझना जरूरी है यानी कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट में शामिल बैलेंस शीट और प्रॉफिट एवं लॉस अकाउंट।



वार्षिक रिपोर्ट क्या है?

वार्षिक रिपोर्ट एक औपचारिक वित्तीय बयान है जिसे हर साल कॉर्पोरेट द्वारा जारी किया जाता है। वार्षिक रिपोर्ट में परिसंपत्तियों, लाएबिलिटीज, राजस्व, खर्चों और कमाई को दिखाया जाता है– कारोबारी वर्ष की समाप्ति पर कंपनी का प्रदर्शन कैसा रहा, इसने साल के दौरान मुनाफे के हिसाब से कितनी छलांग लगाई, साथ ही शेयरधारकों के लिए ब्याज पर अन्य सूचनायें। कंपनियों द्वारा वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित की जाती है और यह मुफ्त में रिपोर्ट के संक्षिप्त वर्जन को शेयरधारकों को भेजती है। विस्तृत वार्षिक रिपोर्ट को अनुरोध पर भेजा जाता है। याद रखें कि कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य को जानने के लिए सूचना का बेहतरीन स्रोत है।

वार्षिक रिपोर्ट की कौन सी खूबी को सावधानीपूर्वक पढ़ना चाहिये?

व्यक्ति को वार्षिक रिपोर्ट पर निम्न पर जोर देकर पढ़ना चाहिये :

- निदेशक की रिपोर्ट और चेयरमैन का बयान जोकि कंपनी के मौजूदा और भविष्य के परिचालनीय प्रदर्शन से संबंधित हैं
- ऑडिटर्स की रिपोर्ट (ऑडिटर्स रिपोर्ट के लिए संलग्नक सहित)
- लाभ एवं हानि खाता
- बैलेंस शीट (तुलना–पत्र)
- बैलेंस शीट के लिए संबंधित अकाउंट्स पर नजर

बैलेंस शीट और प्रॉफिट एवं लॉस अकाउंट विवरण क्या है? कंपनी की बैलेंस शीट और प्रॉफिट एवं लॉस अकाउंट विवरण के बीच क्या अंतर है?

कंपनी की बैलेंस शीट किसी खास समय पर उस कंपनी की आर्थिक स्थिति को प्रदर्शित करती है। कंपनीज एक्ट, 1956 के अनुसार कंपनी/फर्म की बैलेंस शीट अकाउंट फॉर्म में या फिर रिपोर्ट फॉर्म में होनी चाहिये।

बैलेंस शीट : अकाउंट फॉर्म

लाएबिलिटीज	परिसंपत्तियां
शेयरपूंजी	फिक्स्ड एसेट्स
रिजर्व एवं सरप्लस	निवेश
सुरक्षित ऋण	मौजूदा परिसंपत्तियां, ऋण और एडवांस
असुरक्षित ऋण	विविध खर्च
मौजूदा लाएबिलिटीज और प्रावधान	

बैलेंस शीट : रिपोर्ट फॉर्म

I. पूंजी के स्रोत :

1. **शेयरधारकों की पूंजी**
   - अ) शेयर पूंजी
   - ब) रिजर्व एवं सरप्लस
2. **ऋण पूंजी**
   - अ) सुरक्षित ऋण
   - ब) असुरक्षित ऋण

II. पूंजी का प्रयोग

- अ) फिक्स्ड एसेट्स
- ब) निवेश
- स) मौजूदा परिसंपत्तियां, ऋण और एडवांस

लेस : मौजूदा लाएबिलिटीज और प्रावधान

शुद्ध मौजूदा परिसंपत्तियां

- द) विविध खर्च और नुकसान

दूसरी ओर, प्रॉफिट एवं लॉस अकाउंट (आय विवरण) कुछ समय बाद कंपनी/फर्म के वित्तीय प्रदर्शन को प्रदर्शित करते हैं। यह निश्चित समयावधि के दौरान राजस्व और खर्चों का संकेत देते हैं। समय की अवधि लेखा अवधि/वर्ष अप्रैल–मार्च है। लेखा रिपोर्ट में राजस्व के सामानों, खर्च के सामानों, और लेख अवधि के लिए उनके बीच (शुद्ध आय) अंतर को संक्षिप्त रूप से लिखा जाता है।

कंपनी की बैलेंस शीट और प्रॉफिट एवं लॉस अकाउंट की व्याख्या कैसे करें?

सबसे पहले बैलेंस शीट से शुरू करते हैं। बॉक्स 1 में 31 मार्च 2005 तक एक्सवाइजेड लिमिटेड कंपनी की बैलेंस शीट दी गई है। बॉक्स 1 में दी गई बैलेंस शीट को समझते हैं।

बॉक्स 1

एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड

31 मार्च, 2005 तक बैलेंस शीट				**31 मार्च 2005 तक**	**31 मार्च 2014 तक**
पूंजी के स्रोत	शेड्यूल	पृष्ठ	करोड़ रूपये में	करोड़ रूपये में	करोड़ रूपये में
1	शेयरधारकों की पूंजी				
(1) पूंजी	1	19	103.87		104.44
(2) रिजर्व एवं सरप्लस	2	20	479.21		387.70
				583.08	483.14



2	ऋण पूंजी					
	(1) सुरक्षित	3	21	353.34		387.76
	(2) असुरक्षित	4	21	129.89		101.07
					483.23	488.83
3	लगाई गई कुल पूंजी				**1066.31**	**971.97**
पूंजी के प्रयोग						
4	फिक्स्ड एसेट्स (FIXED ASSETS)					
	(1) ग्रॉस ब्लॉक	5	22	946.84		870.44
	(2) लेस : अवमूल्यन			482.19		430.70
	(3) नेट ब्लॉक			464.65		439.74
	(4) कैपिटल वर्क जारी			62.10		44.44
					526.75	484.18
5	निवेश	6	23		108.58	303.48
6	मौजूदा परिसंपत्तियां, ऋण और एडवांस					
	(1) इंवेंटरीज एवं प्रावधान	7	24	446.34		350.25
	(2) संड्री डेब्टॉर्स	8	24	458.47		300.32
	(3) नगद एवं बैंक बैलेंस	9	25	66.03		5.67
	(4) ऋण और एडवांस	10	25	194.36		110.83
				1165.20		767.07
7	लेस : मौजूदा लाएबिलिटीज एवं प्रावधान					
	(1) मौजूदा लाएबिलिटीज	11	26	595.22		500.19
	(2) प्रावधान	12	26	139.00		82.57
				734.22		582.76
8	शुद्ध मौजूदा परिसंपत्ति [(6) लेस (7)1				430.98	184.31
9	कुल परिसंपत्ति (शुद्ध)				**1066.31**	**971.97**
10	बैलेंस शीट और आकस्मिक लाएबिलिटीज पर नोट	13	27			
	हमारी संलग्न रिपोर्ट के अनुसार				बोर्ड की ओर से	
	ए.एसडीएफएंड कंपनी के लिए	एक्सएक्स एक्सएक्स		एएएए	एएसडीएफजी	
	चार्टर्ड अकाउंटेंट्स	चेयरमैन	बीबीबीबी		एलकेजेएच	
	क्यू.डब्लू.टीवाइयूआर		सीसीसीसी		टीवाइयूबी	
	पार्टनर		आरईएफजीएच		पीओआइयूवाइ	निदेशक
	एचआइजेकेएल के लिए	वाईवाईवाईवाई	एनएसडीएफ			
	चार्टर्ड अकाउंटेंट्स	वाइस चेयरमैन और प्रबंध निदेशक	क्यूडब्लूईआर			
	डब्लूईआरटी		एमएनबीवी			
	पार्टनर	जेडजेडजेडजेड				
	बॉम्बे 10 जुलाई, 2004	सचिव			बॉम्बे 28 जून, 2004	

कंपनी की बैलेंस शीट एक रिकॉर्ड है जिसमें परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए पूंजी और उनके प्रयोग को दर्शाया जाता है। हालांकि, पूंजी के आने–जाने के कारण कंपनी की पूंजी संरचना और परिसंपत्ति स्थिति प्रतिदिन बदलती रहती है, इसलिए बैलेंस शीट एक निश्चित तारीख 31 मार्च को बनाई जाती है।

पूंजी के यह स्रोत क्या प्रस्तुत करते हैं?

बॉक्स–1 में नमूने के तौर पर जैसा बैलेंस शीट में दिखाया गया है, पूंजी के दो स्रोत हैं :
1) शेयरधारकों की पूंजी (जिसे नेट वर्थ से भी जाना जाता है) वह पूंजी है जोकि कंपनी के मालिकों से प्राप्त होती है; और 2) ऋण पूंजी वह पूंजी है जिसे बाहरी लोगों से उधार लिया जाता है।

जब कोई कंपनी/फर्म परिचालन आरंभ करती है, इसके मालिक जिन्हें शेयरधारक कहा जाता है, शेयर पूंजी नामक पूंजी का योगदान करते हैं। ध्यान दें कि बॉक्स 1 में एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड की 2005 में पूंजी 103.87 करोड़ रूपये थी। मालिक होने के नाते, शेयरधारक कंपनी के लाभ का कुछ हिस्सा लाभांश के तौर पर साझा करते हैं। शेयर पूंजी को फिर इक्विटी पूंजी और तरजीही (प्रिफरेंशियल) पूंजी में विभक्त किया जाता है। इक्विटी पूंजी में लाभांश की तय दर नहीं होती। तरजीही पूंजी तरजीही शेयरधारकों के योगदान का प्रतिनिधित्व करती है और इसमें लाभांश की तय दर होती है।

लाभांश वितरित करने के बाद, मुनाफे का एक हिस्सा कंपनी द्वारा भविष्य में अपनी पूंजी जरूरतों को पूरा करने के लिए रख लिया जाता है। कई वर्षों से संचित किये जाने वाले लाभ को रिजर्व और सरप्लस कहा जाता है जोकि शेयरधारकों की संपत्ति हैं। एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड के मामले में गौर करें तो रिजर्व और सरप्लस 2004 के 387.70 करोड़ रूपये की तुलना में 2005 में बढ़कर 471.21 करोड़ रूपये पहुंच गया।

इक्विटी शेयरधारकों और तरजीही शेयरधारकों के बीच क्या अंतर है?

इक्विटी शेयरधारक कंपनी के मालिक माने जाते हैं, जिनके पास घोषणा के अनुसार लाभांश प्राप्त करने का अधिकार होता है और वे कोई भी प्रस्ताव पारित कराने के लिए वार्षिक आम सभा में वोट करने के भी हकदार होते हैं।

एक्ट में तरजीही शेयर को कंपनी की शेयर पूंजी के हिस्से के तौर पर परिभाषित किया गया है जो कि तरजीही अधिकार का आनंद उठाते हैं : 1) कंपनी के जीवनकाल के दौरान तय दर पर लाभांश का भुगतान; और 2) कंपनी को बंद करने पर पूंजी का लाभ।
लेकिन तरजीही शेयर इक्विटी शेयरों की तरह कारोबार नहीं कर सकते और इन्हें पूर्व–निर्धारित अवधि के बाद छुड़ाया जा सकता है। साथ ही तरजीही शेयरधारकों के पास वोट करने का अधिकार नहीं होता।

अधिकृत, इश्यूड, सब्सक्राइब्ड, कॉल्ड अप और चुकता पूंजी जैसे शब्दों का क्या अर्थ है?

- अधिकृत पूंजी सर्वाधिक पूंजी है जिसे कंपनी जुटाने के लिए अधिकृत है।
- इश्यूड कैपिटल अधिकृत पूंजी का वह हिस्सा है जिसे कंपनी द्वारा पब्लिक अथवा किसी भी सदस्यों द्वारा सब्सक्राइब करने के लिए पेश किया जाता है
- सब्सक्राइब्ड पूंजी इश्यूड कैपिटल का हिस्सा है जिसे पब्लिक द्वारा सब्सक्राइब किया जाता है।
- कॉल्ड अप कैपिटल (मांगी गई पूंजी) सब्सक्राइब्ड कैपिटल का हिस्सा है जिसे भुगतान के लिए कंपनी द्वारा मांगा जाता है। उदाहरण के लिए, 100 रूपये के 10,000 शेयर पब्लिक द्वारा सब्सक्राइब किये गये है तो उनमें से 50 रूपये प्रति शेयर बुलाये गये (कॉल्ड अप) हैं। तब कंपनी की सब्सक्राइब्ड कैपिटल 1,00,000 रूपये पर काम करेगी जिसमें से कंपनी की कॉल्ड अप कैपिटल 50,0000 रूपये है।

- चुकता पूंजी कॉल्ड अप कैपिटल का वह हिस्सा है जिसे वास्तव में शेयरधारकों द्वारा चुकाया गया है। कुछ शेयरधारक कॉल्ड अप मनी चुकाने में डिफॉल्टर होते हैं। इस तरह की डिफॉल्टेड राशि को एरियर्स कहा जाता है। चुकता पूंजी पाने के लिए कॉल्ड अप कैपिटल से एरियर्स घटा दिये जाते हैं।

ऋण पूंजी के तहत सुरक्षित और असुरक्षित ऋण के बीच क्या अंतर है?

सुरक्षित ऋण सिक्युरिटी पर ली गई उधारी है यानी कंपनी की कुछ अचल संपत्ति को गिरवी रखकर अथवा कुछ चलायमान संपत्ति को गिरवी रखकर ली जाने वाली उधारी। इसे चार्ज के निर्माण से जाना जाता है, जोकि कंपनी की ओर से कोई डिफॉल्ट होने की स्थिति में ऋणदाताओं को सुरक्षित रखता है। यह डिबेंचर्स, वित्तीय संस्थानों से ऋण और कॉमर्शियल बैंकों से ऋण के रूप में होते हैं। ध्यान दें कि एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड के मामले में, 31 मार्च 2005 तक यह 353.34 करोड़ रूपये था। दूसरी ओर, असुरक्षित ऋण दूसरी अल्पकालिक उधारी है जिसमें कोई विशिष्ट सिक्युरिटी नहीं देनी पड़ती। यह सावधि जमा, ऋण और एडवांस हो सकते हैं, अंतर–कॉर्पोरेट उधारी और बैंकों से असुरक्षित ऋण हो सकता है। एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड के मामले में, यह उधारी 129.89 करोड़ रूपये थी।

पूंजी के प्रयोग का क्या अर्थ है?

कंपनी द्वारा मालिकों और बाहरी लोगों से एकत्र की गई पूंजी का इस्तेमाल निम्न परिसंपत्तियों का निर्माण करने में किया जाता है :

फिक्स्ड एसेट्स : यह परिसंपत्तियां दीर्घकाल के लिए खरीदी जाती हैं और इनका उपयोग कारोबारी परिचालन के लिए किया जाता है। हालांकि, इनकी पुनः बिक्री नहीं की जाती। जमीन और इमारतें, संयंत्र, मशीनरी, पेटेंट्, और कॉपीराइट्स फिक्स्ड एसेट्स हैं। एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड के मामले में, फिक्स्ड एसेट्स का मूल्य 526.75 करोड़ रूपये है।

निवेश : दीर्घकालिक अथवा अल्पकालिक अवधि के लिए आय पैदा करने हेतु गैर–व्यावसाय से संबंधित मार्गों में सरप्लस पूंजी का निवेश कर निर्माण की जाने वाली वित्तीय प्रतिभूतियां निवेश कहलाती हैं। इस तरह आय और निवेश से प्राप्त लाभ कारोबारी परिचालन से प्राप्त नहीं होते।

मौजूदा परिसंपत्तियां, ऋण और एंडवांसेस : इसमें नगद और अन्य संसाधन शामिल होते हैं जिन्हें कारोबारी परिचालन के दौरान नगद में परिवर्तित किया जा सकता है। मौजूदा परिसंपत्तियां कम समय के लिए रोजमर्रा के परिचालनीय खर्चों की पूर्ति के लिए होती हैं। मौजूदा परिसंपत्तियां कच्चे माल, फिनिश्ड गुड्स, नगद, डेब्टॉर्स, इंवेंटरीज, ऋण और एडवांस एवं पूर्व–चुकता खर्चों के रूप में होती हैं। एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड के लिए मौजूदा परिसंपत्तियां 1165.20 करोड़ मूल्य की हैं।

विविध खर्चे एवं नुकसान : विविध खर्च निश्चित आउटलेज को प्रस्तुत करते हैं जैसे कि प्राथमिक खर्च और परिचालन के पश्चात खर्च जिन्हें लिखा नहीं जाता। नुकसान मालिक की इक्विटी में कमी को दर्शाते हैं, लेकिन नुकसान के साथ शेयर पूंजी नहीं घट सकती। इसके बजाय, शेयर पूंजी और नुकसानों को क्रमशः बैलेंस शीट के लाएबिलिटी और एसेट के पक्ष में अलग से दिखाया जाता है।

फिक्स्ड परिसंपत्तियों के तहत 'ग्रॉस ब्लॉक', 'अवमूल्यन', 'नेट–ब्लॉक' और कैपिटल–वर्क इन प्रोग्रेस' जैसे उप–शीर्षकों का क्या अर्थ है?

सभी फिक्स्ड परिसंपत्तियों (अलग–अलग समय पर भी) को खरीदने का कुल मूल्य 'ग्रॉस ब्लॉक' अथवा 'ग्रॉस फिक्स्ड एसेट' कहा जाता है।

अकाउंटिंग कन्वेंशन के अनुसार, भूमि को छोड़कर सभी फिक्स्ड परिसंपत्तियों का जीवन निश्चित होता है। ऐसा माना गया है कि इस्तेमाल के कारण परिसंपत्ति का मूल्य प्रति वर्ष घटता जाता है। मूल्य में यह गिरावट 'अवमूल्यन' कहलाती है। कंपनीज एक्ट 1956 में विभिन्न प्रकार की परिसंपत्तियों के लिए अवमूल्यन की विभिन्न दरें और अवमूल्यन की गणना के लिए अलग–अलग विधियां हैं जैसे स्ट्रेट लाइन विधि (निरंतर वार्षिक विधि) और रिटेन डाउन वैल्यू विधि (समय के साथ अवमूल्यन दर घटती जाती है)।
अवमूल्यन उपलब्ध कराने के बाद फिक्स्ड एसेट्स का मूल्य 'नेट ब्लॉक' कहलाता है। 31 मार्च, 2005 तक एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड के मामले में, नेट ब्लॉक 464.65 करोड़ रूपये है।

ग्रॉस ब्लॉक–अवमूल्यन = नेट ब्लॉक
946.84–482.19 =464.65 रूपये

निर्माण के तहत नये संयंत्र के लिए इस्तेमाल की गई पूंजी, मशीन लगाना आदि अभी भी बाकी है, यह सभी 'कैपिटल वर्क इन प्रोग्रेस' के उदाहरण हैं जिन पर फिक्स्ड एसेट्स की गणना करते समय ध्यान देना जरूरी है क्योंकि इसे जल्द ही ग्रॉस ब्लॉक में परिवर्तित किया जायेगा।

बैलेंस शीट में मौजूदा लाएबिलिटीज और प्रावधान और शुद्ध वर्तमान परिसंपत्तियां क्या हैं?

कंपनी को अपनी नियमित सेवाओं के लिए काफी सामान प्राप्त होते हैं जिनका भुगतान फौरन नहीं किया जाता है। जैसे कि कच्चा माल, सामान और सेवायें ऋण पर खरीदी जाती हैं। कंपनी ग्राहक से एडवांस भी स्वीकार कर सकती है। कंपनी पर इसका भुगतान करने की लाएबिलिटी (जिम्मेदारी) है, भले ही भुगतान को टाल दिया गया है। इन्हें 'करेंट लाएबिलिटीज' के नाम से जानते हैं। इसी तरह कंपनी को अन्य निश्चित खर्चों के लिए भी पूंजी मुहैया करानी होती है (इनका भुगतान फौरन किया जाना जरूरी नहीं है) जैसे कि शेयरधारकों को लाभांश, कर का भुगतान आदि। इन्हें 'प्रावधान' कहते हैं। संक्षेप में, करेंट लाएबिलिटीज और प्रावधान वह राशियां हैं जो ऋण पर खरीदे गये सामानों और सेवाओं की आपूर्ति, प्राप्त एडवांस भुगतान, उपार्जित खर्चों, बिना दावे के लाभांश, करों, लाभांशों, ग्रैच्युटी, पेंशन आदि के लिए प्रावधानों के कारण बकाया होते हैं।

इस तरह मौजूदा लाएबिलिटीज और प्रावधान कुछ भुगतान को टाल कर मौजूदा परिसंपत्तियों पर रोजमर्रा के खर्चों को कम करते हैं। कंपनी के नियमित परिचालन के लिए जिस पूंजी की आवश्यकता होती है वह मौजूदा परिसंपत्तियों से मौजूदा लाएबिलिटीज को घटाने के बराबर होता है। यह राशि ''नेट करेंट एसेट्स' अथवा 'नेट वर्किंग कैपिटल' कहलाती है। एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड के मामले में, नेट करेंट एसेट का आंकड़ा 430.98 करोड़ रूपये हैं जोकि करेंट लाएबिलिटीज (595.22 करोड़ रूपये) और प्रावधानों (139 करोड़ रूपये) को मौजूदा परिसंपत्तियों (1165.20 करोड़ रूपये) से घटाने के बाद सामने आया है।

बैलेंस शीट को किस प्रकार संक्षिप्त किया जाता है?

बैलेंस शीट पूंजी के स्रोतों का पूंजी के प्रयोग से मेल करने का संकेत देती है। एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड के मामले में, कुल निवेशित पूंजी 1066.31 करोड़ रूपये है और इसे पूंजी के दो स्रोतों– शेयरधारक पूंजी और ऋण पूंजी से लिया गया। इन पूंजी का इस्तेमाल 1066.31 करोड़ रूपये की कुल (शुद्ध) परिसंपत्ति को वित्त पोशित करने में किया गया। इसमें फिक्स्ड एसेट्स (526.75 करोड़ रूपये), निवेश (108.58 करोड़ रूपये), और शुद्ध मौजूदा परिसंपत्तियां (430.98 करोड़ रूपये) शामिल हैं।
इस तरह बैलेंस शीट में,

कुल निवेशित पूंजी = कुल परिसंपत्ति

प्रॉफिट और लॉस अकाउंट विवरण में क्या होता है?

प्रॉफिट और लॉस अकाउंट विवरण दर्शाता है कि कंपनी द्वारा वित्त वर्ष में अपने सभी खर्च के लिए पूंजी उपलब्ध कराने के बाद अपनी आय से कितना मुनाफा अथवा नुकसान हासिल किया गया है। व्यक्ति को यह भी पता होना चाहिये कि कर पश्चात लाभ का इस्तेमाल करने के बाद विनियोग (अप्रोप्रिएशन) के लिए उपलब्ध मुनाफा कितना है। साथ ही साथ रिजर्व का हिस्सा कितना है। यह बैलेंस शीट में लाभांश, सामान्य रिजर्व और बैलेंस की दिशा में लाभ विनियोग को भी प्रदर्शित करता है।

बॉक्स 2 में एक्सवाइजेड कंपनी लिमिटेड के प्रॉफिट और लॉस अकाउंट को प्रदर्शित किया गया है। आइटम–1 आय, 2 से 6 तक के आइटम्स विभिन्न खर्च आइटम्स का प्रतिनिधित्व करते हैं। 7 से 12 तक की चीजें विनियोग के लिए उपलब्ध लाभ को दर्शाते हैं और 13 (1), (2), और (3) लाभ विनियोग प्रदर्शित करते हैं।

बॉक्स–2

31 मार्च, 2005 को समाप्त हुये वर्ष के लिए प्रॉफिट एवं लॉस अकाउंट

विवरण	रूपये (करोड़ में)	रूपये (करोड़ में)	रूपये (करोड़ में)
		31 मार्च 2005 तक	31 मार्च 2004 तक
आय			
1. उत्पादों की बिक्री और अन्य आय		2595.99	1969.10
खर्च			
2. उत्पादन और अन्य खर्चे	2275.37		1742.54
3. अवमूल्यन	54.26		48.91
4. ब्याज	81.63		73.63
5. खर्च पूंजी खाते में सीनांतरित	49.82		(44.27)
6. कुल खर्च		2316.44	1820.81
कर पूर्व लाभ		234.55	148.29
7. वर्श के लिए कर		92.5	45.75
कर पश्चात लाभ		142.05	102.54
8. निवेश अलाउंस रिजर्व अकाउंट		4.66	3.55
9. निवेश अलाउंस (प्रयुक्त) रिजर्व रिटेन बैक		(15.2)	(11.2)
10. डिबेंचर रिडेम्प्शन रिजर्व		(0.57)	(0.57)
11. कैपिटल रिडेम्प्शन रिजर्व			
12 पिछले वर्श से लाया गया बैलेंस		86.71	33.65
विनियोग के लिए उपलब्ध राशि		217.65	127.97
13. विनियोग			
(a) प्रस्तावित लाभांश *		41.54	31.26
(b) सामान्य रिजर्व		100	10
(c) बैलेंस शीट पर क्रेडिट किया गया बैलेंस		76.11	86.71
		217.65	127.97

14. प्रॉफिट एवं लॉस अकाउंट के लिए नोट				
* निदेशक की रिपोर्ट के अनुसार विस्तृत जानकारी				
हमारी रिपोर्ट संलग्न है				
बैलेंस शीट के लिए		बोर्ड के लिए और की ओर से		
एक्सवाइजेड एंड कंपनी के लिए	पीक्यूआर	एएए		
चार्टर्ड अकाउंटेंट्स,	चेयरमैन	बीबीबी		
एबीसी		सीसीसी		
पार्टनर		डीडीडी		निदेशक
एलएमएन एंड कंपनी के लिए	जीएचआइ			
चार्टर्ड अकाउंटेंट्स,	वाइस चेयरमैन और			
डीईएफ	प्रबंध निदेशक			
पार्टनर	एसटीयू			
मुंबई, 10 जुलाई 2004	सचिव	मुंबई 28 जून 2004		

व्यक्ति को प्रॉफिट एवं लॉस अकाउंट में क्या देखना चाहिये?

एक कंपनी के लिए प्रॉफिट एवं लॉस विवरण (लाभ एवं नुकसान विवरण) सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज है जिसे शेयरधारकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए, प्रत्येक कंपनी अपने प्रस्तुतिकरण पर सबसे अधिक जोर देती है। व्यक्ति को निम्न पर विचार करना चाहिये :

- क्या पिछले वर्ष की समान अवधि (अर्द्धवार्षिक या वार्षिक) की तुलना में बिक्री और मुनाफे में क्या कुल मिलाकर सुधार हुआ है (परिचालन, सकल और शुद्ध)। यदि ऐसा है, तो कंपनी का परिचालनीय प्रबंधन बेहतर है।
- अन्य आय की भी सावधानीपूर्वक जांच करनी चाहिये। यहां कंपनियों के लिए दूसरों को दिग्भ्रमित करने की गुंजाइश होती है। यदि अन्य आय निवेश पर लाभांश से अथवा ऋण एवं एडवांस से ब्याज से निकलती है, तो यह अच्छा है क्योंकि ऐसी आय स्थिर होती हैं। लेकिन यदि अन्य आय परिसंपत्ति या जमीन की बिक्री से आती है तो ऐसी आय वार्षिक उत्पत्ति नहीं है।
- समस्त खर्च सामानों की बढ़ोतरी की भी जांच करें। जैसे कच्चे माल की खपत, जनबल लागत और विनिर्माण, प्रशासनात्मक और बिक्री खर्च। यह भी देखें कि क्या इन लागतों में बढ़ोतरी बिक्री में वृद्धि से अधिक है। यदि ऐसा है तो लाभ कमाने के लिए परिचालन परिस्थितियां सहयोगी नहीं हैं। इसी तरह यह भी जांचें कि बिक्री के लिए इन खर्चों के अनुपात को पिछले वर्ष की तुलना में शामिल किया गया है। यदि ऐसा है तो कंपनी के परिचालन पर्याप्त हैं।
- यह भी मूल्यांकन करें कि क्या कंपनी अकेले अपने परिचालन से लाभ कमा सकती है। इसके लिए आपको बिक्री को छोड़कर सभी अन्य आय को नजरअंदाज करने के बाद कंपनी के लाभ की गणना करनी होगी। यदि लाभ सकारात्मक आता है, तो कंपनी परिचालनीय ढंग से मुनाफे वाली है, जोकि एक स्वस्थ संकेत है।
- किसी भी असामान्य वृद्धि के लिए अवमूल्यन और ब्याज की छंटनी करें। अवमूल्यन में बढ़ोतरी फिक्स्ड परिसंपत्तियों के अधिक समावेश के कारण होती है और यह कंपनी के दीर्घकालिक परिचालन के लिए बेहतर संकेत है। उच्च अवमूल्यन संभवतः शुद्ध लाभ को कम कर सकता है लेकिन यह नगद प्रवाह के लिए बेहतर है। इसलिए शुद्ध लाभ पर ध्यान देने के बजाय, नगद प्रवाह की जांच करें और यह तुलना करें कि क्या इसमें वृद्धि हुई है। उच्च ब्याज दर हमेशा चिंता का कारण है क्योंकि कर्ज के बढ़ते बोझ को कम समय में घटाया नहीं जा सकता।
- अर्निंग्स प्रति शेयर और विभिन्न अनुपातों की गणना करें। अर्द्धवार्षिक परिणामों की स्थिति में, अर्द्धवार्षिक अर्निंग्स प्रति शेयर को 2 से गुणा करें, इससे लगभग वार्षिक अर्निंग्स प्रति शेयर प्राप्त होगी।



अध्याय - 10

रेशो एनालिसिस

अलग–अलग वित्तीय विवरणों में पेश सांख्यिकीय/आंकड़े कंपनी की आर्थिक स्थिति की सही तस्वीर का खुलासा नहीं करते। उचित तरीके से विश्लेषित और विवेचित वित्तीय विवरण ही कंपनी के प्रदर्शन के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान कर सकते हैं। वित्तीय विवरणों से जानकारी निकालने के लिए, इन विवरणों का विश्लेषण करने के लिए कई प्रकार के टूल्स का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें सबसे लोकप्रिय टूल है **रेशो एनालिसिस।**

वित्तीय अनुपातों को मुख्य रूप से तीन समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

1) लिक्विडिटी रेशोज (तरलता अनुपात), 2) लेवरेज/कैपिटल स्ट्रक्चर रेशोज (लाभ/पूंजी संरचना अनुपात) और 3) प्रॉफिटेबिलिटी रेशोज (लाभदेयता अनुपात)

1) लिक्विडिटी रेशोज (तरलता अनुपात)

तरलता यानी लिक्विडिटी कंपनी द्वारा अल्पकाल में एक वर्ष से भी कम समय में अपने वित्तीय उत्तरदायित्वों को पूरा करने के सामर्थ्य को प्रस्तुत करती है। वह रेशोज जो कंपनी की तरलता का संकेत देते हैं, वे हैं 1) करेंट रेशो 2) एसिड टेस्ट रेशो, 3) टर्नओवर रेशोज। यह मौजूदा परिसंपत्तियों और मौजूदा लाएबिलिटीज के बीच संबंधों पर आधारित होते हैं।

(i) **करेंट रेशो = मौजूदा परिसंपत्तिया/मौजूदा लाएबिलिटीज**

करेंट रेशो कंपनी के उस सामर्थ्य की जांच करते हैं कि क्या वह मौजूदा परिसंपत्तियों से अपनी मौजूदा लाएबिलिटीज को पूरा करने में सक्षम है। करेंअ रेशो जितना अधिक होगा, शॉर्ट–टर्म सॉल्वेंसी उतनी ही बेहतर होगी (यानी प्रति रूपये लाएबिलिटी के लिए रूपये की बड़ी राशि उपलब्ध है)

(ii) **एसिड टेस्ट रेशो = क्विक एसेट्स/मौजूदा लाएबिलिटीज**

क्विक एसेट को मौजूदा परिसंपत्तियों के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें इंवेंटरीज और प्रिपेड खर्चों को छोड़ दिया जाता है। एसिड टेस्ट रेशो कंपनी के उस सामर्थ्य का मापन है जिसमें कंपनी अपनी मौजूदा लाएबिलिटीज को पूरा करने के लिए अपनी मौजूदा परिसंपत्तियों को तेजी से नगद में परिवर्तित करती है। अमूमन 1:1 अनुपात संतोशजनक माना जाता है।

(iii) **टर्नओवर रेशोज** : टर्नओवर रेशोज यह मापते हैं कि कितनी तेजी से मौजूदा परिसंपत्तियों को नगद में परिवर्तित किया जाता है अथवा कितनी दक्षतापूर्वक परिसंपत्तियों को कंपनी द्वारा लगाया जाता है। महत्वपूर्ण टर्नओवर रेशोज हैं :

इंवेंटरी टर्नओवर रेशो, डेब्टॉर्स टर्नओवर रेशो, एवरेज कलेक्शन पीरियड, फिक्स्ड एसेट्स टर्नओवर और टोटल एसेट्स टर्नओवर

इंवेटरी टर्नओवर रेशो = बेचे गये सामानों की लागत/औसत इंवेंटरी

जहां बेचे गये सामनों की लागत का तात्पर्य बिक्री से सकल लाभ को घटाना है। 'एवरेज इंवेंटरी' इंवेंटरी की ओपेनिंग और क्लोजिंग का साधारण औसत है। इंवेंटरी टर्नओवर रेशो इंवेंटरी प्रबंधन की दक्षता बयां करता है। रेशो जितना अधिक होगा, इंवेंटरी प्रबंधन उतना ही कुशल होगा।

डेब्टॉर्स टर्नओवर रेशो = शुद्ध ऋण बिक्री/एवरेज अकाउंट्स रिसीवेबल (डेब्टॉर्स)

यह अनुपात प्रदर्शित करता है कि कितनी बार वर्ष के दौरान अकाउंट्स रिसीवेबल (डेब्टॉर्स) टर्नओवर हुआ। यदि शुद्ध ऋण बिक्री के लिए आंकड़ा उपलब्ध नहीं है, तो शुद्ध बिक्री का आंकड़ा इस्तेमाल किया जाता है। डेब्टॉर्स टर्नओवर जितना ज्यादा होगा, ऋण प्रबंधन की दक्षता उतनी ही बेहतर होगी।

एवरेज कलेक्शन पीरियड = एवरेज डेब्टॉर्स / एवरेज डेली क्रेडिट सेल्स

एवरेज कलेक्शन पीरियड ऋण बिक्री के दिनों की संख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसे डेब्टॉर्स (अकाउंट रिसीवेबल) में लॉक किया गया है। कृपया ध्यान दें कि एवरेज कलेक्शन पीरियड और अकाउंट्स रिसीवेबल (डेब्टॉर्स) टर्नओवर निम्न प्रकार से संबंधित होते हैं :

एवरेज कलेक्शन पीरियड = 365 दिन / डेब्टॉर्स टर्नओवर

फिक्स्ड एसेट्स टर्नओवर रेशो फिक्स्ड एसेट्स में निवेश के प्रति रूपये की बिक्री का मापन करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो कितनी दक्षता से फिक्स्ड एसेट्स को लगाया जाता है। उच्चतम अनुपात को प्राथमिकता दी जाती है। इसकी गणना निम्न तरीके से की जाती है :

फिक्स्ड एसेट्स टर्नओवर रेशो = कुल बिक्री / शुद्ध फिक्स्ड एसेट्स

टोटल एसेट्स टर्नओवर रेशो यह मापन करता है कि सभी प्रकार की परिसंपत्तियों को कितनी दक्षता से लगाया गया है।

टोटल एसेट्स टर्नओवर रेशो = कुल बिक्री / औसत कुल परिसंपत्ति

2) लेवरेज / कैपिटल स्ट्रक्चर रेशोज :

कंपनी की दीर्घकालिक मजबूती का मापन उसके सामर्थ्य को जांचकर किया जाता है कि वह नियमित ब्याज चुकाने अथवा बकाया तिथियों पर या मियाद पूरी होने के समय मूल राशि का पुनर्भुगतान करने में कितनी सक्षम है। कंपनी की इस दीर्घकालिक सॉल्वेंसी की जांच लेवरेज अथवा कैपिटल स्ट्रक्चर रेशोज का इस्तेमाल करके की जा सकती है। व्यापक रूप से इन रेशोज के दो सेट हैं – पहला रेशो उधार ली गई पूंजी और मालिक की पूंजी के बीच संबंधों पर आधारित होता है जिसे बैलेंस शीट से परिकलित किया जाता है। इस तरह के कुछ रेशोज हैं : डेट टु इक्विटी और डेट टु एसेट रेशोज। रेशोज के दूसरे सेट जिनकी गणना लाभ एवं नुकसान अकाउंट से की जाती है, वे हैं : इंटरेस्ट कवरेज रेशो और डेब्ट सर्विस कवरेज रेशो कवरेज रेशो है जो जोखिम का लाभ उठाते हैं।

(i) डेब्ट–इक्विटी रेशो व्यवसाय के वित्त–पोषण के लिए ऋणदाताओं और मालिकों के संबंधित योगदान को परिलक्षित करते हैं।

डेब्ट इक्विटी रेशो = कुल कर्ज / कुल इक्विटी

दोनों घटकों का वांछनीय / आदर्श अनुपात (उच्च या निम्न अनुपात) हर उद्योग के लिए अलग–अलग होता है।

(ii) **डेब्ट–एसेट रेशो** : कुल कर्ज में दीर्घकालिक कर्ज और मौजूदा लाएबिलिटीज शामिल होती हैं। कुल परिसंपत्तियों में स्थायी पूंजी और मौजूदा लाएबिलिटीज शामिल होती हैं।

डेब्ट एसेट रेशो = $\frac{\text{Total Debt}}{\text{Total Assets}}$ **कुल कर्ज/कुल एसेट**

दूसरा सेट अथवा कवरेज रेशो कंपनी के परिचालन से मिली पूंजी और बाहरी लोगों के दावों के बीच संबंध का मापन करते हैं।

(iii) **इंटरेस्ट कवरेज रेशो = ब्याज एवं कर सेपूर्व कमाई / ब्याज**

कवरेज रेशो जितना अधिक होगा, कंपनी का ब्याज का बोझ कम करने का सामर्थ्य उतना ही बेहतर होता है। ऋणदाताओं द्वारा इस रेशो का उपयोग कंपनी की कर्ज चुकाने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है।



(iv) डेब्ट सर्विस कवरेज रेशो (डीएससीआर) ज्यादा व्यापक है और इसे कंपनी की कर्ज चुकाने की क्षमता परिकलित करने के लिए अपनाया जाता है। वित्तीय संस्थान उस अवधि के लिए औसत डीएससीआर की गणना करते हैं जिस दौरान प्रोजेक्ट के लिए टर्म लोन प्रतिदेय है। डेब्ट सर्विस कवरेज रेशो को निम्न तरह से परिभाषित किया गया है :

कर पश्चात लाभ + अवमूल्यन + अन्य गैरनगदी खर्च + टर्म लोन पर ब्याज / टर्म लोन पर ब्याज + टर्म लोन का पुनर्भुगतान

3) लाभदेयता अनुपात : किसी कंपनी की लाभदेयता और परिचालन / प्रबंधन दक्षता का फैसला मुख्य रूप से निम्नलिखित लाभदेयता अनुपात से किया जाता है :

(i) सकल लाभ अनुपात (प्रतिशत) = सकल लाभ / कुल बिक्री गुणा 100

(ii) शुद्ध लाभ अनुपात (प्रतिशत) = कुल लाभ / कुल बिक्री गुणा 100

निवेश से जुड़े कुछ लाभदेयता अनुपात इस प्रकार हैं :

(iii) रिटर्न ऑन टोटल एसेट्स = ब्याज और कर से पूर्व लाभ / फिक्स्ड एसेट्स+मौजूदा परिसंपत्तियां

(iv) निवेशित पूंजी पर लाभ = कर पश्चात कुल लाभ / कुल निवेशित पूंजी
(यहां, कुल निवेशित पूंजी = कुल फिक्स्ड एसेट्स+मौजूदा परिसंपत्तियां–मौजूदा लाएबिलिटीज)

(v) शेयरधारकों की पूंजी पर लाभ = कर पश्चात कुल लाभ / औसत कुल शेयरधारक पूंजी अथवा नेटवर्थ
(नेटवर्थ में शेयरधारकों की इक्विटी पूंजी और रिजर्व एवं सरप्लस शामिल हैं)

एक आम इक्विटी शेयरधारक के पास कंपनी के लाभ और परिसंपत्तियों पर सिर्फ बकाया दावा होता है। यानी ऋणदाताओं और तरजीही शेयरधारकों के दावों के पूरा होने के बाद, इक्विटी शेयरधारकों को तरलीकरण पर लाभ अथवा परिसंपत्तियों का वितरण प्राप्त होता है। उसकी स्वेच्छा का मापन इक्विटी पर रिटर्न द्वारा परिलक्षित होता है। शेयरधारकों की इक्विटी पर रिटर्न की गणना करने के लिए कई अन्य मापन भी मौजूद हैं जिनमें से नीचे दिये गये मापन शेयर बाजार से संबंधित रेशोज हैं :

(i) **अर्निंग प्रति शेयर (ईपीएस)** : ईपीएस इक्विटी शेयरधारकों के प्रति शेयर पर उपलब्ध लाभ का मापन करता है। यह वह राशि है जो उन्हें प्रत्येक शेयर पर प्राप्त होती है। इसकी गणना शेयरधारकों को उपलब्ध लाभ को बकाया शेयरों की संख्या से विभाजित करके की जाती है। सामान्य शेयरधारकों के लिए उपलब्ध लाभ कर पश्चात लाभ को तरजीही लाभांश से घटाकर निकाला जाता है।

यह बाजार में इक्विटी के मूल्य को प्रस्तुत करता है।

ईपीएस = शेयरधारकों के लिए उपल्ब्ध कुल लाभ / सामान्य शेयर्स आउटस्टैंडिंग की संख्या

(ii) **प्राइस अर्निंग रशोज = पी / ई रेशो = प्रति शेयर बाजार भाव / ईपीएस**

निरूपण : 31 मार्च, 2005 तक एबीसी कंपनी लिमिटड की बैलेंस शीट

(रूपये करोड़ में)

लाएबिलिटीज	राशि	परिसंपत्तियां		राशि
शेयर पूंजी	16.00	फिक्स्ड एसेट्स (शुद्ध)		60.00
(1,00,00,000 इक्विटी शेयर				
10 रूपये के)				
रिजर्व एवं सरप्लस	22.00	मौजूदा परिसंपत्तियां :		23.40
सुरक्षित ऋण	21.00	नगद एवं बैंक	0.20	
असुरक्षित ऋण	25.00	डेब्टॉर्स	11.80	
मौजूदा लाएबिलिटीज एवं	16.00	इंवेंटरीज	10.60	
		प्रि–पेड खर्चे	0.80	
		निवेश		16.60
कुल	**100**	**कुल**		**100**

31 मार्च, 2005 को समाप्त वर्ष के लिए एबीसी कंपनी लिमिटेड का प्रॉफिट एवं लॉस अकाउंट :

विवरण स्टॉक	राशि	विवरण	राशि
ओपेनिंग	13.00	बिक्री (कुल)	105.00
खरीदारी	69.00	क्लोजिंग स्टॉक	15.00
भत्ते एवं वेतन	12.00		
अन्य विनिर्माण खर्चे	10.00		
सकल लाभ	16.00		
कुल	**120.00**	**कुल**	**120.00**
प्रशासनात्मक एवं कर्मचारी खर्चे	1.50	सकल लाभ	16.00
बिक्री एवं वितरण खर्चे	2.00		
अवमूल्यन	2.50		
ब्याज	1.00		
कुल लाभ	9.00		
कुल	**16.00**	**कुल**	**16.00**
आय कर	4.00	कुल लाभ	9.00
इक्विटी लाभांश	3.00		
रिटेन्ड अर्निंग	2.00		
कुल	**9.00**	**कुल**	**9.00**

प्रति इक्विटी शेयर बाजार भाव = 20.00 रूपये

करेंट रेशो = करेंट एसेट्स / करेंट लाएबिलिटीज

23.40 / 16.00 = 1.46

क्विक रेशो = क्विक एसेट्स / करेंट लाएबिलिटीज

= करेंट एसेट्स–(इंवेंटरी+प्रिपेड खर्च) / करेंट लाएबिलिटीज

= [23.40-(10.60+0.8)]/16.00 = 12.00/16.00 = 0.75



इंवेंटरी टर्नओवर रेशो = बेचे गये सामान की लागत/औसत इंवेंटरी
= (कुल बिक्री–सकल लाभ)/(ओपेनिंग स्टॉक+क्लोजिंग स्टॉक)/2
= (105-16)/ [(15+13)/2] = 89/14 = 6.36

डेब्टॉर्स टर्नओवर रेशो = कुल बिक्री/एवरेज अकाउंट रिसीवेबल्स(डेब्टॉर्स)
= 105/11.80 =8.8983

एवरेज कलेक्शन पीरियड = 365 दिन/डेब्टॉर्स टर्नओवर
= 365 दिन /8.8983 = 41 दिन

फिक्स्ड एसेट्स टर्नओवर रेशो = कुल बिक्री/नेट फिक्स्ड एसेट्स
= 105/60 = 1.75

डेब्ट टु इक्विटी रेशो = डेब्ट/इक्विटी
= (21.00+25.00)/(16.00+22.00) = 46/38 = 1.21

सकल लाभ रेशो = सकल लाभ/कुल बिक्री
= 16.00/105.00 = 0.15238 or 15.24%

कुल लाभ रेशो = कुल लाभ/कुल बिक्री
= 9/105.00 = 0.0857 or 8.57 %

शेयरधारक की इक्विटी पर लाभ = कर पश्चात कुल लाभ/नेट वर्थ
= 5.00/(16.00+22.00) =0.13157 or 13.16%

लघु रूप :

- एनएसई – नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड
- सेबी – भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड
- एनसीएफएम – एनएसई'ज सर्टिफिकेशन इन फाइनेंशियल मार्केट्स
- एनएसडीएल – नेशनल सिक्युरिटीज डिपॉजटरी लिमिटेड
- सीएसडीएल – सेंट्रल डिपॉजटरी सर्विसेज (इंडिया) लिमिटेड
- एनसीडीईएक्स – नेशनल कमोडिटी एंड डेरीवेटिव्स एक्सचेंज लिमिटेड
- एनएससीसीएल – नेशनल सिक्युरिटीज क्लियरिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड
- एफएमसी – वायर बाजार आयोग
- एनवाइएसई – न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज
- एएमईएक्स – अमेरिकन स्टॉक एक्सचेंज
- ओटीसी – ओवर–द–काउंटर मार्केट
- एलएम – लीड मैनेजर
- आइपीओ – आरंभिक सार्वजनिक निर्गम



- डीपी – डिपॉजटरी पार्टिसिपेंट
- डीआरएफ – डिमैट रिक्वेस्ट फॉर्म
- आरआरएफ – रिमैट रिक्वेस्ट फॉर्म
- एनएवी – नेट एसेट वैल्यू
- ईपीएस – अर्निंग्स प्रति शेयर
- डीएससीआर – डेब्ट सर्विस कवरेज रेशो
- आइआइएसएल – इंडिया इंडेक्स सर्विसेज एंड प्रोडक्ट्स लिमिटेड
- क्रिसिल – क्रेडिट रेटिंग इनफॉर्मेशन सर्विसेज ऑफ इंडिया लिमिटेड
- केयर – क्रेडिट एनालिसिस एंड रिसर्च लिमिटेड
- आइसीआरए – इन्वेस्टमेंट इनफॉर्मेशन एंड क्रेडिट रेटिंग एजेंसी ऑफ इंडिया
- आइएससी – इन्वेस्टर सर्विस सेल
- आइपीएफ – इन्वेस्टर प्रोटेक्शन फंड
- एससीआरए – सिक्युरिटीज कॉन्ट्रैक्ट (रेगुलेशन) एक्ट
- एससीपीआर – सिक्युरिटीज कॉन्ट्रैक्ट (रेगुलेशन) रूल्स


BUILDING SKILLS•BUILDING FUTURE•





केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शिक्षा केंद्र, 2, कम्युनिटी सेंटर, प्रीत विहार, दिल्ली-110301